तृतीय अध्याय

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में विकलांगों की समस्याएँ

३.० प्रास्ताविक

३.१ आर्थिक समस्याएँ

३.१.१ निर्धनता

३.१.२ रिश्वतखोरी

३.१.३ गरीबी

३.२ सामाजिक समस्याएँ

३.२.१ जातिगत समस्या

३.२.२ अनमेल विवाह

३.२.३ अवैध सम्बन्ध

३.२.४ बलात्कार

३.२.५ सामाजिक उपेक्षा

३.२.६ विवाह की समस्या

३.२.७ व्यसनाधीनता

३.३ पारिवारिक समस्याएँ

३.३.१ दाम्पत्यगत समस्या

३.३.२ सन्तानोत्पत्ती की समस्या

३.३.३ पारिवारिक उपेक्षा

३.४ शारीरिक समस्याएँ

३.५ मानसिक समस्याएँ

३.६ शैक्षिक समस्याएँ

३.७ चिकित्सा की समस्याएँ

३.८ राजनीतिक समस्याएँ

३.९ निष्कर्ष

३.० प्रास्ताविक :

प्रत्येक व्यक्ति को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है । समस्या कभी एक नहीं होती उसमें विविधता होती है । व्यक्तिगत, सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर समस्याओं का स्वरूप एक जैसा नहीं होता । समस्या एक ही प्रकार की नहीं होती या फिर उसकी वजह भी कभी एक जैसी नहीं हेाती । अनाज, कपड़ा और निवास यह तो भारतीय समाज की ही नहीं तो विश्व के सभी राष्ट्रों की मूल समस्याएँ हैं। इसके अतिरिक्त मानव जीवन में विभिन्न समस्याएँ निर्माण होती है । यह समस्याएँ तो इतनी भयावह होती हैं कि इसका परिणाम बताना तक महाकठिण होता है । मानवी व्यवहार सामाजिक, शैक्षिक, वैवाहिक, पारिवारिक, धार्मिक, राजनीतिक स्तर पर किया जाता है । इसलिए मनुष्य को कब कौनसी समस्या का सामना करना पड़ेगा यह बताना तक कठिन है । भूख की वजह से निर्माण होनेवाली और पत्नी के बाह्य सम्बन्धों से निर्माण होनेवाली दोनों भी समस्या ही है, परंतु दोनों समस्याओं की तीव्रता कम-अधिक रहती है । इस प्रकार प्रत्येक मानव को विभिन्न समस्याओं से गुजरना पड़ता है, परंतु उसकी तीव्रता कम-अधिक होती है । उसी प्रकार भ्रष्टाचार, अनैतिक लैंगिक संबंध, गुन्हेगारी आदि समस्याएँ भी मानवी जीवन में अव्यवहार का फलित है ।

समस्या कभी मानव व्यवहार के किसी एक क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं होती । कभी कोई एक समस्या कायम नहीं रह पाती उसकी जगह दूसरी समस्या लेती रहती है । कभी आर्थिक तो कभी वैवाहिक कभी धार्मिक तो कभी सामाजिक समस्याएँ मनुष्य की खुशी में मिट्टी मिलाने का काम करती है । इस प्रकार मनुष्य विभिन्न प्रकार की समस्याओं से त्रस्त रहता है । मनुष्य इन समस्याओं से घबराकर कभी अपना जीवन जीना छोड़ नहीं देता । बल्कि निडरता से उन समस्याओं का सामना करता है ।

मनुष्य सकलांग हो अथवा विकलांग उसे आनेवाली किसी भी समस्या का सामना करना पड़ता है । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में साहित्यकारों ने जिस प्रकार आम व्यक्ति की समस्याओं का सूक्ष्म चित्रण किया है उसी प्रकार कुछ साहित्यकारों ने अपने साहित्य में विकलांगों की विभिन्न समस्याओं का सूक्ष्म चित्रण किया है । कुछ साहित्यकारों ने विकलांगों की समस्याओं को व्यक्त करते समय अत्यंत संवेदनशील होकर उनकी स्थिति को उजागर किया

है। व्यक्ति कैसा भी क्यों न हो अमीर हो, गरीब हो, बालक हो, वृद्ध हो, स्त्री हो अथवा पुरूष हो हर एक को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं ।

३.१ आर्थिक समस्याएँ :

समाज का संबंध अर्थ से जुड़ा हुआ होता है । प्रत्येक व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होना चाहता है । वैसे देखा जाए तो अर्थोपार्जन का दायित्त्व परिवार के प्रमुख व्यक्ति पर रहता है । अर्थात कुछ मात्रा में आर्थिक पराधीनता अभी भी बनी हुई है । आर्थिक स्वावलंबन का व्यक्ति के व्यक्तित्त्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है । एक ओर उसका निजी व्यक्तित्त्व प्रभावित होता है तो दूसरी ओर पारिवारिक संबंधों पर भी उसका गहरा प्रभाव पड़ता है ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में कई ऐसे विकलांग चरित्र है जिन्हें अनेक प्रकार की आर्थिक कठिनाईयों से गुजरना पड़ता है । कभी विकलांगों के आवास के लिए तो कभी पुनर्वास के लिए तो कभी व्यवसाय के लिए भी आर्थिक मदत की आवश्यकता पड़ती है । विकलांगों को अनेक बार तो शल्य क्रिया के उपचार के लिए और शारीरिक सुविधाओं के लिए अर्थ बहुत महत्त्वपूर्ण होता है, परन्तु अनेक विकलांगों को ऐसी समस्याओं से गुजरना पड़ता है ।

३.१.१ निर्धनता :

भारतीय समाज ही नहीं तो ब्रिटन तथा अमरिका सहित संसार के सभी विकसित, विकासशील और अविकसित देश निर्धनता की समस्या से पीड़ित है क्योंकि बाजारतंत्र धनी को और अधिक धनी तथा निर्धन को और अधिक निर्धन बना देता है । रूपए के अवमूल्यन तथा आए दिन वस्तुओं की बढ़ती हुई मूल्य वृद्धि तथा आय का असमान वितरण भी निर्धनता की वृद्धि का प्रमुख कारण है । निर्धनता पीड़ित लोगों की रोटी, कपड़ा, मकान जैसी न्यूनतम आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं हो सकती । निर्धनता एक ऐसी स्थिति है जिससे व्यक्ति इतनी भी आय अर्जित नहीं कर पाता है कि उसके जीवन यापन के लिए पर्याप्त हो। निर्धनता के संदर्भ में मिलर और रोबी का मत विरेन्द्र शर्माजी ने प्रस्तुत किया है, ''निर्धनता एक प्रकार की असमानता है जो निर्धनों की जीवन दशा तथा उनके जीवित रहने की सम्भावनाओं पर आय की असमानता से पड़नेवाले प्रभावों को स्पष्ट करती है । जिनके पास जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए साधन या पैसा या सामर्थ्य नहीं है, वे निर्धन कहलाते

हैं।''[१] निर्धनता भारतीय समाज की प्रमुख समस्या है। भोजन, स्वास्थ्य, घर, शिक्षा एवं मनोरंजन जैसी न्यूनतम आवश्यकताओं को भी निर्धनता की वजह से पूरा नहीं किया जा सकता ।

आम व्यक्ति के समान ही विकलांग व्यक्तियों को भी निर्धनता की समस्या से गुजरना पड़ता है । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में कई ऐसे चरित्र हैं, जिन्हें निर्धनता की समस्या से गुजरना पड़ता है । इस समस्या का दृढ़ता से सामना करके अपनी मंजिल प्राप्त करनेवाले भी कई विकलांग चरित्र स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में हैं ।

'अक्षत' का शंकर, 'एक बीघा प्यार' का हीरा, 'जल टूटता हुआ' का सतीश, 'मैला आंचल' का सेवादास, 'अगामी अतीत' का हरचरन, 'अंधे की आँख' का चन्दर, 'सूनी घाटी का सूरज' का रामचरण आदि अनेक विकलांग चरित्रों को निर्धनता की समस्या से गुजरना पड़ता हैं । प्रस्तुत उपन्यासों में उपन्यासकार ने विकलांग चरित्रों की यथार्थ स्थिति का अत्यंत सूक्ष्म अंकन किया है ।

'अक्षत' उपन्यास में उपन्यासकार ने एक विक्षिप्त चरित्र की आर्थिक समस्या को व्यक्त किया है । अत्यंत निर्धन परिवार का शंकर मानसिक रूप से विकलांग है । शंकर का परिवार आर्थिक रूप से पूरी तरह दरिद्र है । घर में तीन भाई अमरनाथ, शंकर और रमेश है । थोडी-बहुत जमीन थी वह भी गंगा के पेट में समा गई थी । एक बीघा जमीन जो बची थी, उसमें तीन भाई हिस्सेदार थे । ऐसे निर्धन परिवार में कोई अपनी बेटी ब्याहने को तैयार नहीं था । इसलिए मेहनत मजदूरी से धन इकट्ठा कर बालिकाओं को खरीदकर लाया जाता है और विवाह करके अपने-अपने परिवार दोनों भाई शुरू कराते हैं । एक भाई तो ब्याह नहीं करता । एक स्थान पर लेखक ने कहा है - ''आर्थिक दृष्टि से अमरनाथ, शंकर और उमेश पूरी तरह दरिद्र थे ।''[२] अत्यन्त निर्धन परिवार के विक्षिप्त शंकर को भी आर्थिक समस्या से गुजरना पड़ता है ।

'एक बीघा प्यार' का हीरा अर्थाभाव के कारण अपना खेत गिरवी रखता है ताकि ''उसमें गहरा आत्मविश्वास, श्रम से लगाव और भगवान में आस्था थी । उसने चाहा था कि सोम कॉलेज की शिक्षा पूरी करके कहीं नोकरी कर ले पर सोम ने पढ़ाई छोड़ दी थी।''[३] पूरानी रंजिश की वजह से हीरा की बैंगन की खेती उजाड़ दी जाती है । खेती मे पूरा नुकसान किया जाता है । सब कुछ बरबाद हो जाता है । अर्थाभाव और असंतोष के कारण हीरा बहुत मेहनत करता था । गिरवी रखे हुए अपने खेत को छुड़ाना चाहता है, परंतु उसका सपना चकनाचूर हो

जाता है । उसे निर्धनता की समस्या से गुजरना पड़ता है। वह अपने उजड़े हुए खेत को देखकर अपने भाग्य पर रोता है । हीरा स्वयं खेती में कड़ी मेहनत कर अपने भाई और बहन को खूब पढ़ाकर नोकरी लगाना चाहता है । ताकि आर्थिक दृष्टि से घर का सुधार करना और बहन को अच्छे घर में ब्याहना उसका सपना था ।

देवीशंकर पांडे 'आवां' उपन्यास का लकवाग्रस्त चरित्र है । विकलांगता के कारण वह चल-फिर नहीं पाता । जैसे भी चलने -फिरने के काबील होता है, तो कुछ घण्टों के लिए आघाडी कार्यालय में बैठता है । आघाडी के प्रमुख पदाधिकारी होने के बावजूद अन्ना साहब की गाड़ी बाबूजी को लेने आती थी और छोड़ भी जाती थी । धीरे-धीरे वह पिछड़े कामों में उलझने लगता है और पूरा दिन आघाड़ी कार्यालय में बिताता है । उसका जर्जर शरीर और दिमाग सामर्थ्य से अधिक परिश्रम और तनाव नहीं झेल पाता । आघाडी कार्यालय में ही एक सांझ को अस्थायी श्रमिकों के हित-संघर्ष की रणनीति बनाते समय शरीर के दाहिने अंग पर लकवे का अकस्मात आक्रमण होता है । वह बोल भी नहीं पाता इसलिए अन्ना साहब को लिखता हैं - ''अन्ना साहब मुझे नहीं लगता की मैं और अधिक दिन जीवित रह पाऊँगा, बच्चों और पत्नी के भविष्य की चिन्ता खाए जा रही है । शेष फंड और ग्रेच्युटी की रकम जितनी जल्दी प्राप्त हो जाए, नमी की माँ के नाम, यूनिट ट्रस्ट या जीवन बीमा निगम की पेंशन योजना में निवेश करवा दें । इस घर के जीवन-यापन का कोई मामूली आधार तो बनें ।''[४] लकवे की वजह से उनका पूरा शरीर संवेदनाहीन हो गया था । अकस्मात उनकी फैक्ट्री भी जबरदस्त घाटे की चपेट में आती है । आयकर विभागवाले भूस्खलन से अररराते 'सर्च एंड सीज' को घर आकर धमकाते हैं । मजबूरन अपनी बेटी नमी के ब्याह के मकसद से हुड़को का खरीदा हुआ छोटा-सा फ्लैट बेचना पड़ता है । नौबत तो गहने-गुरियों को बेचने की भी आती है । एक स्थान पर कहा गया है कि, ''वक्त की मार ने इंद्र भैया के फ्लैट को भी नहीं बख्शा । फैक्टरी की अर्थ-व्यवस्था को पटरी पर लाने की गरज से उसे भी बेमन से बेचना पड़ा।''[५] लकवाग्रस्त बाबूजी को अस्पताल में भर्ती किया जाता है, परंतु वहाँ का इलाज बहुत महंगा रहता है । लेखिका ने एक स्थान पर रूपयों का महत्त्व बताते हुए कहा है - ''पैसे की ताकत मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत है । पैसे की ताकत से एक बुद्धिहीन, अपाहिज, असमर्थ व्यक्ति बुद्धिमान का मस्तिष्क और सबल की शक्ति खरीद बड़ी आसानी से अपने हितों के लिए उसका उपयोग कर समाज

और संसार का सर्वाधिक समर्थ व्यक्ति बन सकता है ।''[६] इस प्रकार विकलांग देवी शंकर को आर्थिक कठिनाई से गुजरना पड़ता है । घर-परिवार पत्नी बच्चों के लिए कुछ-न-कुछ जुगाड़ करना पड़ता है । निर्धनता की वजह से वे अपनी बिमारी का इलाज एक अच्छे अस्पताल में नहीं कर पाते ।

'मैला आंचल' का विकलांग चरित्र सेवादास नेत्रहीन है । वह अत्यंत निर्धन है । अपने जीवन यापन के लिए आर्थिक कमाई का कोई साधन उसके पास नहीं । इसलिए वह एक मठ में सेवा करता है । वहां जो कुछ मिलता था उससे अपना निर्वाह करता है । वह मठ उसके बगैर बीना प्राण की काया समझा जाता है । वह साहिब वचन सुनाता है तो मंत्रमुग्ध होकर लोग सुनते रहते हैं । वह मठ ही उसकी रोजी रोटी का एकमात्र साधन होता है। नेत्रहीन होने की वजह से वह दूसरा कोई काम नहीं कर पाता ।

कमलेश्वर जी द्वारा रचित उपन्यास 'अगामी अतीत' का हरचरण हरकारा अपाहिज है । वह अत्यंत निर्धन है । अपने परिवार का गुजारा करने के लिए जंगल में गश्त पर चला जाता है । परंतु वह एक दिन वापस लौटता ही नहीं । अपाहिज अवस्था में किसी घने जंगल में गश्त देना उसके लिए बहुत बड़ा धोका था, परंतु अपने जीवन निर्वाह के लिए जंगल में गश्त देने का काम करना पड़ता है । अत: निर्धनता की वजह से विकलांगों को भी किसी आम व्यक्ति के जैसे काम करने का साहस करना पड़ता है । लेकिन ऐसे काम की वजह से अपनी जान गंवानी पड़ती है ।

अंसुल जी द्वारा लिखित उपन्यास 'अधूरा मिलन' में सोहनलाल नामक विकलांग चरित्र को निर्धनता की समस्या से गुजरना पडता है । रिटायर्ड होने के बाद सोहनलाल को अपने परिवार के निर्वाह की चिंता सताती है । वे अपने बेटे अनिल को नौकरी पर लगाने के लिए विकलांग अवस्था में ही बहुत भाग-दौड़ करते हैं । वह सोचता है कि बेटे को नौकरी लगी तो परिवार का कर्जा चुकाया जा सकता है । उसे अपनी पुत्री जो कि शादी लायक थी उसकी भी चिंता सताती है । जब अनिल की नोकरी का शुभ समाचार सुनता है तो बेहद खुश हो जाता है। वह कहता है, ''मैं इसी दिन का इन्तजार कर रहा था । जब मुझे अपने सारे सपने साकार होते नजर आ रहे हैं । अब सब ठीक हो जाएगा । सर पर चढ़ा कर्जा उतर जाएगा । कुसुम की शादी हो जाएगी और घर में बहु भी आ जाएगी ।''[७] प्रस्तुत उपन्यास का दूसरा एक विकलांग

चरित्र है जो लोगों के जुते-चपलों की देख-रेख करता है और अपना गुजारा करता है । उसके बदले में मिले हुए पाँच-दस रूपयों में ही अपना जीवन यापन करता है । वह शारीरिक विकलांगता के कारण कड़ी मेहनत नहीं कर पाता । इसलिए ज्यादा मेहनताना लेने की भी आकांक्षा नहीं रखता । कम पैसों में ही खुश होकर जीवन व्यतित करता है । उसके जैसा खुश तो कोई अमीर या पैसेवाला भी नहीं रह सकेगा इतना वह खुश रहता है ।

'अपनी जमीन देखो' उपन्यास की अपाहिज महदेई को आर्थिक अभाव से गुजरना पड़ता है । वह विकलांगता की वजह से मायके में ही पड़ी रहती है, परंतु मायकेवालों को बोझ न लगे इसलिए अपने पति को कहती है, ''आप हमका दस रूपया दिया करों और आप दूसर शादी कई लेवा ।''[८] वह ऐसी जिंदगी से मरना अच्छा समझती है । आर्थिक अभाव की वजह से विकलांगों को अनेक बार लाचार जिन्दगी जीनी पड़ती है । कुछ दिन तक भाई-भौजाई महदेई की अच्छी देखभाल करते है । लेकिन बाद में वे लोग भी मुँह फेर लेते हैं । महदेई के दादा-दादी भी बूढ़े हो गये थे । इसलिए उसका आर्थिक बोझ उठाने वाला मायके में भी कोई नहीं था । उसका ब्याह भी अत्यंत निर्धन घर में हुआ था वहाँ भूंजी भांग भी नहीं थी । उसका पति भगवन्ता एक स्थान पर कहता है, ''यदि कु. साहब के परिवार से सहायता न मिलती और जवाहिर अहिर जैसे दोस्तों से निश्छल व्यवहार न मिलता तो हमारी गन्ध भी गाँव से गायब हो जाती ।''[९] इस प्रकार विकलांगों को भी आम व्यक्ति के जैसा आर्थिक अभाव झेलना पड़ता है । विकलांगता पर मात कर विभिन्न समस्याओं से गुजरनेवाले अनेक विकलांग आज भी समाज में हैं ।

'प्रतिध्वनियाँ' उपन्यास का विकलांग पीलू अत्यंत निर्धन है । वह आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होने के लिए उपन्यास के कथा नायक के पास जाकर काम करके अपना निर्वाह स्वयं करना चाहता है । वह किसी पे बोझ नहीं बनना चाहता । वह जब उपन्यास के कथा नायक के पास काम मांगने जाता है तब उपन्यास का नायक उस अष्टावक्र को देखकर सोच में पड़ता है। परंतु उसका काम देखकर हृदय से खुश हो जाता है । पीलू चौका-बर्तन, बगीचे की देखभाल अत्यंत इमानदारी से करता है । उसकी बनायी बेहद स्वादिष्ट चाय पीकर कथानायक चौंक जाता है ।

धर्मवीर भारती जी ने 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' उपन्यास में विकलांग चमन ठाकुर की आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है । वह सफरमैना पल्टन में भरती हो जाता है । लेकिन क्वेटाबलूचिस्तान की ओर एक गाँव के नेस्तनाबूद हो जाने के बाद अपने गाँव में आकर रहता है । उसका एक हाथ कट जाने के कारण वह अपना पुश्तैनी पेशा नहीं कर सकता । इसलिए साबुनसाजी शुरू करता है । उसका पहिया छाप साबुन न सिर्फ मुहल्ले में बेचा जाता बल्कि चौक तक की दूकानों पर भी बेचा जाता है । सोलह-सत्रह साल की सत्ती उसे इस काम में मदद करती है । वह साबुन जमाकर काले बेंट के चाकू से काटकर दूकानदारों तक पहुँचाती है ।

'जल टूटता हुआ' का सतीश भी विकलांगता के कारण आर्थिक अभाव से गुजारता है । उसके घांव की चिकित्सा कर डॉक्टर जब जाने को निकलता है तब उसको पैसे देने के लिए सतीश अपने फटे कुरते की फटी थैली में झूठे हाथ डालकर टटोलता है । पैसे की चिंता उसे सताए रहती है । वह रामधनी से कहता है, ''नहीं रामधनी, ऐसा कभी नहीं हो सकता, आगे से डॉक्टर कभी नहीं आएगा, मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं ।''[१०] किसीसे पैसे लेना सतीश को मंजूर नहीं । वह कभी किसी से पैसे उधार तक नहीं लेता । उसका कहना है कि जो चीज मेरे पास नहीं है उसका उपयोग करने की हबिस मुझे नहीं है । वह कर्ज खाकर मरना नहीं चाहता । वह फटा कुर्ता और फटी धोती पहनकर नंगी चारपाई पर लेटा रहता है । उसे आर्थिक अभाव में कई दिन बिताने पड़ते हैं । उसके मकान का बहुत सा हिस्सा बरसाती पौधों से भर जाता है । खेती-बारी में भी कुछ खास नहीं और बाहर की भी कोई आमदनी नहीं । इसलिए उसे आर्थिक अभाव से गुजरना पड़ता है, परंतु वह किसी के सामने हाथ पसारता नहीं । वह भले ही विकलांग है परंतु स्वाभिमानी चरित्र है ।

राजेंद्र यादव जी द्वारा लिखित उपन्यास 'अनदेखे अनजान पुल' की निन्नी के सामने भी आर्थिक प्रश्न खड़ा हो जाता है । वह दिखने में अत्यंत कुरूप है । जब वह दिल्ली जाती है तब उसके दादाजी उसे एक पैसा भी नहीं देते । उसका बस का टिकट तक दर्शन ही निकालता है । इसलिए वह सोचती है कि अगर नुमायश गए तो बेचारे के न जाने कितने रूपए खर्च हो जायेंगे । वह उसे कहती है, ''हम नुमायश चलेंगे पर एक शर्त पर, आप हमसे पैसे ले लेंगे।''[११] आर्थिक अभाव में पली हुई निन्नी दर्शन के रूपए खर्च होने की वजह से संकोच

करती है । भले ही वह कुरूप है परंतु वह किसी पर आर्थिक बोझ नहीं बनना चाहती । वह हमेशा खर्चे को लेकर सतर्क रहती है ।

'अंधे की आँख' नामक उपन्यास में नेत्रहीन चन्दर का चरित्र अंकित है । इस चरित्र की आर्थिक स्थिति को प्रस्तुत करते हुए स्वयं उपन्यासकार ने कहा है, ''पौ फटते ही उठ आम-इन्सान के लिए जो कुछ भी जरूरी होता है, उसे निबट-माँ बेटे को निबटा यथाशीघ्र घर से बाहर चली जाती है ।''[१२] परिवार का गुजारा करने के लिए चन्दर की माँ अपने विकलांग पुत्र को अकेला छोड़कर जाती है । आते समय अपने पुत्र के लिए ठंडा-बासी खाना लेकर आती है। चन्दर के पिताजी तीन कौडी की प्राइवेट नौकरी करते हैं। एक्सीडेन्ट के वज्र आघात से चन्दर पूरी तरह से घायल होता है । आर्थिक अभाव के कारण उसे सरकारी अस्पताल में इलाज के लिए इमरजेन्सी वार्ड में भरती किया जाता है । उसे वहाँ अच्छी दवा और एक कटोरा दूध तक नहीं मिल पाता । इस विडम्बना को व्यक्त करते हुए लेखक ने कहा है - ''धनहीनों को दूध नसीब नहीं होता और अधिकतर धनवानों को दूध बदहजमी करता है ।''[१३] गरीबी, साधनहीनता आदि सभी समस्याओं से गुजरता हुआ चन्दर अपनी विकलांगता पर मात कर आगे रास्ता ढूँढता रहता है । अति आवश्यक इलाज के अभाव में चन्दर की हालत बिगड़ती जाती है । वह मृत्यु के निकट पहुँचता है । चन्दर के आँखों की रोशनी वापस लाने में डॉक्टरों का प्रयास असफल हो जाता है । दूसरी आँखें बिठाने के निर्णय से नई दिल्ली स्थित 'राष्ट्रीय नेत्र बँक' में उसे भर्ती किया जाता है। वहाँ ज्ञानवती नामक परिचारिका चन्दर का काफी खयाल रखती है । वह अपने खर्चे से उसे दवा-कैपसूल लाकर खिलाती है । अंत में अपने ही घर ले जाती है । इस प्रकार नेत्रहीन चन्दर आर्थिक अभाव से गुजरता हुआ अपनी मंजिल तक पहुँच जाता है ।

सन् १९८७ में प्रकाशित तथा श्रीलाल शुक्ल जी द्वारा लिखित उपन्यास 'सूनी घाटी का सूरज' में विकलांगों की आर्थिक समस्याओं का अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रण किया है । प्रस्तुत उपन्यास का चरित्र रामचरण के घर की स्थिति बिकट होने के कारण चोरी करता है । अनेक बार पकड़ा जाता है । इसलिए उसे कई बार जेल की सजा भुगतनी पड़ती है। अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वह गाँव के मुखिया के खेत से बैलगाड़ी भर हरे चने की फसल काटकर चुराता है और बिकने के लिए शहर जाते समय पकड़ा जाता है । इस मुकदमे में उसे तीन माह की जेल की सजा भुगतनी पड़ती है । इस उपन्यास का दूसरा विकलांग चरित्र

रघुनाथ काका भी अपने परिवार का आर्थिक बोझ कम करने के लिए वृद्धावस्था में भी कोल्हू में इख लगाना या चारा-पानी आदि छोटे-मोटे काम करता रहता है । अपनी विकलांग अवस्था के कारण कोई बड़ा काम न कर पाने के एहसास से दु:खी हो जाता है । वह कहता है, ''तुम्हारा माथा सहलाने को जी करता है । पर हाथ अपंग हो गए है । सब खून निकल चुका है । मैं गन्ना पकड़े था। वह जब कोल्हू के पाटों में कुचल गया तो दोनों हाथों की अँगुलियाँ कोल्हू के पाटे में छू गई है। मैं जब तक चिल्लाऊँ कि एक चक्का और घूम गया दोनों हाथ पिस गए।''[१४] उसके दोनों हाथ कट जाने से वह कुछ काम नहीं कर पाता । अत: उसे आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ता है । साथ ही एक अनाथ वृद्ध विकलांग की आर्थिक समस्या को भी उपन्यासकार ने यहाँ उजागर किया है । वह वृद्ध अपने परिवार का आर्थिक बोझ कम करने के लिए एक ठेकेदार के पास काम करता है । काम करते समय उसका एक हाथ पत्थर के ढोंके के नीचे दब जाता है । वह तिलमिलाता हुआ ठेकेदार के पास अपनी पीड़ा की क्षमा याचना करता है । लेकिन ठेकेदार उसे नहीं छोड़ता । ठेकेदार उस पर दयाभाव नहीं दिखाता । अंतत: उस वृद्ध का देहान्त हो जाता है ।

३.१.२ रिश्वतखोरी :

भारत में भ्रष्टाचार की जड़े गहरी है । रिश्वत खोरी यह भ्रष्टाचार का ही एक रूप है। इक्कीसवीं शताब्दी में भ्रष्टाचार को रोकना असम्भव है । सरल शब्दों में भ्रष्टाचार को रिश्वतखोरी का कार्य कहा जाता है । राम आहूजा का यह वक्तव्य यहाँ उद्धृत है - ''निजी लाभ के लिए सार्वजनिक शक्ति का इस प्रकार प्रयोग करना जिसमें कानून तोड़ना शामिल हो या जिससे समाज के मानदण्डों का विचलन हुआ हो ।''[१५]

स्वार्थपूर्ति के लिए तथा निजी लाभ के लिए व्यक्ति किसी-न-किसी प्रकार से रिश्वत लेता ही है । यह समस्या केवल भारत में नहीं तो विश्वव्यापी है । यह बहुत बड़ा तथ्य है। छोटे-से-छोटा काम करनके के लिए भी लोग रिश्वत लेते हैं । यह वर्तमान समाज में बहुत चिंतनीय है । इस समस्या की वजह से आम लोगों को कठिनाई का सामना करना पड़ता है । आम लोगों के समान विकलांगों को भी इस समस्या का सामना करना पड़ता है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में कुछ उपन्यासकारों ने रिश्वत की वजह से विकलांगों की हो रही दयनिय अवस्था का अत्यंत सूक्ष्म चित्रण उपन्यासों मे किया है । 'अनुराधा', 'बसन्ती'

आदि उपन्यासों के माध्यम से रिश्वत की समस्या और विकलांगों की दयनीय अवस्था का चित्रण किया है ।

'बसन्ती' उपन्यास का बुलाकीराम शरीर से विकलांग है । वह आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर है । शारीरिक विकलांगता की वजह से उससे कोई अपनी लड़की का हाथ देने को तैयार नहीं होता । उसके आस-पड़ोस के लोग उससे पैसे लेकर रिश्ता जोड़ने का आश्वासन देते है, परंतु कोई उसका ब्याह तय नहीं करता । उससे अनेक बार पैसे ऐंठ लिए जाते है ं। लोग उसे कई बार पैसे लेकर ठगाते हैं । पैसों की उसे कमी नहीं । वह खुले दिल से अपने दोस्तों पर खर्चा कर देता है । बुलाकीराम के शब्दों में - ''आपकी दया से पैसे की कमी नहीं है और बुलाकी का दिल भी छोटा नहीं है ।''[१६] लड़कीवालों को पैसे देकर ब्याह करना पड़ता है। ब्याह का सारा खर्चा स्वयं बुलाकीराम करता है। अत: विकलांगता की वजह से विकलांग व्यक्ति से रिश्वत लेना यह एक प्रकार का क्रूर कृत्य है । उसकी विकलांगता का फायदा समाज के कई लोग उठाते हैं।

हिंदी साहित्य जगत के ख्यातनाम लेखक भीष्म साहनी जी ने 'बसन्ती' नामक उपन्यास में विकलांगों से ली जानेवाली रिश्वत की समस्या को व्यक्त किया है । रिश्ता तय करने जैसे पावन कार्य के लिए भी लोग विकलांगों से रिश्वत लेते है । प्रस्तुत उपन्यास का बुलाकीराम शारीरिक विकलांग चरित्र है । वह अपना घर बसाने के लिए रिश्ता तय करना चाहता है । प्रस्तुत उपन्यास के चौधरी को वह दो बार रूपये देता है परंतु चौधरी उसे दो बार भी धोखा देता है । फीर भी तीसरी बार चौधरी रिश्ता तय करने के नाम पर रूपए हड़प लेता है । तब बुलाकीराम उसे कहता है, ''हमने तेरी बात पर फूल चढ़ाये चौधरी, आगे तू जाने तेरा ईमान जाने । यह ले, पूरे दो सौ है ।''[१७] बुलाकीराम का तीन बार ब्याह रचाया जाता है और तीन बार उसे धोखा दिया जाता है । बुलाकीराम झाँसा देनेवाले चौधरी को हथकडी लगवा देने की सोचता है । अत: शारीरिक रूप से विकलांग बुलाकीराम का दिल बहुत बड़ा है । उसका ब्याह तय करने के लिए तक लोग उससे रिश्वत लेते हैं । उसे धोखा देते हैं ।

खुशाल सिंह जी द्वारा रचित 'अनुराधा' उपन्यास में रिश्वत की समस्या को लेखक ने उजागर किया है । प्रस्तुत उपन्यास की विकलांग सुलोचना आर्थिक समस्या के कारण अपने पति को कलेक्टर के यहाँ रोटियाँ बनाने को भेजती है । और स्वयं भी उसकी मदत करने को

जाती है । वह अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लालच में समाज की कई जवान औरतों को कलेक्टर से रिश्वत लेकर उसके पास पहुँचाती है। इस बात से खुश होकर कलेक्टर उसके पति को प्रशिक्षण के बतौर पटवारी बनाकर दूसरे गाँव भेज देता है। आगे चलकर उसे तहसीलदार बनाने की भी बात करता है । एक विकलांग स्त्री अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए गलत कार्य करती है ।

३.१.३ गरीबी :

भारत कृषिप्रधान देश है । लोकसंख्या अधिक होने की वजह से भारतीय समाज को गरीबी, निर्धनता, आर्थिक अभाव आदि विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति भी गरीबी की वजह से नहीं की जा सकती । जीवन की आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिए आवश्यक पैसा नहीं होना, अर्थात गरीबी है । साथ ही शारीरिक आवश्यकताओं जैसे भूखमरी, पोषणहीनता, बीमारी, कपड़े, मकान और स्वास्थ्य सुविधा आदि का घोर अभाव गरीबी की वजह है । आय की असमानता के कारण गरीबी भुगतनी पड़ती है । गरीबी यह भारतीय समाज को लगी हुयी एक प्रकार की कालिख है ।

साहित्यकारों ने गरीबी की समस्या और इस समस्या के कारण मनुष्य जीवन का गिरता स्तर अनेक उपन्यासों में व्यक्त किया है । स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में यह समस्या सकलांगों के समान विकलांगों के जीवन में भी घर कर बैठी है । जिसका चित्रण कुछ उपन्यासकारों ने किया है । 'एक बीघा प्यार', 'जल टूटता हुआ' आदि उपन्यासों में लेखकों ने विकलांगों की गरीबी की स्थिती में होनेवाली परवरिश और अभावग्रस्त जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है ।

'अंधे की आँख' का विकलांग चंदर की पारिवारिक स्थिति अत्यंत विकट है । पौ फटते ही चन्दर की माँ अपने अपाहिज बेटे के सारे क्रियाकर्म निबटाकर काम पर जाती है। दोपहर को लौटते समय चन्दर के लिए कुछ बासा-ठंडा खाना लाती है । फिर वापस काम पर जाती है । फिर शाम को लौटती है । अत: गरीबी के कारण उसे दिन-रात मेहनत करके परिवार का गुजारा करना पड़ता है । अपने अपाहिज बच्चे को छोड़कर जाना उसकी विवशता है । चन्दर माँ ने लाया हुआ ठण्डा-बासा खाना खाकर संतुष्ट हो जाता है । एक बार एक व्यक्ति पैसे मांगने के लिए चंदर के घर आता है । उसके पिताजी को पूछता है । तब चन्दर कहता है, पिताजी घर पर है । परन्तु सच बोलने की गलती से चन्दर को मार खानी पड़ती है । उसके पिताजी उसे

डण्डे से मारते हुए कहते हैं, ''कर तो रहा था इंतजाम। जब पैसे पास नहीं थे तो कहाँ से देता... कहाँ तक मोरो तन वेट को... सामना हो गया, कफन, खसोटे से, इसकी बदौलत।''[१८] चन्दर का पिता नाना विध कष्ट और अभाव सहकर उसका पालन-पोषण करता है । चन्दर अपने पिताजी के विशाल व्यक्तित्त्व की तुलना में स्वयं को बौना पाता है । उसकी एक बहन को माँ ने गला दबाकर मारा था । थके-सुखे अपने हाड पेल माँ बदले में जो कुछ पाती, वह दो जीवधारियों के जीवन निर्वाह के लिए भी अपर्याप्त था । वह अपने हाथों से अपनी संतान के मुँह में कौर भरने का प्रयास करती तो चन्दर भूख न लगने का, तो कभी पेट भरने का बहाना करता। परन्तु भूख उसके पेट में नागिन की तरह बल खा रही होती । चन्दर एक स्थान पर अपने पिताजी के सन्दर्भ में कहता है - ''कर्जे के नाग-फाँस में अगर नहीं फँसे होते तो जरुर वह आज तक जिन्दा होते, सही सलामत होते ।''[१९] अत: कर्जे की चिंता से पिताजी की मृत्यु हो जाती है। पिताजी के देहान्त के बाद कर्ज से मुक्ति पाने के लिए वह दिन-रात मेहनत करता है। यहाँ तक की शादी करके खर्चा बढ़ाना या आनेवाली के अरमानों को तोड़ना भी उसे पसन्द नहीं था । लेखक कहते हैं - ''शैतान की आंत था वह कर्जा नहीं था... सच पूछो तो सबा सेर गेहूं था... प्रेमचंद की कहानीवाला.... सात जनम नहीं पाट पाते तुम उसको ।''[२०] चन्दर अपनी विकलांगता के साथ ही गरीबी में फंसा हुआ और कर्ज में फँसा हुआ युवक था। विकलांगता की समस्या के साथ ही उसे गरीबी और कर्ज की समस्या से भी गुजरना पड़ता है ।

'जल टूटता हुआ' का सतीश विकलांग अवस्था में चारपाई पर लेटा रहता है । उसकी पत्नी बीच-बीच में आकर पति की देखभाल करती है । सतीश उसे देखता है तब पेबन्द लगी साड़ी में बड़ी खुश नजर आती है । वह सतीश के लिए चिंतीत सी दिन-रात एक किए रहती थी । सतीश का भाई चन्द्रकांत आई.ए.एस. के रूप में चुना जाता है । तब सतीश कहता है, ''अब मुझे कोई चिंता नहीं । आज मेरी एक बड़ी मुराद पुरी हो गई । मैंने बहुत कुछ खोया है, लेकिन आज जितना पाया है वह अपार है । मैं चाहता रहा तुम बड़े बनो ।''[२१] सतीश के संदर्भ में कहा गया है - ''सतीश के परिवार की कहानी आर्थिक दबाव और अभाव में मूल्य राज की त्रासदी निहित है ।''[२२] सतीश गाँव की मिट्टी से जुड़ा हुआ एक उपेक्षित और आर्थिक स्तर पर निरन्तर टूटता हुआ चरित्र है ।

'एक बीघा प्यार' उपन्यास का हीरा शारीरिक रूप से विकलांग है । वह अपनी छोटी बहन और भाई के साथ रहता है । उन दोनों को पढ़ने के लिए प्रेरित करता है । सात साल की अवस्था में ही उसके पिताजी का देहान्त होता है । जब उसकी माँ जिंदा थी तब उसने अपनी माँ से कहा था - ''माँ तकदीर ने मुझे अपाहिज बना दिया तो इसका यह मतलब नहीं कि इस बात के लिए मैं अपनी तकदीर को सराहता रहूं। इस बैसाखी के सहारे जीने का तो यही मतलब होगा । मैं अपने भाग्य से लड़ना चाहता हूँ ।''[२३] अपने परिवार का निर्वाह करने के लिए वह खेती में कड़ी मेहनत करता है । अपने बैंगन के पौधों को देखकर प्रसन्न हो जाता है । वह आत्मविश्वास के साथ अपने भाई को कहता है इस बार रूपया किलो जायेंगे बैंगन । एक बार अठारह रूपये फिस भरने की वजह से उसकी बहन विमला को प्रिंसिपल के सामने खड़ा होना पडता है । तब हीरा को बहुत बुरा लगता है।

३.२ सामाजिक समस्याएँ :

भारतीय समाज अनेक रूढ़ि-परम्पराओं, अंधविश्वासों में फंसा हुआ है । भारतीय समाज व्यवस्था में अनेक समस्याओं में से मनुष्य को अपना रास्ता ढूँढना पड़ता है । सामाजिक समस्या के प्रति सुमन कृष्णकांत ने लिखा है कि, जे.ए. दुबाईस ने हिंदू मैनर्स कस्टम्स एंड सेरेननीज नामक अपनी पुस्तक में प्राचीन भारत को तो खौफनाक और बर्बर रीति-रिवाजों का केंद्र माना है । उनके अनुसार अनैतिक प्रथाओं का उदाहरण भारत के अतिरिक्त दुनिया के इतिहास में और कहीं नहीं मिलता । दिल दहलानेवाली कुछ सामाजिक समस्याएँ भारतीय समाज में है ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में विभिन्न प्रकार की सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है । कई ऐसे विकलांग चरित्र हैं जो विभिन्न समस्याओं से गुजरते हुए अपनी मंजिल हासिल करने में सफल होते है । तो कुछ विकलांग चरित्र सामाजिक समस्याओं में दबकर अपना सर्वस्व बरबाद करते हैं । 'अपने-अपने कोणार्क', 'बसन्ती', 'प्रतिध्वनियाँ', 'रतिविलाप', 'किशनुली', 'टुण्डा लाट', 'लाल पसीना', 'एक बीघा प्यार', 'कैंजा', 'जल टूटता हुआ', 'अंधे की आँख', 'अनदेखे अनजान पुल', 'मैला आँचल', 'खंजन नयन' आदि अनेक उपन्यासों में विकलांगों की सामाजिक समस्याओं का सूक्ष्म चित्रण उपन्यासकारों ने किया है ।

३.२.१ जातिगत समस्या :

जातिगत समस्या सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त समस्या है । व्यक्ति और समाज के स्तर पर असमानता पायी जाती है । यह भारतीय समाज की प्रमुख समस्या है । कुछ जाति-धर्मो में रोटी-व्यवहार तो किया जाता है, परन्तु बेटी-व्यवहार नहीं किया जाता । वीरेन्द्र शर्मा जी ने एक स्थान पर जाति की असमानता के संदर्भ में कहा है - ''आधुनिक जगत का महान विरोधाभास यह है कि हर स्थान पर मनुष्य अपने को समानता के सिद्धांत का समर्थक बताते हैं और हर स्थान पर वे अपने जीवन में तथा दूसरे के जीवन में असमानता की उपस्थिति का सामना करते हैं ।''[२४] जातिगत समस्या भारत के कोने-कोने में फैली हुई है। प्रारम्भ से ही भारतीय समाज व्यवस्था में जातिगत समस्या देखने को मिलती है । इस समस्या की वजह से समाज का स्तरीकरण होता है । समाज के प्रत्येक सदस्य का अन्य सदस्यों, समूहों तथा जाति के संदर्भ में व्यवसाय, खान-पान, विवाह आदि बातें नियंत्रित, निर्देशित और संचलित होती है ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में कुछ उपन्यासकारों ने जातिगत समस्या को अत्यंत सूक्ष्मता से अंकित किया है । इस समस्या की वजह से विकलांगों को बेसहारा होना पड़ता है । जिसका दुनिया में कोई नहीं ऐसे व्यक्ति के प्रति कोई दूसरी जाति की स्त्री सहानुभूति रखकर उसे अपनाती है तो यह कठोर समाज ऐसे लोगों को जान से मारने की कोशिश करता है । जातिगत समस्या को चंद्रकांता जी ने अपने-अपने कोणार्क नामक उपन्यास के द्वारा उजागर किया है । विकलांगों को इस समस्या का सामना करना पड़ता है। इस समस्या से गुजरते हुए विकलांग व्यक्ति की पीड़ा और असहायता का अत्यंत सूक्ष्म चित्रण स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में मिलता है ।

हिंदी साहित्य जगत की ख्यातनाम लेखिका चंद्रकांता जी का प्रसिद्ध उपन्यास 'अपने-अपने कोणार्क' में सिद्धार्थ नामक विकलांग युवक का चित्रण आया है । वह एक एक्सीडेंट में घायल हो जाता है । उसके पैर में सैप्टिक हो जाने से पैर काटना पड़ता है । उसे अस्पताल में नासिरा नामक एक समर्पित नर्स मिलती है । वह पुनश्च एकबार अपनी नयी जिंदगी शुरू करता है । नासिरा काफी मदद करती है । अस्पताल से छुट्टी मिलने पर भी वह चल नहीं सकता । पैर कटने का दु:ख उसके लिए एक बहुत बड़ा धक्का था । चंद्रकांता जी ने एक स्थान पर कहा है, ''पराई जगह पराए लोगों के बीच अकेला और बीमार आदमी कितना

असहाय हो सकता है ।''[२५] अत: कितनी भी हिम्मत क्यों न हो परंतु ऐसी अवस्था में इन्सान टूट ही जाता है । उस वक्त नासिरा उसे काफी सहयोग देती है । वह उसे अस्पताल से सीधे अपने घर ले जाती है । सिद्धार्थ को नकली पैर लगवाया जाता है । नासिरा खुद उसके साथ रहकर व्यायाम करती है । उपन्यासकार के शब्दों में -''नासिरा ने उसे फिर से जीने की हिम्मत दी । वह तो निराश हो चुका था । जेब भी खाली थी । एक्सीडेंट में पर्स पता नहीं कहीं रह गया । साथी का भी कुछ पता नहीं चला।''[२६] नासिरा सिद्धार्थ के साथ ज्यादा दिन तक नहीं रह पाती । उसकी हालात सुधारते ही वह अमेरिका जाने की सोचती है । दोनों विवाहबद्ध होते हैं, परन्तु उनके पास का कट्टर समाज सिद्धार्थ को नासिरा के पति के रूप में स्वीकारना असम्भव था । इसलिए नासिरा सिद्धार्थ का हौसला बनाए रखती है । नासिरा भले ही उसकी रिश्ते-नाते से कोई नहीं थी, फिर भी उसे नयी जिंदगी देती है।

फणीश्वरनाथ रेणु जी का उपन्यास 'कितने चौराहे' में रेणु जी ने विकलांगों की जातिगत समस्या को प्रस्तुत उपन्यास में उठाया है । मानसिक विकलांगता का शिकार बना हुआ हफीज को जातिगत समस्या से गुजरना पड़ता है । वह एक मास्टर है, परंतु मानसिक विकलांगता की वजह से वह समाज को ज्ञानदान करने का काम नहीं कर पाता। प्रस्तुत उपन्यास का मनमोहन तथा प्रियोदा उसे देखने को जाते है ं। तब हफीज को बहुत नवाजते हैं । हफिज समाज में व्याप्त हिंदू-मुस्लिम भेद को मिटाने का प्रयास करता है । वह जातिभेद को मिटाकर एकता की स्थापना करना चाहता है । वह दौड़कर कहता है, ''महाराज जी, महाराज जी । मुझे बचाइए । सभी नापाकों ने मिलकर मुझे मारा है।''[२७] वह विकलांगता के बावजूद भी चर्खा-कर्घा के प्रचार का काम करता है । लेकिन समाज उस पर विश्वास नहीं करता । बल्कि उसकी उपेक्षा करता है। इतना ही नहीं तो कुछ लोग उसे कैम्प जेल पटना भेजते है । उसके बारे में लोग अनेक अफवाहे फैलाते हैं । एक बार तो हिंदू-मुस्लिम दंगे में हाफीज को पकड़ाकर उसकी देह पर किरासन डालकर आग लगाने और उसका जनाजा हिंदू-मुस्लिम भाई-भाई राम नाम ना जुदा करो साई कहकर निकाला जाता है । इस प्रकार क्रूर समाज का विकलांगों के साथ किया हुआ क्रूर कृत्य इस उपन्यास में अत्यंत सूक्ष्मता से दृष्टिगोचर होता है ।

३.२.२ अनमेल विवाह :

भारतीय समाज में विवाह से सम्बन्धित समस्याओं में से एक प्रबल समस्या है, अनमेल विवाह की । पति-पत्नी की उम्र और विचारों में अनमेल होता है । इसलिए यह समस्या उभरकर आती है । उनका वैवाहिक जीवन असामंजस्यपूर्ण हो जाता है । दोनों के सम्बन्ध असामान्य और तनावग्रस्त हो जाते हैं । ऐसी स्थिति में पति पत्नी के विवाह सम्बन्धों में बिखराव और तनाव निर्माण होता है । आर्थिक और पारिवारिक समस्या के कारण वधूपक्ष अनमेल विवाह के लिए विवश हो जाता है । लड़की को अच्छा साथी न मिलने की वजह से अथवा आर्थिक स्थिति बिकट होने की वजह से यह विवाह किया जाता है । दोनों की उम्र, स्वभाव और विचारों में भी कमाल का अंतर होता है ।

अनमेल विवाह की समस्या को स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में उजागर किया है । यह एक भयावह समस्या है । इस समस्या से विकलांग व्यक्ति भी छूटा नहीं । विकलांगता की वजह से कई बार विकलांगों को इस समस्या से गुजरना पड़ता है । अनमेल विवाह की समस्या के संदर्भ में डॉ. बबनराव बोडके जी ने कहा है, ''ऐसे विवाह में स्त्री का अंसतोष बाहर खुलकर व्यक्त नहीं होता और वह अंदर ही अंदर घुटती रहती है। उसका पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन विषाक्त हो जाता है ।''[२८] आधुनिक दौर में पनपे हुए अनमेल विवाह का अनेक लेखक लेखिकाओं ने बहुत जमकर विरोध किया है। अनेक उपन्यासों में इस समस्या का सूक्ष्म चित्रण किया है ।

कमलेश्वर जी द्वारा लिखित उपन्यास 'अगामी अतीत' में अपाहिज व्यक्ति की अनमेल विवाह की समस्या को लेखक ने उजागर किया है । प्रस्तुत उपन्यास का हरचरन विकलांग है । वह अपाहिज होने की वजह से उसका ब्याह नहीं हो पाता । वह एक चंदा नामक वेश्या के साथ ब्याह करता है । दोनों की उम्र में बहुत बड़ा अंतर होने के बावजूद भी वह चंदा को पत्नी के रूप में अपनाता है । चंदा विशेष रूप से अपने अपाहिज पति का ख्याल नहीं रखती । हरचरन की एक दिन एक भयावह जंगल में मृत्यू होती है । उसके मृत्यू की खबर एक मुसाफिर के द्वारा चंदा को मिलती है । ''उत्तरवाले जंगल में हरचरन हरकारे को जंगली जानवर ने मार डाला है ।''[२९] पति के निधन की खबर सुनकर भी चंदा उसकी लाश खोजने नहीं जाती । गाँव के पांच-सात लोग जाकर हरचरण की लाश खोजते हैं । अनमेल विवाह की वजह से चंदा

अपने पति से स्नेह नहीं जताती । हरचरन नामक विकलांग चरित्र को इसलिए भी नवाजा जा सकता है कि वह विकलांगता के बावजूद भी अपनी पत्नी को सुख और चैन से रखने के लिए जंगल में जाकर कड़ी मेहनत करता है ।

'बसन्ती' नामक उपन्यास में अनमेल विवाह की समस्या को उपन्यासकार ने उजागर किया है । प्रस्तुत उपन्यास का बुलाकीराम साठ साल का वृद्ध विकलांग है। एक तो उसकी विकलांगता की वजह से उसे कोई अपनी बेटी देने को तैयार नहीं होता। परंतु उपन्यास का चौधरी बुलाकीराम से पैसे लेकर चौदह साल की बसन्ती को साठ साल के विकलांग व्यक्ती को देता है । ब्याहते समय चौधरी उसे कहता है, ''चौदह बरस की भी नहीं है छोरी, अब चौदहवें में पैर रखा है, और तेरे जैसे के हाथ में दे रहा हूँ। नहीं तो दस आदमी इसके लिए पुछते हैं।''[३०] अत: पैसों के लालच में चौधरी अपनी चौदह साल की बच्ची को साठ साल के बूढ़े को देकर ऋणमुक्त होकर उसका जीवन ध्वस्त करता है ।

३.२.३ अवैध सम्बन्ध :

भारतीय समाज में ही नहीं तो विश्व के सभी देशों में अवैध सम्बन्ध या विवाहबाह्य सम्बन्ध की समस्या अत्यंत गंभीर है । अवैध सम्बन्धों की वजह से अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है । इस सम्बन्धों की वजह से दाम्पत्यों में तनाव बढ़ता जाता है और अंत में परिवार विघटन होता है । इतना ही नहीं तो अवैध सम्बन्धों के कारण कुँआरी माताओं की संख्या में भी वृद्धी होती है । ऐसे सम्बन्धों की वजह से विशेषत: स्त्रियों को शारीरिक और मानसिक पीड़ा भुगतनी पड़ती है । यह एक दु:खद और कष्टदायक स्थिति है । इसमें पति-पत्नी के पारस्पारिक विश्वास, श्रद्धा, प्रतिज्ञा और प्रेम की समाप्ति हो जाती है । परस्पर समझौते की स्थिति भी समाप्त हो जाती है । दोनों के आत्माभिमान को चोट पहुँचती है । दोनों को एक दूजे से अपमानित होने का अहसास होता है । अत: वैवाहिक और पारिवारिक ही नहीं तो मानसिक सम्बन्धों का भी अंत हो जाता है ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में कुछ उपन्यासकारों ने अवैध सम्बन्धों की समस्या को अत्यंत गम्भीरता से उजागर किया है । आम व्यक्ति के जैसे विकलांगों के भी अवैध सम्बन्धों का लेखकों ने अत्यंत सूक्ष्म अंकन किया है । विकलांगों को भी इस पीड़ा को भुगतना पड़ता है । कभी-कभी जीवन साथी पसंद न होने के कारण तो कभी-कभी अपने जीवन साथी

की खामियों के कारण यह समस्या उत्पन्न होती हुई दृष्टिगोचर होती है। विवाह के पश्चात नारी का पर-पुरूष से संबंध कई कारणों से होता है । अगर विवाह से पूर्व उसका किसी से सम्बन्ध नहीं होता, तो विवाह के बाद सम्बन्ध जुड़ने के पीछे कई कारण होते हैं ।

भीष्म साहनी जी ने अवैध सम्बन्ध की समस्या को 'बसन्ती' नामक उपन्यास में व्यक्त किया है । प्रस्तुत उपन्यास का विकलांग बुलाकीराम अपना परिवार शुरू करने के लिए बसन्ती के साथ ब्याह करता है । परन्तु बसन्ती को विकलांग बुलाकीराम पसंद नहीं था । दीनू नामक युवक के साथ बसन्ती के विवाहपूर्व सम्बन्ध थे । इतना ही नहीं तो वह गर्भवती थी । गर्भवती अवस्था में भी बुलाकीराम बसन्ती को पत्नी के रूप में अपनाकर उस बच्चे को स्वयं का नाम देने के लिए तैयार हो जाता है, परन्तु बसन्ती बुलाकीराम का संसार ध्वस्त कर अपने पूर्वप्रेमी के साथ भाग जाती है । इस आघात से बुलाकीराम बहुत दु:खी होता है। इतना ही नहीं तो लोग भी उसका मजाक उड़ाते हैं । उसकी उपेक्षा करते हैं । अत: किसी विकलांग का घर बसाने के बजाए उजाड़ देने में लोग अपनी कामयाबी समझते हैं ।

समाज की क्रूरता को लेखिका ने 'कोरजा' उपन्यास में व्यक्त किया है । सामंतशाही वर्ग के लोग ब्याज से पैसे देकर उन गरीबों पर अहसान तो करते हैं, परन्तु पैसे वापस न मिलने पर स्त्रियों की इज्जत से खेलते हैं । प्रस्तुत उपन्यास की साजो खाला का मकान आर्थिक अभाव की वजह से जुम्मन मामू के पास गिरवी रखा जाता है । ब्याज से दिये हुए पैसे के बदले में जुम्मन साजो खाला के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करता है। नातीन जैसी लड़की से सम्बन्ध बनाकर जुम्मन उसका शारीरिक और मानसिक शोषण करता है । अत: लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास में विकलांग चरित्र की इस समस्या को अत्यंत संवेदनशील होकर व्यक्त किया है।

शिवानी जी द्वारा लिखित उपन्यास 'किशनुली' में लेखिका ने विकलांग व्यक्ति पर किए गए अत्याचार और दुराचार को व्यक्त किया है । मानसिक रूप से विकलांग किशनुली को नि:सन्तान काखी के द्वार पर छोड़ दिया जाता है । डॉ. कुमारी शशिबाला पंजाबी जी का यह कथन - ''पगली एक-दो बार घर छोड़कर चली जाती है । परन्तु दूसरी बार जब चली आती है तो अपना सर्वनाश करके । फिर भी पण्डिताइन उसे रख लेती है उसे लड़का होता है ।''[३१] पण्डिताइन उसे माँ से बढ़कर स्नेह करती है । दिलोजान से उसका खयाल रखती है । उसे नहलाना खिलाना आदि सारे काम करती है । प्रस्तुत उपन्यास का शास्त्री किशनुली को

दुत्काराता हुआ कहता है, ''आज ही पुलिस में खबर कर, इसे थाने में बंद न करवाया तो मेरा नाम परमानन्द पांडे नहीं, भाग बदजात. हडि... हडि...'''[३२] यह क्रूर समाज किसी विकलांग स्त्री की विकलांगता का फायदा उठाकर उसके साथ अवैध सम्बन्ध बनाकर उसे गर्भवती कर छोड़ देता है । कोई उसके भविष्य की चिन्ता नहीं करता । उसे कुत्तों के जैसा दुत्कारता है।

'कैंजा' नामक उपन्यास की कमला मानसिक विकलांग स्त्री है । उसकी माँ जंगल में जाते समय कमला को नन्दी के पास छोड़कर जाती है । नन्दी उसे नहला-धुलाकर अच्छा करती है । उसके लिए अपना कार्डिगन ढूँढने भीतर चली जाती है । उसी समय कमला भाग जाती है। नन्दी उसे दिनभर ढूँढकर अंत में हार जाती है । रूआंसी हो जाती है । उसे चिंता है कि उसकी माँ खेत से लौटेगी तब क्या कहेगी । कमला हर दिन सुरेश भट्ट के बंद मकान के बरामदे में जाकर पैर फैलाकर सो जाती है । धीरूभाई ताई का यह कथन क्रूर समाज की क्रूरता को व्यक्त करता है । ''नित्य अभागी वही जाकर पड़ी रहती थी, एक दिन सुरेश चोरों की तरह ताला खोलकर भीतर चला गया और अब क्या कहूं चेली (बच्ची) आज पुत्रता एकादशी के दिन उस कुपुत्र का पाप कैसे जीभ पर लाऊं ।''[३३] अत: सुरेश विकलांग कमली के साथ अवैध संबंध रखता है । उसकी विकलांगता का फायदा उठाता है । उसके भविष्य की नहीं सोचता । समाज का विकलांग के प्रति किया गया यह क्रूर कृत्य अत्यंत घृणास्पद है ।

हिंदी साहित्य जगत के आँचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणुजी ने 'मैला आंचल' उपन्यास में विकलांगों के प्रति किया गया क्रूर कृत्य इस उपन्यास में व्यक्त किया है। प्रस्तुत उपन्यास की कमला मानसिक रूप से विकलांग है । विकलांग कमला के साथ प्रस्तुत उपन्यास का डॉक्टर अवैध सम्बन्ध रखता है । एक दिन कमला संथाली नाच देखने दिन में तीन बजे जाती है । नाच खत्म होकर शाम हो जाती है । लेकिन डॉक्टर कमला को अपनी बाहों में जकड़कर रखता है । कमला बाहे छुड़ाने की चेष्ट करती है । परंतु निष्फल होती है । उसकी माँ एक दिन अपने पति से कहती है । तुम्हारी पगली बेटी के मुंह मे जो आता है बक देती है । ''तुम्हारी बहकाई हुई बेटी अभी कह रही थी कि डॉक्टर साहेब खुद बेहोस हो जाते हैं।''[३४] अत: गर्भवती होती है । इसलिए परिवार में भी उसकी उपेक्षा की जाती है । उसके पिताजी उसे जान से मारने का प्रयास करते हैं । अत: विकलांग चरित्रों को समाज और परिवार में भी अपने अस्तित्व की पहचान से दूर रखा जाता है ।

३.२.४ बलात्कार :

भारतीय समाज में नहीं तो विश्व भर में बलात्कार की समस्या गंभीर है । अनेक महिलाएँ बलात्कार की शिकार हो जाती है । कभी परिवारवाले तो कभी रिश्तेदार तो कभी समाजवाले स्त्रियों के साथ बलात्कार जैसा दुष्कर्म कर उनकी जिंदगी उजाड़ देते हैं । यहाँ तक की बहरी, गूँगी, पागल और अंध महिलाओं को तक नहीं छोड़ते है । समाज की हर एक स्तर की महिलाओं के साथ ऐसा दुष्कर्म किया जाता है । यदि महिला बलात्कार का विरोध करती है तो उसे सामाजिक कालिख और अपमान का सामना करना पड़ता है । राम आहुजा जी का यह कथन अत्यंत सार्थक है - ''यहाँ तक बहरी और गूंगी पागल और अंधी भिखारिनों को नहीं छोड़ा जाता है ।''[३५] अत: शारीरिक रूप से कमजोर स्त्रियों को तक लोग नहीं बख्शते ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में कुछ साहित्यकारों ने इस समस्या को उठाया है जो विकलांगों को भी भुगतनी पड़ती है । विकलांगता या शारीरिक कमजोरी का फायदा उठाकर स्त्रियों के साथ किया गया दुष्कर्म अत्यंत घिनौना कृत्य है । ऐसे घिनौने कृत्य को उजागर करने का मौलिक कार्य कुछ लेखकों ने किया है । बलात्कार की समस्या के संदर्भ में डॉ. बोडके जी ने एक स्थान पर कहा ''स्त्रियों की असहमति या जबरदस्ती से जब उसके साथ यौन संबंध रखा जाता है, चाहे वह तात्कालिक हो या दीर्घकालीक उसे बलात्कार ही कहा जाता है ।''[३६] अत: स्त्रियों को दंडित करने के लिए अथवा पुरूषों की कामोत्तेजना को मिटाने के लिए यह दुष्कर्म होता है । ऐसे दुष्कर्मों को अनेक साहित्यकारों ने अपने कथा साहित्य में उजागर किया है ।

हिंदी साहित्यकाश की जानी-मानी लेखिका मृदुला गर्ग जी ने 'कठगुलाब' उपन्यास में बलात्कार की समस्या को प्रमुख रूप से उठाया है । शारीरिक दृष्टि से कमजोर युवती को इस समस्या से गुजरना पड़ता है । प्रस्तुत उपन्यास की नायिका स्मिता की आँखें कमजोर है । वह अपने माँ-बाप के देहान्त के बाद दीदी और जीजा के पास रहती है । बाईस साल की स्मिता की पढ़ाई का खर्चा जीजी और जीजा उठाते हैं । उसका जीजा हमेशा उसकी तरफ बुरी दृष्टि से देखता है । आस-पास कोई न देखकर एक बार उसे चुमता है, परंतु वह अपनी बहन को नहीं बताती ताकि उसके रहने का दूसरा कोई ठिकाना नहीं था। वह अनेक बार उसके साथ गंदी हरकते करता रहता है । जब स्मिता जीजा का विरोध करती है तब उल्टा उसे ही बदनाम किया जाता है । वह पत्नी को बताता है कि देख मेरी बहन कहती है, एडमिशन के पैसे नहीं दिये तो

तुम्हें बदनाम करूँगी । तब स्मिता की बहन नमिता उसके गालों पर थप्पड़ मारती है । इस घटना में स्मिता का चश्मा टूट-फूटकर नीचे गिरता है । अत: चश्मे के बिना उसका जीवन एक अंधे के समान था । एक रात वह नरपिशाच जीजा आंखों की कमजोरी का फायदा उठाकर स्मिता पर बलात्कार करता है। उसके हाथ खाट से बांध देता है। सामने आदमकश शीशा रखता है । उसके मुँह में कपड़ा ठूंसकर बंद करता है । जिस्म के कपड़े फाड़-फाड़कर अलग करता है। बदन के हर हिस्से पर थूकता है । वह पलके उपर कर देखने का प्रयास करती है, परन्तु धुँधली प्रतिछाया के बगैर कुछ देख नहीं पाती । लेखिका ने कहा है, 'गनीमत इतनी थी कि बिना चश्मे , वह इतना कम देख पाती थी कि अपने बदन पर ढाया जा रहा कहर उसे धुँधला-धुँधला ही देखा गया था । उसे भोग लेने पर वह एक दबी, धीमी, क्रूर हँसी हँसा था । और गूंगा, बंधा और नंगा छोड़कर बाहर निकल गया था ।''[३७] अत: विवशतावश यह अनाथ युवती घर छोड़कर कानपुर निकल जाती है । इस प्रकार अपने ही रिश्तेदारों द्वारा किया गया दुष्कर्म उसे भुगतना पड़ता है । स्त्रियों के साथ किया गया यह क्रूर व्यवहार अत्यंत घिनौना और लज्जास्पद है । जब की विकलांग स्त्रियाँ भी इससे बच नहीं पाती ।

३.२.५ सामाजिक उपेक्षा :

समाज के किसी भी कोने में विकलांग व्यक्ति पाया जाता है । अत: समाज का विकलांगों के प्रति दायित्त्व और विकलांगों का समाज के प्रति दायित्त्व महत्त्वपूर्ण होता है । परंतु अधिकांश विकलांगों को समाज में उपेक्षित रखा जाता । इसलिए विकलांग व्यक्ति उपेक्षा से मन-ही-मन में टूटने लगता है । सामाजिक उपेक्षा की वजह से विकलांगों के विकास पर बुरा असर पड़ता है । वह मानसिक रूप से अस्वस्थ होता है इसलिए वे विकास का उच्च स्तर नहीं छू पाता । विकलांगों के जीवन की समस्या न तो मानसिक होती है और न ही सामाजिक । उसे विभिन्न समस्याओं से गुजरना पड़ता है । जो समस्या सामाजिक होती है वह किसी-न-किसी रूप से मनोविज्ञान से जुड़ी होती है । गीता अग्रवाल जी ने एक स्थान पर कहा है, ''कोई भी व्यक्ति पूरी तरह से विकलांग नहीं हो पाता । गंभीर से गंभीर विकलांगता के बावजूद प्रत्येक केस मे कुछेक शारीरिक क्षमताएँ तथा विशेष योग्यताएँ विकलांग के साथ होती है ।''[३८] इसलिए विकलांगों की समस्याओं से परिचित होकर उनकी उपेक्षा न करते हुए उन्हें प्रेरित किया जाए तो वे समाज के प्रति अपना दायित्त्व निभाने में सफल हो सकते हैं ।

विकलांगों की समाज में होनेवाली उपेक्षा और अपमान को स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासकारों ने अपनी औपन्यासिक कृतियों में अत्यंत सजगता से स्पष्ट किया है । कुछ लोग विकलांगों के प्रति सहानुभूति जताते हैं, तो कुछ लोग विभिन्न प्रकार के प्रलोभन और लालच दिखाकर उनका फायदा उठाते हुए भी दृष्टिगोचर होते हैं ।

अभिमन्यू अनत जी द्वारा रचित उपन्यास 'एक बीघा प्यार' का हीरा विकलांग है । समाज द्वारा उसकी होनेवाली उपेक्षा को लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्त किया है । उपन्यास का जोगी अपाहिज हीरा को ढकेल देता है । हीरा नीचे गीर पड़ता है और उसके माथे से खून बहता है । फिर भी जोगी उसे लंगड़ा कहकर उसकी उपेक्षा करता है । गाँव के बहुत से लोग हीरा की ओर हैरत से देखते है ं। ताकि वह सकलांगों से भी अधिक कड़ी मेहनत करनेवाला युवक था । हीरा का बैंगन का हरा-भरा खेत जोगिया उजाड़ देता है । हीरा सोचता था - ''बैंगन बेचने से जो पैसा मिलेगा उससे विमला के लिए सोने की दो चुड़ियाँ बनेंगी, मकान ठिक किया जायेगा आदि की स्वर्णिम कल्पना में परिवार आनन्द लेने लगा । तभी जोगिया ने उस खेत को उजाड़ दिया ।''[३९] इस प्रकार क्रूर समाज विकलांगों को शारीरिक पीड़ा देकर उनका घर-परिवार, खेत-खलिहान, उजाड़ देता है । दया और सहानुभूति न जताते हुए जलन और द्वेशभाव से विकलांगों की बरबादी की जाती है । समाज की विकलांगों की ओर देखने की क्रूर दृष्टि को लेखक ने अत्यंत सूक्ष्मता से व्यक्त किया है ।

'लाल पसीना' का अन्धा मदन बस्तियों के लोगों में जागृति निर्माण करता है । वकील पूरी तरह से मदन को सहायता करने का आश्वासन देता है । कुछ ही दिनों में वकील बस्ती में जाकर सरकार द्वारा मजदूरों की जमीन की मान्यता मिलने की सूचना देता है । बस्ती में और भी कुछ सुधार करने का वह आश्वासन देता है । मजदूरी बढ़ाने की भी खबर देता है । मालिक लोग हार-जाते है परन्तु विनम्र बनकर काम निकालना चाहते हैं । लेकिन मजदूर लोग नहीं मानते । ''मदन ने इस वर्ष होली का उत्सव धूमधाम से मनाने की घोषणा की और बाकी बस्तियों को जगाने के लिए प्रस्थान किया ।''[४०] एक अज्ञात स्वामी मजदूरों के संगठन को दृढ़ करता है । मजदूरों की उस पर अटूट श्रद्धा और विश्वास देखकर मालिक स्वामी को गोली से उड़ा देता है । अत: सबकुछ बरबाद हो जाता है । किसन सिंह अपना बेटा मदन के लापता होने से चिंताग्रस्त होता है । सात साल मदन लापता रहता है । गोरे फौजी मदन की आँखों पर

इतना गहरा आघात करते है कि जीवनभर के लिए अन्धत्व भुगतना पड़ता है । बस्ती के लोग जाकर भी जब शिकायत करते हैं तब थानेदार शिकायत करनेवालों को ही दोषी ठहराता है और कहता है, ''जिस समय यह घटना घटी थी सिपाही वहाँ मौजूद था । उसने आँखों देखी बात हमें बताई है।''[४१] अर्थात गोरे मालिक ने थानेदार को अपने पक्ष में कर लिया था । उसे रिश्वत देकर खुश किया था । अत: रिश्वत देकर विकलांगों पर अन्याय किया जाता है । यह क्रूर समाज विकलांगों की उपेक्षा करने के लिए रिश्वत तक लेता है ।

'अग्निबीज' उपन्यास में विकलांग साधो काका गांधाजी के विचारों से प्रभावित है । एक पुलिस अधिकारी के मुंह से गांधीजी को दी गई गाली सुनकर उसका गला दबोच देता है । पुलिस अधिकारी काका के शरीर पर बंदूकों और कुन्दो से बेतहाशा वार करता है । इस आघात से साधो काका की जुबान चली जाती है । उसका भाई ज्वालासिंह कॉंग्रेस नेता से टिकट पाने के लिए काका को पागल करार देता है । विकलांगों को अनेक बार सामाजिक उपेक्षा के साथ पारिवारिक उपेक्षा का भी सामना करना पड़ता है ।

'गांधीजी बोले थे' उपन्यास का मदन अन्धा होने के बाद भी समाज सुधार के लिए अपना संघर्ष जारी रखता है । भले ही वह परोक्ष्य रूप से संघर्ष नहीं कर पाता परन्तु सही-सही दिशा निर्देश कर लोगों को सफलता दिलाने का प्रयास करता है । सीता का पुत्र परकाश में भावी नेता की सम्भावनाएँ देखकर उसे अंग्रेजी और फ्रेंच भाषा सिखाता है । इतना ही नहीं तो वह अपने गाँव के सभी बच्चों को नियमित रूप से स्कूल में भेजकर शिक्षा प्राप्त करने का भी यत्न करता है । गांधीजी के विचारों से प्रभावित होकर प्रवासी भारतीयों को राजनीति में भाग लेने को प्रेरित करता है, परन्तु कोठी के मालिक से मजदूरों में जागृती के संकेत देखकर उनमें भेद उत्पन्न करके उन पर अपना शासन बनाये रखने का प्रयत्न किया जाता है । इस प्रकार क्रूर समाज विकलांगों की सहायता करने के बजाय विरोध करता है । मालिक की ओर से हरखू और नालेताम्बी दोनों भारतीयों को यह जिम्मेदारी सौंपी जाती है । लेकिन मदन, परकाश आदि के कारण मजदूरों की एकता भंग नहीं हो पाती । बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध स्कूल में ही किया जाता है । मदन की बस्ती में शहर के डॉक्टर साकीर सन्देश भिजवाते हैं कि, भारत के एक वकील मोहनदास करमचन्द गांधी आये हुए हैं, कल ताहेर में उनकी बड़ी अच्छी तकरीर हुई और दो दिन बाद नदिया रामपार की बस्ती में उनका भाषण होगा । तब मदन अपनी बस्ती के

३० लोगों के साथ नदिया रामपार रेल्वे स्टेशन पर पहुँच जाता है । तब लोगों ने देखा - ''गांधीजी काले सूट में थे । सफेद कमीज पर सदे रंग की टाई थी । उनके सिर पर एक बारीक सी पगड़ी बंधी थी । नारे गुंज उठे वकील साहब मोहनदास करमचन्द गांधीजी की जय ।''[४२] बस्ती की सेवा करनेवाला तथा बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करनेवाला मदन कहता है - ''जब चाहे कोडे बरस जाते हैं । कोई जरासा भी सिर उठाने का प्रयास करें कि उस पर कुत्ते लपका दिए जाते हैं। आज भी कीड़ों से खद-खद भरे चावल हमें मिल रहे हैं ।''[४३] परकाश जब ग्यारह वर्ष का था तब उसके पिताजी की हत्या की थी और लाश नदी के पास एक जामुन के पेड़ से लटकाई थी । इतना ही नहीं तो शोषण के विरूद्ध आवाज उठानेवाले देवराज को भी कुत्तों से नुचवा दिया था । कुत्ते देवराज की लाश को भी नोचते थे । इस घटना से सभी लोग सहमे-सहमे से रहते थे । डॉ. हेमराज निर्मम जी ने एक स्थान पर कहा है, ''देवराज को कुत्तों से नुचवाकर मरवा देने से पूर्व एक दिन उसे और मदन को पेड़ से बांध दिया गया था। इमली के पेड़ के साथ नंगे बदन बांध कर कोड़े बरसाये थे ।''[४४] अत: समाज की क्रूरता यहां दृष्टिगोचर होती है। शरीर से सकलांग परन्तु मन से विकृत समाज विकलांगों पर अन्याय, अत्याचार करते समय बिल्कुल सोचता नहीं । जो विकलांग व्यक्ति कुछ अच्छा कार्य करता है तब उसे अपमानित कर उपेक्षा की जाती है ।

'जल टूटता हुआ' का सतीश हाथ पर घाव होने से बिस्तर पर ही पड़ा रहता है । पहले तो वह महिप सिंह की गुलामी करता था । पंचायत चुनाव में उसे अनेक यातनाएँ दी जाती है । वह बचपन से ही गाँव की विडम्बना को देखता था वह आजादी के साथ जुड़े हुए सपनों और मूल्यों को विश्लेषित करते हुए कहता है - ''आजादी मिले इतने वर्ष हो गए, किन्तु आज भी यह गाँव सुग्गन तिवारी के रूप में कस्बे जा रहा है, आज भी जमुना भाभी के रूप में... गाँव की माताएँ अपने तन का छल्ला-छल्ला उतारकर बेटी की तन की शोभा बढ़ाने की जगह चौधरी की तिजोरी में दफना रही है ।''[४५] दीन दयाल सतीश का खेत गुरूदीन से धोके से कटवाता है । रघुनाथ और दौलत के झगड़े का फैसला सुनाने के बाद गाँव के लोग सतीश से नाराज हो जाते हैं । फैसले के बाद पेड़ की आड़ में से सतीश की बाह पर छिपकर वार किया जाता है । जिसकी वजह से सारी जिन्दगी सतीश को बिस्तर पर लेट कर गुजरनी पड़ती है ।

वह जन्मभर के लिए विकलांग हो जाता है । अत: क्रूर समाज के द्वारा किसी को विकलांग बनाया जाता है । तो किसी को अपमानित किया जाता है ।

'अन्धे की आँख' के चन्दर को भी विकलांगता की वजह से सामाजिक उपेक्षा भुगतनी पड़ती है । वह अंधत्व के कारण कोई चिज देख नहीं पाता । इसी डर की वजह से वह अपना चलना-फिरना तक बंद कर देता है । कुछ लोग चंदर के पास जाने से भी अटकते है । इस बात से चंदर हमेशा दु:खी रहता है । कोई व्यक्ति उसके पास जाता भी तो उसका दु:ख कुरेदने के बगैर कुछ नहीं करता । चन्दर की माँ की अनुपस्थिती में जीवित प्राणी के नाम पर चिड़ियाँ, चुहों, कीड़े-किड़ौनों के अलावा कभी-कभी बंदर उसके पास जाता था परंतु इन्सानियत के नाते कोई इन्सान कभी उसके पास नहीं जाता । इस क्रूर समाज व्यवस्था के संदर्भ में राजेंद्र कुमार जी ने स्वयं कहा है, ''अनुभव में ऐसा भी आता है कि आदमी जब मर जाता है तो चंदन की चिता सजायी जाती है और विरोधी भी उसकी विशेषताओं का बखान बढ़-चढ़कर करने लगते हैं । लेकिन जीवित अवस्था में देवतातुल्य व्यक्ति को भी घास तक डालना पसंद नहीं करता । उस हालात में परनिंदा की प्रवृत्ति ही लोगों की जीव्हा पर नाचा करती है ।''[४६] लोग स्वयं नशा कर दूसरों को जिन्दगीभर के लिए अपाहिज बनाते हैं । कई विकलांग ऐसे है जो उपेक्षा, अपमान सहकर भी अपनी विकलांगता पर विजय प्राप्त कर सफल हो जाते हैं ।

'अपनी जमीन देखो' की महदेई शादी के बाद एक साल भर में ही गठियाँ की बीमारी से अपाहिज हो जाती है । समाज के कई लोग उसका मजाक उड़ाते हैं । उसकी उपेक्षा करते हैं। महदेई की उपेक्षा करते हुए उपन्यास का भगवन्ता कहता है, ''बस इसलिए इतना अधीर हो उठी है । कहो बिहान जाकर भगवान को लेऊ आए और चुटकी बजाते शादी करा दे ।''[४७] महदेई की विकलांगता की वजह से उसके पति की दूसरी शादी कराने की बात लोग सोचते है। महदेई की शारीरिक और मानसिक पीड़ा को कोई नहीं समझता । प्रस्तुत उपन्यास का दूसरा विकलांग चरित्र मकोइया की लोग खिल्ली उड़ाते हैं । ब्याह को लेकर हमेशा उसे छेड़ते हैं । जैसे - ''क्यों शादी करना कोई बुरी बात है। ठाकुर हो तुम्हें तो साठ साल के बाद भी विवाह करने पर समाज कुछ नहीं कहेगा ।''[४८] अत: पहली पत्नी के होते हुए भी लोग दूसरी शादी के लिए उकसाते हैं । वह अपना दुखड़ा समाज के सामने गाता है । कु.साहब को बचाने के

लिए दी गयी झुठी गवाह पर पछताता है । सामंतशाही वर्ग ऐसी स्त्रियों की विवशता का फायदा उठाते हैं ।

'अनुराधा' उपन्यास में अन्धे माता-पिता का भी चित्रण किया है । जिनको एक बेटी है । वह एक शिक्षिका है । आर्थिक स्थिति बिकट होने से उसका ब्याह नहीं होता । उसका कथन यहाँ प्रस्तुत है - ''यहाँ कहने की बात नहीं है अम्मा । औरत की आबरू उसके लिए बड़ी चीज होती है । पर यहाँ तो यह सब सिखाया जाता है कि नौकरी करना हो तो आबरू को सड़क पर पटक दो।''[४९] इस प्रकार भारतीय समाज में रहनेवाले विकलांगों के लिए मुसीबतों की कमी नहीं है । विकलांगों को आर्थिक विवशतावश अपनी इज्जत तक बेचनी पड़ती है । फिर बेसहारा होकर दर-दर भटकना पड़ता है । अत: किसी-न-किसी रूप में रिश्वत ली जाती है । राम आहूजा जी का यह कथन यहाँ सार्थक जान पड़ता है - ''शारीरिक हिंसा क्रूरता नहीं होती, यानी अनेक मामलों में महिलाओं को वश में करने के लिए प्रलोभन एवं मौखिक दबाव काम में लिये जाते है ।''[५०] इसी तरह प्रस्तुत उपन्यास की विकलांग स्त्री को प्रलोभन में फंसाया जाता है।

'मैला आंचल' का मार्टिन मानसिक रूप से विकलांग है । वह हर एक व्यक्ति को बताता है कि गवर्नमेंट ने एक डिस्पेंसरी का हुक्म दे दिया है, अगले साल खुल जाएगा, परन्तु कोई उस पर भरोसा नहीं करता । अत: लोगों को जब कोई विक्षिप्त व्यक्ति सच्ची बात बताता है तो झुठी लगती है । वे उसका मजाक उड़ाते हैं । प्रस्तुत उपन्यास का सेवादास, नेत्रहीन होते हुए भी मठ की देखभाल बहुत इमानदारी से करता है । यादव टोली का किसनू उसे कहता है, ''अंधा महंत अपने पापों का प्राच्छित कर रहा है । बाबाजी होकर भी रखेलिन रखता है, वह बाबाजी नहीं ।''[५१] महंत एक अबोध लछमी को लाकर उसका पालन-पोषण करता है । लोग उस पर इल्जाम लगाते हैं कि लछमी के साथ महंत नाजायज संबंध रखता है । सुमतिया और सेवादास में झगड़े होते हैं परन्तु कानुनी तौर पर लछमी सेवादास की हो जाती है । इस प्रकार विकलांगों को समाज द्वारा सताया जाता है।

'खंजन नयन' का विकलांग सूरदास भी सामाजिक उपेक्षा से बच नहीं पाता । प्रस्तुत उपन्यास की कंतो को हमेशा सूरदास के साथ देखकर लोग उनकी और भ्रम की दृष्टि से देखते हैं । अनाथ कंतों केवल राह चलते समय सूरदास का हाथ अपने हाथ में थाम लेती थी । परंतु

भजन दूर बैठकर ही सुना करती थी । कंतो समाज के डर से एक बार सूरदास को छोड़कर जाने की बात करती है तब सूरदास कहता है, ''कंतो सखी, न तो मैंने तुझे अपनी मर्जी से बुलाया और न अपनी मर्जी से जाने को कहूंगा । हाँ, यह आवश्य सोचता हूँ कि यदि इस समय तू जाएगी । तो लोग यही कहेंगे कि कलंक से बचने के लिए सुरे ने कंतो का साथ छोड़ दिया है ।''[५२] केवल झुठ प्रचार के कारण ही कोई पापी नहीं हो जाता । अनेक बार दोनों को देखकर अंधा-अंधी की जोड़ी कहकर लोग उपेक्षा कर ताने कसते थे । दोनों को गलत दृष्टि से देखते थे । इतना ही नहीं तो कंतों को सूरदास के साथ देखकर लोग यहा तक कहते थे - ''सूर जैसे सुंदर गोरे युवक के साथ यह काली बनमानुसी जैसे मखमल में सड़े टाट का पैबंद ।''[५३] इतना ही नहीं तो कवि संगीतज्ञ साधक सूरदास को नूर खां का बैल बनाकर कोल्हू चलाने और अकारण चाबुकें खाने के लिए भी बाध्य किया जाता है । नूर खाँ के कोल्हू का बैल बना अंध सूरदास बस्तीभर की औरतों और बच्चों के लिए तमाशा बन जाता है । सब उसकी खिल्ली उड़ाकर उपेक्षा करते हैं । एक दिन दुर्बल विकलांग का नैतिक साहस कायर और क्रूर समाज को आत्मबल की पहचान कर देता है ।

३.२.६ विवाह की समस्या :

विवाह का बंधन समाज के सभी स्त्री-पुरूषों के लिए अत्यावश्यक है । विवाह का बंधन ही सामाजिक व्यवस्था संतुलित करने के लिए आवश्यक भूमिका निभाता है । विवाह से परिवार बसाया जा सकता है । परिवार की वजह से समाजव्यवस्था स्थिर रह सकती है । परिवार और विवाह दोनों परस्पर मिलती जुलती बातें हैं । विवाह एक सामाजिक बंधन है । विवाह बाह्य संबंधों पर नियंत्रण रखने के लिए विवाह को महत्त्व दिया जाता है। संपत्ती के लिए उत्तराधिकारी प्राप्त करने के लिए विवाह महत्त्वपूर्ण माना जाता है । विवाह एकता भाव उत्पन्न करता है । स्त्री-पुरूषों के जीवन को स्थायीत्व दिलाने के लिए महत्त्वपूर्ण विवाह होता है । विवाह की वजह से ही हर एक व्यक्ति को सामाजिक अस्तित्व निर्माण होता है । अविवाहित व्यक्ति की ओर समाज हीन भावना से देखता है । अत: विवाह को सामाजिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है, परंतु विकलांगों के लिए विवाह जैसा पावन बंधन एक बहुत बड़ी समस्या है । क्योंकि विकलांगों के साथ ब्याह करने के लिए कोई तैयार नहीं होता । विकलांगता की वजह से सकलांग व्यक्ति विकलांगों को जल्दी अपनाता नहीं । विकलांगों की वैवाहिक समस्या को कुछ

साहित्यकारों ने अपने साहित्य में अत्यंत सूक्ष्मता से व्यक्त किया है । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में इस समस्या को कुछ उपन्यासकारों ने उजागर किया है ।

राजेंद्र यादव जी द्वारा लिखित उपन्यास 'अनदेखे अनजान पुल' की निन्नी काली कुरूप बदसूरत है । उसे वधू परीक्षा में कई बार फेल होना पड़ता है । उसे अपनी बदसूरती के कारण अनेक बार अपमानित होना पड़ता है । जब वह दिल्ली जाने को तैयार होती है तब वह स्वयं को बहुत कुरूप समझती है । दर्शन उसके साथ आत्मीयता से बाते करता है, परंतु निन्नी अपनी कुरूपता को लेकर आत्मकुण्ठित है । वह जब भी घर से बाहर निकलती है तो उसके पैर डगमगाते हैं । बार-बार सामने अंधेरा आ जाता है । वह सोचती है कि गली की हर खिड़की, झरोखा आँख बन गया है । ये सैंकडो आँखें केवल उसे ही देख रही है । अत: वह हमेशा स्वयं को छिपाकर रखने का प्रयास करती है । देखनेवाले जब उसे अस्वीकृत करते हैं, तब उसका बाहरी व्यक्तित्त्व यानी रंग, रूप का अस्वीकारण होता है । तब वह खूब रोती है और सोचती है कि इस लक्ष्यहीन, अर्थहीन जिन्दगी को समाप्त कर दूँ । उसे बाहर के बच्चे भी चिढ़ाते हैं । ''काली कलूटी बैंगन लूटी भरे बाजार में धम-धम पीटी ।''[५४] ऐसी बात सुनकर उसे स्वयं पर घुस्सा आता है और वह स्वयं को समझाती है । उसकी घुटन उसके भीतर ही कैद रहती है और उसे कुतर-कुतरकर खाती है। उसको यह विश्वास हो गया था कि वह अकेली है । अन्त तक उसे अकेले रहना पड़ता है । उसका कोई नहीं है । उसे परिवार के सभी सदस्यों के प्रति चिड़चिड़हाट हो जाती है । वह किसी से सीधे मुँह बात नहीं करती सभी के प्रति उसके मन में एक झुंझलाहट भरी रहती है । उसे लगता है - ''ये चाहें तो मेरी शादी कर सकते हैं, लेकिन जमकर कोई कोशिश ही नहीं करता । एक से एक कुरूप लड़कियों की शादियाँ होती है । लेकिन यहाँ जैसे किसी को कोई चिंता नहीं । बाबुजी को छुट्टी नहीं है, दादा को पढ़ाई है, चाचा ताऊ नाराज है । सब सही है, लेकिन कोशिश ही नहीं करोगे तो क्या लड़का आसमान से टपकेगा ।''[५५] अत: निन्नी को अपना परिवार शुरू करने की चिन्ता सताती है । उसे एहसास होता है कि वह अकेली है ।

मृदुला गर्ग जी द्वारा लिखित उपन्यास 'अनित्य' की काजल शारीरिक रूप से कुरूप है, परंतु विचारों से प्रखर है । उपयोगिता के आधार पर प्रस्तुत उपन्यास का अविजित उसके साथ संबंध बनाता है । इसलिए उपयोगिता के आधार पर बनाये गए संबंधों को प्रखरता से काजल

तोड़ देती है । डॉ. रमा नवले जी का यह कथन युवती की वैवाहिक समस्या को स्पष्ट करता है। ''प्रखर विचारोंवाली काजल बनर्जी जो दिखने में कुरूप थी, उसका त्याग कर लखनऊ की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी एवं जज सिंघल साहब की बेटी श्यामा से विवाह करता है।''[५६] इस घटना से काजल मन-ही-मन टूट जाती है । अत: इन्सान विकलांग व्यक्ति को जीवनसाथी के रूप में अपनाने को तैयार न होकर उपभोग के लिए तैयार होता है । काजल किसी कांग्रेसी अवसरवादी से संबंध रखना नहीं चाहती । वह अपने साथियों को लेकर जंग का ऐलान करती है । वह भगतसिंह के विचारों से प्रेरित है । इतिहास की प्राध्यापिका के रूप में कुशल है । इस चरित्र के संदर्भ में डॉ. रमा नवले जी का यह कथन, ''सावला रंग चेहरे पर चेचक के दाग, बदसूरत पर भली मेधावी, हँसमुख है ।''[५७] विकलांग स्त्री के सामने विवाह समस्या खड़ी होती है, तब स्त्री-मन से टूटकर किसी विशेष कार्य के लिए अपना जीवन अर्पित करती है । लोग जीवनसाथी का चुनाव करते समय बाहरी सौंदर्य पर ही करते हैं । उसके आंतरिक सौंदर्य को नहीं देखते । मन की सुन्दरता से तन की सुन्दरता को महत्त्व देनेवाला अविजित काजल का प्रणय नहीं स्वीकार करता । दूर से आती काजल की मादक आकृति को देखकर उसका मन हुआ था कि जाली को नोंचकर फेंक दे । बेतहाशा उसकी तरफ दौड़ जाए और उसे बाहों में भर ले । जाली के एक तरफ अविजित तथा दूसरी तरफ काजल । आमने-सामने स्त्री-पुरूष नहीं अविजित और काजल । इतनी बदसूरत काजल पहले कभी नहीं लगी थी । कमजोर पीला चेहरा खुरदरी खाल और गहराई तक गरे चेचक के दाग । सच देखा जाए तो दोनों का मार्ग और वैचारिक स्तर भी एक ही था । परन्तु शरीर को खिलौना समझनेवाली मानसिकता के कारण अविजित उसे स्वीकार नहीं करता।

'कृष्णवेणी' उपन्यास का भास्करण कोढ़ की बीमारी से ग्रस्त है । उसकी यह शारीरिक विकलांगता पारिवारिक समस्या बन जाती है । उसकी प्रेमिका के पिताजी कोढ़ग्रस्त पिताजी के बेटे के साथ ब्याह रचाने के लिए विरोध करते हैं । तब उपन्यास की कथानायिका कहती है, ''कोढ़ तो उसके पिताजी को है, यदि उसे भी होता, तब भी मैं उसे नहीं छोड़ती ।''[५८] वह भास्करण को चिट्ठयाँ भेजती रहती, किन्तु चिट्ठीयाँ भटकती रहती है । बरसों बाद कथानायिका जब भास्करण को एक अँधेरी बैरक में बैठे हुए देखती है तो स्तब्ध हो जाती है । उसके पास ही उसकी बशी पड़ी हुई थी परंतु वह न तो बंशी उठा सकता है और न ही बजा सकता है ।

उसे देखकर कृष्णवेणी की आँखों से आँसू बहते हैं । ''क्योंकि उसके दोनों हाथों की अँगूलियाँ झड़कर दो अधूरी मुट्ठियाँ मात्र रह गई है । होंठविहीन उसका वह चेहरा वीभत्स बन गया है, जैसे कटहल का छिलका । नाक नहीं है - पलकहीन अंगारे सी दो आँखें ही बस दप-दपकर जल रही है । पूरे चेहरे में ।''[५९] अत: कृष्णवेणी जिसके साथ अपना परिवार बसाना चाहती है उसकी वह विकलांग अवस्था देखकर चौंक जाती है । विकलांगों की वैवाहिक समस्या और पारिवारिक समस्या का चित्रण उपन्यासकार ने अत्यंत सूक्ष्मता से किया है ।

आबिद सूरती जी ने विकलांगता की वजह से उत्पन्न हुई विवाह की समस्या का अत्यंत सूक्ष्म चित्रण 'रावण-रेखा' उपन्यास में किया है । प्रस्तुत उपन्यास का रामदीन कोढ़ से विकलांग है । पिताजी के कोढ़ की वजह से बेटी की शादी टूट जाती है । तब पिता पूरी तरह से टूट जाता है । इतना ही नहीं तो पागलों की तरह इधर-उधर दौड़ता रहता है टूटी हुई शादी फिर से जोड़ने के लिए लाखों प्रयास करने के बावजूद भी असफल होता हैं । रामदीन के हाथ का कोढ़ न दिख जाए इसलिए उसका पुत्र शंकर कहता है - ''जब तक बारात लौट नहीं जाती, आप ढोल नहीं बजायेंगे ।''[६०] अत: विकलांगता के कारण रामदीन अपनी खुशी व्यक्त नहीं कर पाता । वह अपनी खुशियाँ नहीं मना सकता । घरवालों को डर इस बात का था कि अगर ढोल बजाते समय रामदीन के हाथों के कोढ़ के चकते लोगों को दिखेंगे तो मुनिया की शादी नहीं हो पायेगी । अंत में वही होता है रामदीन के कोढ़ की खबर वर पक्ष को मिलती है और मुनिया की शादी टूट जाती है । अपनी विकलांगता की वजह से अपनी बेटी की शादी टूट जाने के कारण रामदीन के सपनों पर पानी फेर जाता है । तब वह जिंदगी से निराश होकर दवा-पानी लेना भी बंद करता है । उसे घर छोड़कर बेघर होना पड़ता है ।

३.२.७ व्यसनाधिनता :

व्यसनाधिनता अथवा नशा यह एक बहुत गंभीर समस्या है । नशा करनेवालों को यह समझ में नहीं आता कि इस गलत कार्य का क्या परिणाम होगा । मनुष्य हमेशा अनेक समस्याओं, तनावों, कुण्ठाओं और चिन्ताओं से घिरा रहता है । इन समस्याओं से मुक्त होने के लिए वह नशा करता है । यही नशा धीरे-धीरे उसका व्यसन बन जाता है । यह व्यसनाधीनता व्यक्ति और समाज के लिए हानिकारक है । यह व्यसन मनुष्य के लिए शारीरिक और मानसिक दृष्टि से हानिकारक होता है । नशा का बुरा प्रभाव परिवार पर भी पड़ता है । वीरेंद्र शर्मा जी ने

एक स्थान पर कहा है - ''आदत पड़ जाने के बाद इसे न लेने से व्यक्ति मानसिक तौर पर असंयमित हो जाता है, गहरे अवसाद में डूब जाता है, और हर सम्भव स्तर पर उसे प्राप्त करना चाहता है ।''[६१] नशीली अवस्था में मनुष्य कभी-कभी हिंसात्मक रूप धारण करता है । मनुष्य का नियंत्रण खो जाता है ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में कुछ विकलांग व्यसनाधिन होकर अपनी जिंदगी बरबाद करते है। कुछ उपन्यासकारों ने विकलांगों की व्यसनाधिनता को अत्यंत गंभीर और सूक्ष्मता से व्यक्त किया है ।

'उसका घर' उपन्यास का जॉन शारीरिक रूप से विकलांग है । इसलिए वह घर से बाहर नहीं जा पाता । घर के ही सारे काम करता है । उसकी पत्नी ऐलमा दमे की मरीज थी । वही बाहर का सब काम देखती है । ऐलमा एक स्थान पर कहती है, ''जॉन का एक पैर एक्सीडेन्ट में टूट गया था । इसलिए वह अन्दर ही काम देखते हैं । हम दो ही घर पर है, ईशु एक भी नहीं हुआ ।''[६२] अपने परिवार का निर्वाह करने के लिए जॉन बेकरी चलाता है। वह नशा भी करता है । उसकी पत्नी ही उसके लिए अंगूर की शराब ले जाती है तब वह बेहद खुश होता है । उसका चेहरा प्रसन्नता से खिल उठता है । वह उसे कहता है - ''रात को याद से देना । तुम बहुत अच्छी हो ।''[६३] जॉन शराब पीने की खुशी में अपनी भारी देह को घसीटता-सा गोदामवाले कमरे में जाकर सो जाता है । ऐलमा की सारी जिन्दगी घर का कर्जा चुकाने में बीत जाती है । विकलांगता के बावजूद भी व्यसनाधिन जॉन नशा करना नहीं भूलता।

धर्मवीर भारती जी द्वारा रचित उपन्यास 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' का चमन ठाकुर एक हाथ से विकलांग है । उसका एक हाथ कटा हुआ है । वह एक शराबी है । साबुनसाजी का व्यवसाय कर अपना गुजारा करता है । वह गाँजा भी पीता है । प्रस्तुत उपन्यास का महेसर दलाल उसे रोज नये नोट लाकर देता है । प्रस्तुत उपन्यास का माणिक जब सत्ती से पूछता है तब वह कहती है, ''कल रात को चमन ठाकुर के साथ महेसर दलाल आया । दोनों बड़ी रात तक बैठकर शराब पीते रहे ।''[६४] उपन्यासकार ने विकलांग व्यक्ति की व्यसनाधिनता को प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्त किया है । अत: मनुष्य सकलांग हो अथवा विकलांग नशे से विमुक्त नहीं है। विकलांग भी आम लोगों के जैसे व्यसनाधिनता में डूब जाते हैं ।

३.३ पारिवारिक समस्याएँ :

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज की पारिवारिक समस्याओं ने अत्यंत जटिल रुप धारण किया हैं । प्रगति यात्रा के दौरान जहां तक व्याप्ती जड़ताओं, रुढ़ियों, कुप्रथाओं और पाखण्डों से मुक्त होता गया है वहां पारिवारिक समस्याओं को जकड़ता गया है । परिवार उत्थान और कल्याण के लिए बहुत से समाधान भूमंडलीकरण के कारण उपलब्ध हुए हैं जिसका उपयोग हर एक व्यक्ति के लिए हो रहा हैं। परिवार में सारी चुनौतियाँ मौजूद रहती हैं । जैसे गरीबी, परिवार विघटन, हिंसा, जनसंख्या की बढ़ोत्तरी, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, निर्धनता आदि अनेक समस्याएँ आज के मनुष्य के सामने खड़ी हैं । अपना परिवार सुरक्षित रखने के लिए यह सारी परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में अनेक लेखक तथा लेखिकाओं ने विकलांगों की पारिवारिक समस्याओं का सूक्ष्म चित्रण किया हैं परिवार में विकलांगों की होनेवाली उपेक्षा और अपमान आदि का चित्रण किया हैं । जिसकी वजह से विकलांग व्यक्ति भावनिक रूप से टूट जाता हैं । अत: अपने जीवन के प्रति उदास होता है ।

'अपने-अपने कोणार्क' का सिध्दार्थ, 'अक्षत' का राजदेव, 'उसका घर' का जॉन, 'विकलांग' के राणाजी, 'बसन्ती' का बुलाकीराम, 'कोरजा' की साजो खाला, दीपू, 'रात का रिपोर्टर' की उमा, 'किशनुली', की किशनुली 'कृष्णवेणी' का भास्करण, 'कठगुलाब' की स्मिता, 'कैंजा' की कमला आदि विकलांगों को पारिवारिक समस्याओं से गुजरना पड़ता हैं।

३.३.१ दाम्पत्यगत समस्या :

विवाह के बाद पति-पत्नी में बेबनाव की वजह से दाम्पत्यगत समस्या निर्माण होती हैं । कभी-कभी शंकालू दृष्टी पति-पत्नी में तनाव उत्पन्न करती हैं । विवाहबाहय सम्बन्धों के कारण भी पति-पत्नी के बढ़ते तनाव की स्थिति निर्माण होती हैं । पति-पत्नी के बढ़ते तनाव की वजह से दोनों में अलगाव भी होता हैं । इसलिए बसा-बसाया परिवार भी टूट जाता हैं । पसंद-नापसंद या खूबियाँ-खामियों के कारण भी दाम्पत्यगत समस्या उत्पन्न होती हैं । परिवार बिखर जाता हैं । अनेक बाल-बच्चोंवाले परिवार टूट जाते हैं और नतीजा बच्चों को भुगतना पड़ता हैं।

विकलांगों की दाम्पत्यगत समस्या को कुछ उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में व्यक्त किया है। स्वातंत्र्योत्तर काल में कई उपन्यासों में विकलांगों की दाम्पत्यगत समस्या को अत्यंत सूक्ष्मता से स्पष्ट किया हैं ।

'रात का रिपोर्टर' नामक उपन्यास में उमा मानसिक रूप से विकलांग हैं । पत्नी की विक्षिप्तावस्था के पूर्व ही पति किसी ओर लड़की के साथ अपने प्रेम सम्बन्ध बनाता हैं । इस हादसे से उमा विक्षिप्त हो जाती हैं । उसका पति अपनी प्रेमिका के साथ प्रेम रस में लीन रहता हैं । उमा को महिनों से अस्पताल में रखा जाता हैं उमा कभी अपने पति के घर रहती हैं तो कभी अपने भाई के घर रहती हैं । उसके पति को अपनी गलती का अहसास होने तक समय निकल चुका होता हैं -''पत्नी का असाध्य रोग, अस्पताल, उसकी माँ का बढ़ता हुआ बुढ़ापा, ये सब किसी, दूसरे समय के स्मारक थे ।''[६५] उमा अपने पति को देखने के लिए तरसती हैं ताकि उसका पति सालों तक घर नहीं आता था । उमा अपने पति को देखने के लिए और सच्चाई जानने के लिए उसके दोस्त के घर जाती हैं, कि सही में अपना पति बस्तर गया हैं या नहीं । वह विक्षिप्तावस्था में हिन्दुस्थान के नख्शे पर वह जगह देखने का प्रयास करती हैं जहां उसका पति गया था । इस प्रकार उमा की विकलांगता की वजह से उसके परिवार में दाम्पत्यगत समस्या निर्माण होती हैं । इस समस्या से विकलांग उमा को गुजरना पड़ता हैं ।

'अगामी अतीत' की चंदा का पति अपाहिज है । शादी के तीन-चार साल बाद एक लड़की हुई थी । पति पंद्रह-पंद्रह दिनों तक जंगल में गश्त के लिए चला जाता है, परन्तु एक बार वह वापस लौटता ही नहीं । तब कोई मुसाफिर आकर चंदा को हरचरन के मौत की खबर देता है । परन्तु पति-पत्नी के बीच का संघर्ष ऐसा था कि चंदा अपने पति की लाश ढूंढने नहीं जाती । गांव के ही पांच-सात लोग उसकी लाश ढूंढने जाते हैं । चंदा को भी चलने का अनुरोध करते हैं परन्तु वह नहीं जाती । पति के प्रति लगाव न होने की वजह से वह नहीं जाती । अत: विकलांग हरचरन परिवार और समाज में भी उपेक्षित रहता हैं । उसकी लाश तक घर ले जाने को कोई तैयार नहीं होता । यह विडम्बना कई विकलांगों के बारे में होती हैं । पति के मृत्यु के कुछ ही दीनों बाद चंदा भी मानसिक रुप से विक्षिप्त हो जाती हैं । उसे अपनी इकलौती बेटी का भी खयाल नहीं रहता । पति की मृत्यु के ढाई साल बाद चंदा पागल होकर इधर-उधर भटकती रहती हैं । अंत में मर जाती हैं ।

३.३.२ सन्तानोत्पत्ती की समस्या :

सन्तानोत्तपत्ती यह एक बहुत बड़ी समस्या हैं । जिस प्रकार यह समस्या सकलांगों को भुगतनी पड़ती हैं उसी प्रकार विकलांगों को भी इस समस्या से गुजरना पड़ता हैं । सन्तानोत्तपत्ती के लिए ब्याह कर परिवार बसाना आवश्यक होता हैं । सन्तानोत्पत्ती का सुख सबसे बड़ा सुख माना जाता हैं । उत्तराधिकारी के रुप में अपनी धन-सम्पत्ती की सुरक्षितता के लिए सन्तानोत्पत्ती महत्वपूर्ण होती हैं । परन्तु कुछ लोगों के नसीब में यह सुख नहीं होता । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में इस समस्या का चित्रण कुछ लेखकों ने किया है । शारीरिक कमजोरी की वजह से कुछ लोग यह सुख नहीं प्राप्त कर पाते ।

मेहरून्निसा परवेज जी द्वारा रचित उपन्यास 'उसका घर' में लेखिकाने विकलांग चरित्र की सन्तानोत्पत्ती की समस्या को व्यक्त किया हैं । प्रस्तुत उपन्यास में शारीरिक रुप से विकलांग जॉन विवाह तो करता हैं परन्तु सन्तानोत्पत्ती का सुख उसके नसीब मे नहीं हैं । जॉन का एक पैर एक्सीडेन्ट में टूट जाता है । वह घर से बाहर निकलता तक नहीं । उसकी पत्नी एक स्थान पर अपना दु:ख व्यक्त करती हुई कहती है - ''मुझे हमेशा से इस पर दया आती थी । आज भी मैं खुश हूं । बस एक दु:ख है कि जॉन से कभी मैं सन्तान-सुख प्राप्त नहीं कर सकती ।''[६६] अत: विकलांगों की विभिन्न समस्याओं में सन्तानोत्पत्ती की समस्या को भी लेखिका ने अपने उपन्यास में महत्व दिया हैं ।

३.३.३ पारिवारिक उपेक्षा :

विकलांगों की पारिवारिक स्थिति को जब हम देखते हैं तो अनेक बार यह देखने को मिलता हैं कि जिस प्रकार समाज में विकलांगों की उपेक्षा होती हैं । उससे कही अधिक मात्रा में परिवार के सदस्य भी विकलांगों की उपेक्षा करते हैं । पल-पल उसका अपमान करते है । विकलांगों को समाज में भी और परिवार में भी महत्वपूर्ण स्थान नहीं मिलता । स्वयं के ही परिवार में विकलांगों को उपेक्षा और अपमानित जीवन जीना पड़ता हैं । इसलिए अपनी भावनाओं, आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को बाहरी लोगों से पूरा करना पड़ता हैं । गीता अग्रवाल जी ने विकलांगों के व्यक्तित्व के विकास पर ध्यान केन्द्रित करते हुए कहा है - ''विकलांग के अन्दर विकलांगता के कारण यदि गतिहीनता आ गई तो यह अत्याधिक घातक स्थिति है, चुंकि इसका उसके व्यक्तित्व पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता हैं । संरक्षक लोगों को

चाहिए कि व्यवस्था करा दे वहां इससे भी कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हैं विशिष्ट गाड़ियां, जिनकी सहायता से विकलांग कहीं भी अपनी इच्छा के मुताबिक आ-जा सकता हैं ।''[६७] अत: विकलांगों को किसी के सामने हाथ फैलाने की आवश्यकता नहीं पडेगी । विकलांगों की देखभाल करते समय परिवार के लोग उनपर चिड़कर उनकी उपेक्षा करते है । इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि विकलांगों के व्यक्तिव का विकास वे स्वयं करे और ऐसी उपेक्षा से बच्चे । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में परिवार में होनेवाली विकलांगों की उपेक्षा को व्यक्त करने मे भी अनेक साहित्यकार सफल हुए हैं ।

मार्कण्डेय जी द्वारा रचित 'अग्निबीज' उपन्यास के शारीरिक रूप से विकलांग साधो काका की पारिवारिक उपेक्षा को लेखक ने संवेदनशील होकर व्यक्त किया है । साधो काका का सगा भाई ज्वालासिंह अपने विकलांग भाई को पागल करार देता है । स्वयं काँग्रेसी नेता से टिकट हासिल करता है । वास्तव में साधो काका पागल नहीं है बल्कि एक अच्छे समाज सुधारक और म. गांधी जी के विचारों से प्रभावित होते हैं । विकलांगता की वजह से अर्थात् अपनी जबान चली जाने के कारण स्वयं की बेटी के विवाह की बात तक तय नहीं कर पाते । उनका भाई साधो काका के नाम से एक जाली चिट्ठी भी लखनऊ के नेताओं के पास भिजवा देता है । ''वे बयालिस में लगी सिर की चोट से कभी-कभी बेहोश हो जाते हैं । अब बस जनता की सेवा ही करना चाहते हैं । गवरमिन्टी काम उनके भाई ज्वालासिंह को दे दिया जाए।''[६८] एक बार ज्वाला सिंह के साथ चन्दा बहू का झगड़ा हो जाता है । ज्वाला सिंह अपना फैसला सुनाते हुए कहता है - ''सुनीत इलाहाबाद में पढ़ेगा और साधो की लड़की की तुरंत शादी कर दी जाएगी । एक पागल के घर में सयानी लड़की के रहने का क्या मतलब है ? आखिर एक दिन वह करना तो मुझे ही है ।''[६९] अत: ज्वाला सिंह अपने ही भाई की उपेक्षा और अपमान करता है ताकि भाई विकलांग है । बोल नहीं पाता । स्वयं को उँचा समझकर अपने विकलांग भाई को नीची निगाह से देखता है । साधो काका जिन्दगीभर देश सेवा में लगे रहते हैं । अपनी बेटी की शादी-ब्याह की बात पक्की करने के लिए कही जा भी नहीं सकते । बोलने की कोशिश करते ही भयानक सिर दर्द शुरू होता है, और बेहोश हो जाते हैं । साधो काका की बेटी भी सोचती है कि मैं नहीं रहूँगी तो काका का क्या होगा । ताकि उसकी माँ भी तपेदिक की रोगी है ।

सन् १९८९ में प्रकाशित उपन्यास 'रावण-रेखा' जिसके रचियता आबिद सुरती है । इस उपन्यास का मानसिक विकलांग चरित्र बैजू की पारिवारिक उपेक्षा को अत्यंत सूक्ष्मता से व्यक्त किया है । उसकी पारिवारिक स्थिति और समस्याओं को प्रस्तुत उपन्यास में उजागर किया है । बैजू जब खिलौने के साथ खेलते समय ढोल बजाता है तो उसके पिता को खिलौने के ढोल की आवाज खलने लगती है । वह बैजू पर जोर से चिल्लाकर आवाज बंद करने को कहता है । बैजू की माँ जब बैजू के ब्याह की बात छेड़ती है । तब उसका पिता कहता है - ''शादी-ब्याह की बातें भीड़ में नहीं होती । पैसे पंडित जी ने शंकर को ऐसे घेर रखा था कि किसी को भी करीब फटकने नहीं देते थे । अब मैं क्या करता ? मुनिया का हाथ कैसे मांगता ? और वह भी निठल्ले के लिए ।''[७०] विक्षिप्त बैजू को एक बंदर के पीछे नाचते हुए देखकर बनवारीलाल घुस्से में आग बबूला हो जाता है। वह बंदर को अपने पैरों से कुचलता है तब बैजू की भावनाएँ टूट जाती है । इसलिए वह फूट-फूटकर रोता है । उसकी ट्रेजड़ी थी कि झूठी बातों पर भी वह बहुत जल्दी भरोसा रखता है । अठारह साल की अवस्था में भी पाँच साल के बच्चों के जैसी हरकतें करता है। घरवाले उसकी हरकतों से तंग आकर उसकी उपेक्षा करते हैं । बैजू का पिता उसे बाहर जाने को मना करता है, परंतु जिद्दी बैजू बाहर जाता है । तब उसके पिताजी आगबूबला होकर उस पर टूट पड़ते है । बैजू पर होनेवाला अन्याय और अत्याचार इस वक्तव्य से भी मालूम होता है - ''कल हमने चाबीवाला बंदर मांगा तो गलती से उन्होंने दस-दो जूते मारे, लो । इसमें हैरान होने की क्या बात है, ऐसी गलती तो उनसे हफ्ते में दो-चार बार हो ही जाती है।''[७१] अत: परिवार में विकलांगों पर होनेवाला अन्याय, अत्याचार और कटु व्यवहार का यह एक सशक्त उदाहरण है । स्वयं के बच्चों के साथ गैरों-सा व्यवहार करनेवाले लोग गैरों के प्रति कितना क्रूर व्यवहार करते होंगे । स्नेह और आत्मीयता से व्यवहार करने के बजाय विकलांगों के प्रति गैरों-सा व्यवहार करना अर्थात मृत्यु के द्वार ढकेलने से कम नहीं है ।

श्रीलाल शुक्ल जी द्वारा लिखित उपन्यास 'सूनी घाटी का सूरज' का विकलांग रामचरण की पारिवारिक उपेक्षा को लेखक ने यहाँ व्यक्त किया है । रामचरण को रमन्न (रामनारायण) नामक एक बेटा है । चोरी के इलजाम में रामचरण को जेल की सजा दी जाती है । प्रस्तुत उपन्यास का रामनाथ काका दोनों हाथों से विकलांग है । उसके दोनों हाथ कोल्हू में फंसकर विकलांग हो गए हैं । जब वे अस्पताल में रहते हैं तब उनके पास उनके घर का एक भी

व्यक्ति नहीं रूकता । सब लोग शादी के समारोह में चले जाते हैं । लौटते है तो घर के बड़े ठाकुर रामनाथ पर बिगड़ जाते हैं और कहते हैं ''ये रामनाथ काका भी सिलबिले है । जो काम एक बच्चा भी कर ले जाए, वह तक ये संभाल नहीं पाते । चारा काटने को कहो तो हाथ में गंडासा मार ले । पानी भरने जाएँ तो घड़ा कुएं में गिरा दे । अब कोल्हू में ईख भरने बैठे तो अपने हाथ पिच्ची कर डाले । मैं तो भैया, इसीलिए उन्हें कोई काम नहीं बताता । उनके मन में जो आया, वही करने दिया ।''[७२] आकस्मिक घटना का समाचार सुनकर भी रामनाथ काका के परिवार का एक भी सदस्य जल्दी लौटता नहीं । परिवार का एक भी सदस्य वहां न होने की वजह से रामनाथ काका को अस्पताल पहुँचाने के लिए भी देर हो जाती है । उनके शरीर का रक्त बहकर वे बेहोश हो जाते हैं । इस प्रकार विकलांगों के प्रति गैर जिम्मेवारी का सूक्ष्म चित्रण लेखक ने इस उपन्यास में किया है ।

अमृतलाल नागर जी का उपन्यास 'खंजन नयन' में विकलांग सूरदास की पारिवारिक समस्या का चित्रण आया है । सूरदास को अपने सगे भाईयों के कुचक्र और पिता के अविचारवश घर छोड़कर जाना पड़ता है । वह घर सूरदास के लिए जंगल की आग जैसा दाहक बन जाता है । उसका बड़ा भाई ईर्ष्यावश सूरदास को गाना और काव्य-रचना छोड़ने को कहता है, परंतु सूरदास उसकी बातों में न आकर घर छोड़ देता है । वह जिंदगी भर उस घर में नहीं जाता । उसके घर में उसको प्यार करनेवाली एकमात्र उसकी माँ थी । उसके पिताजी उसे संगीत का ज्ञान तो देते हैं, लेकिन उसे हमेशा मारपीट करते रहते थे । उसके भाई भी हमेशा तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे । अत: परिवार में एक ओर स्नेह तो दूसरी ओर द्वेष मिलता है । सूरदास को परिवार में भले ही द्वेष मिला हो लेकिन कुछ ही दिनों में समाज में सम्मान का पात्र बनता है। धन, सुख, विलास आदि सबकुछ मिलता है । एक स्थान पर लेखक ने कहा है - ''ऐसा अयाचित अगाध स्नेहदान अंधे सूरज को पहले कभी नहीं मिला । घर में एक माँ ही थी जो उसे उतना प्यार देती थी। पिता ने संगीत का ज्ञान तो उत्तम दिया किन्तु मार पीट बहुत की । भाईयों ने भी सदा तिरस्कार किया ।''[७३]

अनेक साहित्यकारों ने विकलांगों के प्रति हुआ अन्याय, अत्याचार और उपेक्षा को अपने उपन्यासों में व्यक्त किया है । कुछ साहित्यकार विकलांगों के प्रति उनके परिवार से हुए अन्याय और उपेक्षा के कारण अस्वस्थ होकर अपने साहित्य में विकलांगों के प्रति सहानुभूति दिखाते हैं।

३.४ शारीरिक समस्याएँ :

विकलांगता के कारण शरीर में असामान्यता आती है । शरीर सामान्य बनाने के लिए अनेक उपाय किये जाते हैं । असफलता के कारण विकलांगों का मन उदास हो जाता है । शारीरिक विकलांगता के कारण विकलांगों को विभिन्न, समाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, वैवाहिक, व्यावसायिक और अन्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है । विकलांग व्यक्ति वस्तुगत रूप से अपनी विकलांगता को जब तक स्वीकार नहीं करता तब तक उसमें भावात्मक असन्तुलन बना रहता है । अत: शरीर से विकलांग व्यक्ति जीवन में आगे बढ़ते समय विभिन्न समस्याओं से गुजरता है । शारीरिक विकलांगता की वजह से कभी-लाटी, कभी मनुष्य तो कभी कृत्रिम अंगों का सहारा विकलांगों को लेना पड़ता है । शारीरिक विकलांगता के कारण मनुष्य के शरीर में खामियाँ निर्माण होती है और व्यक्ति का सौंदर्य खामखाँ कम होता जाता है । शारीरिक विकलांगता के कारण व्यक्ति की कार्यक्षमता भी घटती जाती है, अथवा खत्म हो जाती है। कभी-कभी विकलांगों को पूर्णत: दूसरों पर निर्भर रहना पढ़ता है । शारीरिक और आर्थिक दृष्टि से दूसरों पर निर्भर होने के दु:ख से भी विकलांग व्यक्ति दु:खी हो जाता है। आम व्यक्ति के जैसी स्वयं की, घर की, या परिजनों की हिफाजत नहीं कर पाते ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में अनेक उपन्यासकारों ने विकलांगों की शारीरिक कमियों का चित्रण करते समय उनको होने वाली पीड़ा और वेदना का भी सूक्ष्म चित्रण किया है । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में अनेक विकलांग चरित्र शारीरिक पीड़ा को सहते हुए कामयाबी प्राप्त कर चुके हैं । 'अक्षत' का राजदेव, 'अपने-अपने कोणार्क' का सिद्धार्थ, 'उसका घर' का जॉन, 'विकलांग' का राणा संग्राम, 'बसन्ती' का बुलाकीराम, 'कोरजा' की साजो, 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', का चमन ठाकूर, 'टुण्डा लाट' का सुनील, 'कठगुलाब' की स्मिता, 'एक बिघा प्यार' का हीरा, 'लाल पसीना' का मदन, 'अनित्य' की काजल, 'अंधे की आँख' का चन्दर, 'खंजन नयन' का सूरदास आदि विकलांगों ने अपनी शारीरिक विकलांगता पर मात कर मंजिल हासिल करने का मौलिक कार्य किया है ।

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास में चंद्रकांता जी ने विकलांग चरित्र की शारीरिक समस्या को अत्यंत संवेदनशील होकर व्यक्त किया है । प्रस्तुत उपन्यास का सिद्धार्थ पैर काटने से विकलांग हो जाता है । पैर में सेप्टिक होने से पैर काटना जरूरी हो जाता है । ताकि पूरे पैर

में इंफेक्शन फैलने का डर था । अपने शरीर का एक अंग कट जाना व्यक्ति को कितना मजबूर और दयनीय बना देता है, इसका अनुभव कितना तकलीफ देह होता है। इसका पता इस चरित्र के द्वारा चलता है । वह बेहद दु:खी और परेशान हो जाता है। सिद्धार्थ के शब्दों में, ''मैं हालात से गिरकर शायद हार मान जाता पर नासीरा ने उबारा । अस्पताल में नर्स है नासीरा । अस्पताल के बेड़ पर जखमी, अपाहिज और टूटा हुआ पड़ा था ।''[७४] सिद्धार्थ जब नन्हें मासूम बच्चों के अधजले शव उठाती हुई स्त्रियों और मलबों के ढेर से अपने परिजनों के टुकड़े बीनते लोगों को देखता है तब भगवान को धन्यवाद देता है कि 'अभी मैं जिंदा हूँ' अपाहिज ही सही । अत: स्वयं की शारीरिक पीड़ा को भूलकर दूसरों की पीड़ा और दर्द देखकर विकलांग सिद्धार्थ बहुत दु:खी होता है ।

शिवसागर मिश्र जी द्वारा लिखित उपन्यास 'अक्षत' में शारीरिक दृष्टि से विकलांग चरित्र का चित्रण है । प्रस्तुत उपन्यास में भारत के प्रसिद्ध हिंदी दैनिक के विख्यात सम्पादक राजदेव वायुयान दुर्घटना में विकलांग होते हैं । उनका दाहिना पैर काटा जाता है। वे बैसाखी के सहारे चलने का प्रयास करते हैं । चलते समय कभी-कभी उनका पैर लड़खड़ाता है । ''वे अपना संतुलन कायम नहीं रख सके और उनकी बैसाखी दीवार से जा टकरायी गणीमत यह हुई कि उन्होंने बाएं हाथ से दीवार का सहारा लिया था, अन्यथा वे मुँह के बल जा गिरते ।''[७५] राजदेव का असली पैर काटकर नकली पैर बिठाया जाता है । यह समझते ही उन्हें काफी दु:ख होता है। उन्हें इस दुर्घटना से बहुत आघात पहुँचता है । वे मन-ही-मन सोचते थे कि, ''जो जीवनभर चलता रहा, खटता रहा, वह अर्द्ध पंगु बनकर किस प्रकार कठोर समय का सामना कर पायेगा।''[७६] अत: शारीरिक और मानसिक यंत्रणा से राजदेव आंतरिक वेदना से भर उठते हैं । क्योंकि उनकी पैर की घुटने तक की हड्डी टूट चुकी थी ।

'विकलांग' नामक उपन्यास में वाल्मीकि त्रिपाठी ने विकलांग राजा की शारीरिक अवस्था और समस्या को स्पष्ट किया है । यह ऐतिहासिक उपन्यास होने के कारण उपन्यासकार ने ऐतिहासिक चरित्रों का सहारा लिया है । प्रस्तुत उपन्यास में विकलांग की शारीरिक समस्या का चित्रण किया है । उपन्यास का राणा संग्राम एक युद्ध में विकलांग हो जाता है । विकलांगता की वजह से हर बार बैसाखी का सहारा लेना पड़ता है । वे बैसाखी के सहारे दरबार में पधारते है । परंतु बैसाखी के सहारे मंच पर चढ़ते समय पैर लड़खड़ाते हैं, पैर साथ नहीं देते । उनका एक

हाथ ही नहीं तो पूरा शरीर काँपता है । वे मंच पर पहुँचकर कहते हैं, ''भाईयों आपको इस विजय के लिए बधाई है । आपने इस बार उस शक्ति को पराजित किया है जिसके लिए हमारे पूर्वजों ने अनेक प्रयास किये, परंतु असफल रहे, यह विजय आपकी है ।''[७७] वे अपनी विकलांगता के कारण राणा का आसन छोड़ने का विचार करते हैं । वे अपने साथियों से कहते हैं - ''मैं अपनी स्थिति की वास्तविकता पर प्रकाश डाल रहा हूँ । मैं अब राणा के उपयुक्त नहीं रहा । मेरी एक भुजा और टांग व्यर्थ हो गई है । पूर्व प्रथा के अनुसार कोई भी विकलांग व्यक्ति राणा के पद पर नहीं रह सकता ।''[७८] परंतु उनके साथी इस बात का विरोध करते हैं । वे सभी लोग परम्परा के परिवर्तन पर तुले रहते हैं । दिल्ली का सुलतान पुन:श्च आक्रमण कर अपनी हार का बदला लेने के लिए युद्ध करता है परंतु फिर से हार जाता है । अत: एक ही भुजा से सासांरिक मायामोह छोड़कर युद्ध में रत राणाजी ने विजय का डंका बजाया । स्वयं विकलांग होते हुए भी युद्ध में सैनिकों का प्रतिदिन खयाल कर उनका निरीक्षण करते थे । राणा जी जब घायल रणांगण में गिर पड़ते है, तब उनके साथी उन्हें उठाकर लाते हैं तब राणाजी कहते हैं, ''तुम मुझे रणांगण से क्यों उठा लाये ? मुझे वही क्यों न मर जाने दिया?''[७९] अत: अपनी शारीरिक पीड़ा को सहते हुए रणांगन नहीं छोड़ना चाहते ताकि उन्हें चिंता थी अपने सैनिकों की और युद्ध की । इसलिए वे रणांगन में ही मौत उचित समझते है।

हिंदी साहित्य जगत की प्रख्यात लेखिका दीप्ति खण्डेलवाल जी का उपन्यास 'प्रतिध्वनियाँ में लेखिका ने एक विकलांग चरित्र की शारीरिक समस्या को व्यक्त किया है। प्रस्तुत उपन्यास का पीलू शरीर से पूरा अष्टावक्र और गूँगा भी है । वह काम मांगने के लिए उपन्यास के कथानायक के पास जाता है । तब कथानायक को ऐसा लगता है कि वह किसी काम का नहीं है । लेकिन उसने बनाई हुई चाय पीने पर उपन्यास का नायक उसे अपने पास रखने को तैयार होता है । पीलू अपने मालिक का दर्द और तड़प देखकर भयभीत हो जाता है और त्रासदी का भाव भी उसके चेहरे पर जम जाता है । उसके मालिक के शब्दों में ''मैंने पीलू के मुख पर भय और त्रास के वे भाव देखे थे जिसे उसका गूंगापन, जबानवालों से अधिक मुखर कर रहा था । वह मेरे निकट आया था, और फिर कांपता-सा बाहर दौड़ गया था ।''[८०] अत: वह विकलांगता के कारण भले ही कुछ बोल नहीं पाता परंतु अपने मालिक की पीड़ा और दर्द देखकर बेचैन होता है । अस्पताल ले जाने के लिए दौड़-धूप करता है ।

'सूरज का सातवाँ घोड़ा' उपन्यास में धर्मवीर भारती जी ने शारीरिक रूप से विकलांग चरित्र की शारीरिक समस्या को व्यक्त किया है । प्रस्तुत उपन्यास की मँझली बहन दोनों पैरों से विकलांग है । उसके दोनों पाँवों की हड्डियाँ बचपन से ही खराब हो गयी है । वह एक ही कोने में बैठी रहती है अथवा आँगनभर घिसल-घिसलकर सभी भाई-बहनों को गालियाँ देती रहती है। उपन्यासकार ने बीमारी ग्रस्त अथवा विकलांगों को सचेत किया है - ''खुली हवा में घूमने और सूर्यास्त के पहले खाना खाने से सभी शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ शान्त हो जाती है ।''[८१] प्रस्तुत उपन्यास का चमन ठाकुर जो एक हाथ से विकलांग है । उसका एक हाथ कटा हुआ है। फिर भी वह जीवन-यापन के लिए साबुनसाजी का व्यवसाय करता है । वह काम करते समय शारीरिक तकलीफ को सहता है ।

जगदीशचंद्र जी द्वारा रचित उपन्यास 'टुण्डा लाट' में शारीरिक दृष्टि से विकलांग चरित्र का चित्रण है । कैप्टन सुनील कपूर रेजीमेंटल की लड़ाई में घायल हो जाता है । उसका दायां हाथ और बायां पाँव विकलांग होता है । हाथ और पैर की हड्डियाँ टूट जाती है। स्वयं उसी के शब्दों में ''मुझे ऐसा लगता है कि मेरा दायाँ हाथ उड़ गया है। बहुत दर्द और जलन हो रही है। और बायें पाँव में शायद मोच आ गयी है या हड्डी टूट गयी है।''[८२] सुनील विकलांगता के बावजूद भी लड़खड़ाते पैरों से चलने का प्रयास करता है, किंतु चल नहीं पाता । वह कुछ समय तक बेहाल असहाय पड़ा रहता है । उसके शरीर में काँटे चुभने लगते हैं । वह बायें हाथ से जमीन को टटोलता हुआ अहिस्ता-अहिस्ता रेंगता रहता है, किंतु एकदम बेहोश हो जाता है। सुनील वायलीन सीखना चाहता था। इसलिए उसने इंस्ट्रुमेंटल म्यूजिक में एडमिशन लेता है । परंतु बीच में ही उसे युद्ध के लिए जाना पड़ता है। उधर ही युद्ध के दौरान उसका दाहिना हाथ बेकार हो जाता है । इस संदर्भ में डॉ. कैलाशनाथ पाण्डेय जी का कथन है, ''युद्ध के दौरान गम्भीर रूप से सुनील घायल हो जाता है । उसका दाहिना हाथ बेकार घोषित कर दिया जाता है। जिससे पुन: सैन्य जीवन के योग्य नहीं रह पाता ।''[८३] वह पहले सेना में कैप्टन था । परंतु दो साल के लिए उसका नाम रिजर्व लिस्ट पर रखा था । अचानक मिली हुई तार की वजह से उसे लड़ाई के लिए जाना पड़ता है । वह उस लड़ाई में बच जाता है । परंतु जिंदगीभर के लिए अपाहिज हो जाता है । उसे अपना एक हाथ गँवाना पड़ता है । अत: विकलांगता के कारण

उसका वायलिनिस्ट बनने का सपना भी अधूरा रह जाता है । इसलिए वह शारीरिक और मानसिक रूप से टूट जाता है ।

हिंदी साहित्य जगत की जानी-मानी लेखिका शिवानी जी द्वारा रचित उपन्यास 'कृष्णकली' में कुण्ठाग्रस्त पार्वती की शारीरिक पीड़ा को व्यक्त किया है । विकलांग पार्वती के संदर्भ में डॉ. कृष्णा श्रीवास्तव जी ने कहा है, ''कली असाध्य कुष्ठरोग से पीड़ित माता पार्वती तथा पिता असदुला की सन्तान है ।''[८४] महाकुत्सित रोग से उसका चेहरा विकृत हो चुका था । असह्य दु:ख की असंख्य झुर्रियाँ उसके चेहरे पर दिखाई देती थी । मानो किसी क्रूर हृदयहीन आक्रमणकारी शत्रु की भाँति महारोग ने सौंदर्य दुर्ग की धज्जियाँ उड़ाई हो । उसके हाथ पैर के अंगूठों पर रोग ने कुठाराघात किया था । प्रस्तुत उपन्यास की रोजी ने कली को एक स्थान पर कहा है, ''तुमने बाईबिल पढ़ी है ना पन्ना ? उन दस कुष्ठ रोगियों की कथा याद है जिन्हें ईसू ने अपने दिव्य स्पर्श से रोगमुक्त कर दिया था ।''[८५] इस प्रकार कुष्ठरोग से विकलांग चरित्र की समस्या को व्यक्त किया है । उसी प्रकार प्रस्तुत उपन्यास की सूजन शारीरिक दृष्टि से विकलांग है । लेखिका ने उसकी शारीरिक समस्या को व्यक्त किया है । वह बचपन में ही मोटर के नीचे दब जाने से उसकी पूरी टाँग कट गई थी । वह अपनी लकड़ी की टाँग को बैसाखी के बल घसीटती हुई बहुत तेजी से चलती है । देखनेवाले भी आश्चर्यान्वित हो जाते हैं। वह लौरीन से कहती है, ''मेरी यह टाँग देखती है ना ? यही तो आण्टी की सोने के अण्डे देनेवाली बदख है । देखा ।''[८६] वह अपनी निर्जीव सी टाँग में लगी अदृश्य अर्गला खोलकर रख देती है । वह बैसाखी पटकाकर बैठ जाती है । अत: लेखिकाने विकलांग चरित्रों की शारीरिक पीड़ा को अत्यंत सूक्ष्मता से व्यक्त किया है ।

हिंदी साहित्य जगत की विख्यात लेखिका मृदुला गर्ग जी द्वारा रचित उपन्यास 'कठगुलाब' में स्मिता नामक युवती की विकलांग समस्या को व्यक्त किया है । स्मिता की बीस साल की अवस्था में ही आँखों की क्षमता कमजोर है । वह चश्मे के बिना कुछ भी देख नहीं पाती । स्मिता के संदर्भ में लेखिका ने कहा है ''चश्मे के बगैर एक भी दिन काटना अन्धे कुएँ में गिरने की तरह है ।''[८७] बिना चश्मे के वह कहीं नही जा पाती । रात के अंधेरे में उसका जीजा उसके साथ दुष्कर्म करता है । लेकिन चष्मा न होने के कारण वह उसका स्पष्ट चेहरा तक नहीं देख पाती । अत: उसको अपनी आँखों की कमजोर क्षमता की वजह से अनेक समस्याओं

से गुजरना पड़ता है । उसी के शब्दों में ''पर मैं तो तेज रोशनी के नीचे अन्धी हो जाती हूँ । सब कुछ तहस -नहस कर डालने का बलबला जोर मारने लगता है । न देख पाने की मैं अभ्यस्त हूँ, उस पर मुझे गुस्सा नही आता । अन्धेपन पर क्रोध नहीं आता, क्रोध से अन्धापन आता है ।''[८८] प्रस्तुत उपन्यास की नमिता का पति भी लकवे की बीमारी से शारीरिक रूप से विकलांग हो जाता है । उसके घर की नौकरानी नर्मदा उसकी सेवा सुश्रूषा करती है । उसका दायाँ अंग पूरी तरह से लुंज-पुंज हो जाता है । दवाई, मालिस के चलते, लाठी के सहारे चलने का प्रयास करता है । परंतु फिरसे दूसरी बार लकवा पड़ता है । ''दुबारा लकवा पड़ा । इस बार बाएँ अंग पे । वह तो जो पड़ा सो पड़ा । पर हार बखत बकने झींकनेवाले आदमी की जुबान भी बन्द हो गयी।''[८९] नर्मदा को स्कूल की नौकरी छोड़कर उसकी सुश्रूषा करनी पड़ती है । जयश्री शिंदे ने एक स्थान पर कहा है, ''नर्मदा नमिता के अपाहिज पति की सेवा, उनके दो बच्चों नीरजा और प्रदीप की सारी जिम्मेदारियाँ बखूबी निभाती है ।''[९०] अत: विकलांगता के कारण उसको पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है । स्वयं कुछ नहीं कर पाता । लेकिन स्वभाव से ही अडियल है । डॉ. रमा नवले जी ने एक स्थान पर कहा है - ''बीस साल पहले स्मिता पर उसके ही जीजा ने बलात्कार किया था । बलात्कार करनेवाला कौन ? इसके प्रति स्मिता के मन में भ्रम है ।''[९१]

अभिमन्यु अनत जी द्वारा लिखित 'एक बीघा प्यार' उपन्यास में लेखक ने शारीरिक रूप से विकलांग हीरा की शारीरिक पीड़ा को अत्यंत संवेदनशीलता से व्यक्त किया है। प्रस्तुत उपन्यास का हीरा लकवे का शिकार हो जाता हैं । अपने शक्तिहीन पैरों के बावजूद भी अच्छे-खासे लोगों से भी अधिक मेहनत करता हैं । वह बैसाखी के सहारे चलता है । बैसाखी के सहारे चलते हुए भी अपने भाग्य से लड़ता रहता है । वह एक जगह पर कहता है, ''मुझे लकड़ी के इस अवलम्ब की कोई आवश्यकता नहीं मैं सभी लोगों की तरह जीना चाहता हूँ, अपने खुद के पैरों पर खड़े होकर।''[९२] अत: वह अपनी बैसाखी फेंककर लंगड़ाते हुए कंदे पर कुदाली लेकर खेतों की ओर चला जाता है । वह अपाहिज होते हुए भी सकलांगों से भी अधिक अच्छा काम करता है । अपने भाई-बहन को पढ़ने के लिए प्रेरित करता है । वह अपने भाई सोम को खेत में काम करते हुए देखकर कहता है, ''क्या हालत बना रखी है अपनी कल से सीधे कालिज जाना । खेतों के काम तुमसे नहीं होंगे ।''[९३] जी तोड़ मेहनत करता है । उतना

ही वह खेती के प्रति स्नेह और आदर रखता है । वह एक स्थान पर कहता है - ''खेतों में हरियाली लाने के लिए आदमी का अपना हृदय हरा होना चाहिए।''[९४] वह पूरी उम्मिद और आत्मविश्वास के साथ काम करता है । अपने हरे-भरे खेतों को देखकर मन-ही-मन प्रफुल्लित होता है । विकलांग अवस्था में ही वह जोगी को गिरने से संभालता है ।

सन् १९७७ में प्रकाशित उपन्यास 'लाल पसीना' अभिमन्यू अनत जी द्वारा रचित भारतीय मजदूरों की संघर्ष गाथा है । प्रस्तुत उपन्यास के दूसरे भाग का कथानायक मदन शारीरिक रूप से विकलांग है । वह दोनों आँखों से अन्ध है । बस्ती के मजदूरों की तूफान से झोपड़ियाँ नष्ट हो जाती है । उन लोगों पर भूखों रहने की नौबत आती है । प्रस्तुत उपन्यास का विवेक मालिक की अन्न की कोठरी लूटने का यत्न करता है । और पकड़ा जाता है । मदन उसे छूड़ाने जाता है। तो उसकी इतनी पीटाई की जाती है कि वह अन्धा होता है । डॉ. हेमराज निर्मम जी ने कहा है, ''मदन की पिटाई करवाकर जब गोरे मालिक ने उसकी आँखों पर ऐसे जख्म करवा दिये कि वह जीवनभर के लिए, अन्धा हो गया, तो बस्ती के पांच आदमी थाने में शिकायत लिखवाने गए ।''[९५] अत: किसी अच्छे व्यक्ति को मामूली गलती की वजह से इन्सान की कुछ तमा न करते हुए क्रूरता से मारकर जिंदगीभर के लिए उसे विकलांग किया जाता है । ऐसा कार्य इन्सान नहीं तो हैवान ही कर सकता है।

कमलेश्वर जी द्वारा रचित उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में विकलांग चरित्र की शारीरिक समस्याओं को व्यक्त किया है । प्रस्तुत उपन्यास में औरंगजेब का सबसे विश्वस्त व्यक्ति वधिक नजर कुलीबेग कुबड़ा है । सिपिह शिकोहर को उसके बाप से अलग करने का आदेश पाते ही तुरन्त वह जाकर सिपिह शिकोहर को उसके बाप से अलग करके उसका सिर धड़ से अलग करके औरंगजबे के सामने रखता है । अपनी विकलांगता के बावजूद भी विकलांगता से होनेवाली पीड़ा को सहते हुए अपने राजा के खातीर धीरज और हिम्मत से कार्य सफल करता है । उपन्यास के अंत में अंधे कबीर का भी चरित्र पाया जाता है । डॉ. धीरज भाई वनकर की किताब 'कमलेश्वर का कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ' में इस चरित्र का संकेत मिलता है । ''उपन्यास का पात्र अंधा कबीर अन्त में एकतारा उठाकर गाने लगता है । वैष्णव जन तो तेणे कहिए जे पीर पराई जाने रे । तो अदीब के यह कहने पर की तुम कहाँ जा रहे हो ? तो अंधा कबीर कहता है कि मैं वृक्ष लगाऊँगा । हाँ बोधि वृक्ष... मेरे इस झोले में उसी का पौधा

है।''[९६] अत: विकलांग व्यक्ति अपनी पीड़ा और समस्या को भूलकर समाजहीत के लिए अपना जीवन समर्पित करता है ।

'अग्निबीज' उपन्यास का विकलांग चरित्र साधो काका की शारीरिक वेदना को लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्त किया है । एक घटना की वजह से वह गूंगा हो जाता है। एक पुलिस अधिकारी के द्वारा सुनी हुई भद्दी गाली के कारण साधो काका उसका गला झपटकर दबोच देता है । परंतु पुलिस अधिकारी काका के शरीर पर बन्दूक के कून्दों से बेतरह वार करता है । जिससे उनके कनपट्टियों के उपर की सिर खुल जाती है । बेहोश अवस्था में ही उन्हें अस्पताल पहुँचाया जाता है । धीरे-धीरे चेतना तो वापस आती है परन्तु जुबान मारी जाती है । लेखक ने एक स्थान पर काका की शारीरिक पीड़ा को व्यक्त किया है - ''आज भी जब कभी देश की हालात पर बात होती थी, गांधी जी का नाम आता था, अथवा कोई सभा होती थी, तब जरा सा बोलने की कोशिश करते ही उनकी आँखों से आँसू बहने लगते थे । पलकें स्थिर हो जाती थी और सिर की पीड़ा से वे हप्तों तड़पते रहते थे ।''[९७]

हिंदी साहित्य जगत की जानी-मानी लेखिका चित्रा मुद्गल जी द्वारा रचित उपन्यास 'आवां' व्यास सम्मान से सम्मानित है । प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने शारीरिक रूप से विकलांग देवीशंकर पांडे की शारीरिक समस्या का चित्रण किया है । देवीशंकर पांडे लकवाग्रस्त है । इस विकलांग अवस्था के कारण हमेशा के लिए बिस्तर पर पड़े हुए हैं । वे पूर्णत: दूसरों पर निर्भर है । उनके शरीर का दाहिना अंग पूरी तरह से लकवे के कारण लूला पड़ गया है । वे स्वयं अपना एक भी काम नहीं कर सकते । एक स्थान पर कहा है - ''उन्हें नहलाना तामझाम भरा ही नहीं, कष्ट साध्य प्रक्रिया है । स्नानघर में कुरसी रखकर सहारे से उस पर बिठा उन्हें शिशु की-सी सावधानी और सतर्कता के साथ नहलाना पड़ता है । देह का निचला हिस्सा वे स्वयं साफ कर सकें, इसकी सुविधा के लिए निकट ही स्टूल पर पानी से भरी बाल्टी, मग, साबुदानी रखना होता है । ताकि किसी चीज के लिए उन्हे ंविशेष प्रयत्न न करना पड़े ।''[९८] वे अपना शरीर बिना सहारे के घसीट भी नहीं सकते थे । अत: वे पूरी तरह से असमर्थ थे । अपनी लड़की जब नि:संकोच भाव से उनकी साफ-सफाई करती है, तब वे लाचारी का अनुभव करते हैं। बाबूजी के सारे काम काज उनकी लड़की को ही निपटाने पड़ते हैं । डॉ. वसाणी कृष्णावंती जी ने कहा है - ''आमरण अनशन पर बैठे नमिता के पिताजी पर जानलेवा हमला

होता है और कोई हत्यारा उनकी पीठ में छुरी भोंक उन्हें आसन्न रूप से घायल कर देता है । प्राण तो बच जाते हैं पर वे पक्षाघात से अस्वस्थ हो अपाहिज बनकर बिस्तर पर पड़े रहने के लिए विवश हो जाते हैं।''[९९] पिताजी की दवा और लकवा ग्रस्त देह की मालिश करना आदि सभी काम नमिता को करने पड़ते हैं । बाबूजी बोल नहीं पाते इसलिए स्लेट पर लिखते हैं - नमी ! सुनंदा तुम्हारी सगी बहन थी । अत: लकवे की बीमारी मस्तिष्क के कलपुर्जो की असमर्थता ही है। इसलिए बाबूजी को कोई बात याद नहीं रहती है । उनकी दाढ़ी तक दूसरों को ही छिलनी पड़ती है । ''लकवे के चलते ओठों के तिरछिया जाने से ठुड्डी एक ओर से पिचक गई महसूस हो रही । काया का हिसाब-किताब ही बिगड़ गया ।''[१००] इकहरी देहयष्टि के बावजूद भी उनके व्यक्तित्व के रोबीलेपन ने कहीं कोई खोट नहीं खाई थी । सदैव चमचमाता, चौड़ा ललाट ऐसा प्रतीत होता मानो बालों की बजाय तेल चुपड़ी हथेली माथे पर फिरा ली गई हो । परंतु पाण्डे की तबियत अचानक अधिक खराब होने की वजह से बाँबे अस्पताल में भर्ती किया जाता है, किंतु कोई इलाज न हो पाने के कारण उनकी मौत हो जाती है ।

रामदरश मिश्र जी का लोकप्रिय उपन्यास 'जल टूटता हुआ' का सतीश शारीरिक रूप से विकलांग है । उसके हाथ का घाव जल्दी से भर नहीं पाता । वह जैसा का वैसा ही रह जाता है। कुछ ही दिनों में उसके घाव का दर्द बढ़ जाता है । वह देहाती इलाज कर खाट पर लेटा रहता है । लेकिन सतीश को स्वयं की नहीं बल्कि गाँव की चिंता सताती है। गाँव का बांध जब टूट जाता है, तब वह कहता है - ''ठीक है जग्गू, मैं तो भोग रहा हूँ, वह भोग रहा हूँ लेकिन चिंता इस बात की है, कि गाँव का क्या होगा ? क्या इसी गाँव की कल्पना गांधीजी ने की थी? हम, तुम, आज है कल नहीं रहेंगे, लेकिन इस गाँव का क्या होगा ? ऐसे ही अनेक गाँवों का क्या होगा?''[१०१] सतीश के हाथ का दर्द बढ़ता ही जाता है। उसकी हालत कमजोर हो जाती है । सतीश के संदर्भ में यह कथन अत्यंत सही प्रतीत होता है । ''सतीश संवेदनशील और समय आने पर परिवर्तनकारी शक्तियों का साथ देनेवाला है ।''[१०२] इसी उपन्यास का दूसरा एक विकलांग चरित्र बनवारी बाबा है । वह लकवा ग्रस्त है । वह शारीरिक दर्द से तड़पता रहता हैं । रामदरश मिश्र जी ने इस चरित्र के सन्दर्भ में प्रस्तुत विधान से सिध्द किया है कि बाबा बनवारी विकलांगता के कारण बहुत परेशान हैं - ''वे लंगड़े हो गए थे । यह शायद लकवा था ।''[१०३] विकलांगता के बावजूद भी हाथों के बल वह घिसटते-घिसटते आस-

पास के दरवाजों पर जाकर स्वयं को स्वस्थ महसूस करते हैं । लेकिन इस हालत में भी वे स्थिर नहीं रहते । उनकी वाणी भी काबु में नहीं रह पाति । खाने-पीने के लिए जोर-जोर से चिखते हैं। असह्य वेदना से वे कभी-कभी रो भी पड़ते हैं । आँखों की कमजोरी से वे कभी-कभी गाय-बैलों से भी टकराते हैं । प्रस्तुत उपन्यास का बंशी भी शारीरिक रूप से विकलांग हैं । उसका एक हाथ काम करते समय मशीन में कट जाता हैं । आपरेशन करते समय बाई बांह काट कर अलग की जाती है । बेहोश पड़ा हुआ बंसी होश में आता है, ''बंसी को होश आया तो अपनी कटी हुई बांह देखकर फफक कर रो पड़ा... अब क्या होगा भगवान! अब कैसे गाड़ी चलेगी?''[१०४] अत: विकलांगता के कारण अपनी पीड़ा को सहते हुए मनुष्य हर हाल में जीना चाहता हैं । शारीरिक दर्द उसे कहीं का नहीं छोड़ता परन्तु उसकी जिजीविषा देखकर पाठक का हृदय बेहद दु:खी होता हैं ।

राजेन्द्र कुमार रस्तोगी द्वारा रचित उपन्यास 'अन्धें की आँख' का प्रमुख चरित्र चन्दर शारीरिक रूप से विकलांग हैं । उसकी शारीरिक स्थिति ऐसी हैं कि उसको नित्यकर्म के लिए भी दूसरों का सहारा लेना पड़ता हैं । उसकी माँ एक हाथ से कंधा और दूसरे हाथ से चन्दर का हाथ पकड़कर नित्य कर्म के लिए ले जाती है और वापस उसके निश्चित जगह पर ले जाती हैं। वह अपने पुत्र की चिंता को व्यक्त करती हुई कहती है - ''मेरे पीछे दीवरे कब तक टटोल लोगे ?''[१०५] गहन अवसाद में वह अपना जीवन-यापन करता रहता हैं । वह चलते समय कई बार लुड़कता-गिरता बाल-बाल बच जाता है । उसका समूचा अस्तित्व घोरतम तिमिर के जैसा था । वह जन्मजात अन्धा नहीं था । उसने यह सुन्दर संसार अपनी आँखों से देखा था । परन्तु अंधत्व आने के कारण उसका अस्तित्व अंधकार में डूब गया था । चन्दर को सच बोलने का फल इस रूप में अर्थात् अन्धत्व के रूप में भुगतना पड़ता हैं । पिलिया की बंद चोट ने चन्दर को काफी समय के लिए अपाहिज कर दिया था । सरकारी अस्पताल में इलाज से कुछ फायदा न होने के कारण अनेक घरेलू इलाज भी किये थे । विकलांगता के कारण दूसरों पर निर्भर था । वह अपनी शारीरिक व्याधियों की ओर कभी ध्यान नहीं देता था । परन्तु उसका वर्तमान का समूचा अस्तित्व ही कमजोर बनता हैं । भौतिक जगत का होना उसके लिए न के बराबर था । वह स्वयं को हमेशा कोसता रहता हैं । कहता है- ''गंधी नाली में तड़पता घायल किट भी मृत्यू से बचने की चेष्टा करता है ... मुझमें और उसमें क्या अंतर है ?... अन्धा होने के नाते क्या मैं

उससे बदत्तर नहीं हूँ ।''[१०६] इस प्रकार वह अनेक समस्याओं का सामना करता हुआ अपना जीवन व्यतित करने की कोशिश करता रहता हैं । अनेक समस्याओं के बावजूद भी संगीत क्षेत्र में अपनी कामयाबी की सफलता सिध्द कर दिखाता हैं । वह शरीर से अत्यंत त्रस्त और हृदय से व्यथित रहने के बाद भी भ्रांति-निवारण करना चाहता हैं । अत: चन्दर में एक सशक्त पुरूष या पुरूष शौर्य में समाहित पुरूषोचित-सौन्दर्य भी झलक पड़ता हैं । अनेक पीड़ाओं को सहते हुए उसका जीवन अत्यंत आहत होता हैं ।

'मैला आंचल' इस उपन्यास का अंध महंथ भले ही शारीरिक दृष्टि से विकलांग हैं परन्तु जब वह किसी व्यक्ति को पकड़ता हैं तो उसके हाथों में मगरमच्छ का बल आ जाता हैं । अंधत्व के बावजूद भी उसकी पकड लाख जतन करने पर भी मुट्ठी टस-से-मस नहीं होती । उसकी मृत्यु के पश्चात लोग कहते है - ''महंथ साहेब सिध्द पुरूष थे । इच्छा-मृत्यु हुई है । रात को बैठकर, गाँव के बूढ़े-बच्चों को खिलाकर आए और रात में ही चोला बदल लिए । दुनिया में ऐसी मरनी सबों को नसीब नहीं होती । गियानी महात्मा थे ।''[१०७] नेत्रहीनता के कारण उनको अनेक प्रकार की शारीरिक पीड़ा भुगतनी पड़ती हैं । इस उपन्यास की निरमला भी आँख से अन्धी हैं । उसकी एक आँख में भोंमरा ने झाँटा मारा था । इसके बाद दो आँखें आ गई, परन्तु अनेक किस्म की दवा-दारू करने पर भी कुछ फायदा नहीं हुआ । उसकी सुन्दर आँखें हमेशा के लिए ज्योतिहीन हो जाती हैं । उसे पूर्णत: दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता हैं । कुछ काम करना मुश्किल हो जाता हैं । इसलिए उसके सामने अनेक समस्याएँ निर्माण होती हैं।

राजेन्द्र यादव जी द्वारा लिखित 'अनदेखे अनजान पुल' उपन्यास की निन्नी दिखने में अत्यंत कुरूप है । दर्शन के सम्पर्क में रहने से अजीब-सी बेचैनी उसके मन में और शरीर में लहरा जाती है । कभी-कभी वह सोचती हैं कि तड़ातड़ अपने चेहरे को थपड़ों से सूजा ले । आखिर इस चेहरे और रंग को कहाँ ले जाए ? भगवान कुछ और कर देता, उसकी आँखें खराब कर देता लेकिन रंग तो जरा सा साफ दे देता । अत: शारीरिक विकलांगता की वजह से निरस-सी जिन्दगी जीती हैं । उसकी यह कुरूपता उसके मन और शरीर को भी सजा दे देती है। फिर भी अपने अस्तित्व के प्रति एक विचित्र तटस्थता को लिए हैं । अक्सर वह आँखें बन्द कर मन्दिर में भगवान का ध्यान करती हैं । आँखें भर आने के बाद मन में हलकापन महसूस करती है ।

अंसुल जी द्वारा लिखित उपन्यास 'अधूरा मिलन' का सोहनलाल पैरों से विकलांग हैं। उसे शारीरिक पीड़ा से गुजरना पड़ता हैं । वह छड़ी के सहारे चलने का प्रयास करता हैं। उसके शरीर में सामान्य व्यक्ति के जैसी ताकत भी नहीं हैं । वह हमेशा अस्वस्थ रहता हैं । अपने पैरों में तकलिफ होने के कारण ज्यादा भाग दौड़ नहीं कर पाता । उसकी पत्नी अपने पुत्र अनिल को कहती है- ''शायद तेरे पापा पैरों में तकलिफ होने के कारण दौड़-भाग नहीं कर पायें।''[१०८] वे छड़ी को एक ओर रखकर घुटनों तक धोती समेटते हुए सूजे हुए पांवों को धूप खिलाते हैं। नियमित रूप से दवाई लेने के बावजूद भी उन्हें सूजन से छुटकारा नहीं मिलता । जाड़े के दिनों में तो सूजन और दर्द दोनों से परेशान होता हैं । अपना पुत्र अनिल की नौकरी के लिए वह छड़ी के सहारे एक परिचित से दूसरे परिचित तक दौड़ता हुआ जाता है । ऐसी अवस्था में उसके पांवों की सूजन और भी बढ़ती जाती हैं। शारीरिक पीड़ा से वह जोर-जोर से कराहता हैं । इस उपन्यास में और एक विकलांग चरित्र का चित्रण हैं । उस अनाम विकलांग व्यक्ति को दोनों टांगे नहीं है । वह न तो चल सकता है और न ही शारीरिक मेहनत कर पाता हैं । एक मन्दिर के बाहर लोगों के जूते-चप्पलों की देख-रेख अत्यंत सजगतापूर्वक करता है ।

'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास का रामचरण शारीरिक दृष्टि से विकलांग चरित्र है। विकलांगता के कारण कोई कड़ी मेहनत नहीं कर पाता और रात में धान की चोरी करता है । चोरी के इल्जाम में पकड़ा जाता हैं । बार-बार जेल जाता रहता है । इसलिए पण्डित उसे पूछता है-''क्या रे रामचन्ना, बार-बार जेहल क्या करने जाता है ? कायदे से गाँव में क्यों नहीं रहता?''[१०९] उसे गाँव के लोग भी उस गाँव में रहने नहीं देते । जब वह लंगडाता-सा धीरे-धीरे चलता है तो कंधे से लटकता हुआ लोटा पीठ पर दाएँ-बाएँ हिलता रहता है । उसकी बिना जूते की धूल-भरी एड़ियाँ और उपर की काली तथा पतली पिंडलियाँ उँची धोती से बाहर झलकती है । इस उपन्यास का शारीरिक दृष्टि से विकलांग चरित्र रामनाथ काका को अपनी विकलांगता के कारण भोजन करना तक मुश्किल हो जाता है । वह बेहोशी में ही अपनी जान गँवा बैठता हैं । इस उपन्यास का विकलांग वृध्द मजदूर अपने हाथ की पीड़ा से तिलमिलाते हुए ठेकेदार से कहता है- ''मेरी जान न लो मुझे घर लौट जाने दो ।''[११०] अत: उसके शरीर में बेहद दर्द फैल जाता है और वह अपने गांव तक भी नहीं पहुँच पाता । उसकी मृत्यू हो जाती हैं।

'अपनी जमीन देखो' उपन्यास का अठगोडवा शरीर से विकलांग है । वह काला, कलूटा और भीमकाय शरीरवाला हैं । बड़ी-बड़ी दाढ़ीवाला हाथों के नाखून तो इतने बड़े कि किसी का पेट आसानी से फाड़ा जा सकता है । इतने भव्य शरीर को वह केवल एक धोती से ढ़ंकता है । इतना ही नहीं तो हर कोई उसे देखकर जय हनुमान या जय बजरंग बली कहता है। परन्तु वह पूरी जिन्दगी जान नहीं पाता कि उसे इतनी शक्ति है भी या नहीं । इसी उपन्यास का अठईराम शारीरिक दृष्टि से किसी काम का न होने कारण घर पर ही रहता है । वह शरीर से पुष्ट था, परन्तु अपनी हरकत के कारण काफी मार से कमर टेढ़ी हो गई थी । इस उपन्यास की महदेई शारीरिक रूप से विकलांग है । उसे हर एक बात के लिए दूसरों के सहारे की आवश्यकता पड़ती है । इसलिए वह हमेशा अपने मायके में ही पड़ी रहती हैं । वह स्वयं विकलांग होने के कारण वृध्द सास-ससूर की सेवा नहीं कर पाती । उसके दादा-दादी भी वृध्दावस्था के कारण किसी प्रकार का काम नहीं कर पाते । वह अपने पति को चिट्टी लिखकर भेजती हैं। ''आपका वंश चले एहि से और खुशी हमका काई । एहि जिनगी में तुम ठीक न हो वे और यदि देहात में वैसन चिरईन मिलै तो सहर से लय आवा चमरौटी हमार हँसी उड़ावत है। हम देखाई देइत कि हमारी सवति जैसन मेहरारू चार-छ कोस में नाहीं है ।''[१११] महदेई दोनों पैरों से विकलांग होने के कारण अपने पति का वंश भी नहीं चला सकती । इसलिए अत्यंत उदारतापूर्वक अपने पति को दूसरा ब्याह करने का अनुरोध करती है । अत: एक विकलांग स्त्री का यह समर्पन पाठको के हृदय में विशेष स्थान बनाता है ।

'खंजन नयन' उपन्यास का विकलांग चरित्र सूरदास को अपनी विकलांगता के कारण शारीरिक पीड़ा को सहना पड़ता है । वह अपने अंधत्व से परेशान हैं । वह सोचता है- ''ईंट-पत्थर की अंधेरी कोठरी में दीपक लाकर उजाला किया जा सकता हैं किन्तु काया की अंधी कोठरी में...''[११२] उसका चेहरा फीका पड़ जाता है । लेकिन धूप-छांव-सी उत्तर जाती हैं । उसके पास संसार की सभी शक्तियाँ हैं केवल एकमात्र शक्ति नहीं जो बहुत ही जरूरी होती है- 'आँखें' । इस बात से बहुत सूरदास बहुत दु:खी हो जाता है । इस चरित्र के सन्दर्भ में डॉ.चम्पा सिंह जी ने कहा है- ''खंजननयन' के सूर एक ऐसे चरित्र हैं, जिनके लिए 'प्रेम बडौ सिध्द मंतर है' और अन्धत्व एक बहुत बड़ी साधना हैं । वे जीवन को मिथ्या नहीं, सत्य और सुंदर मानते है । आस्थाहीन और विखंडित रो रहे लोकमानस को जीने के लिए मानव समाज में प्रेम,

आस्था और विश्वास का संचार करते है और लोकमंगल में ही अपना मंगल ढूँढते है ।''[११३] सूरदास की आँखें बड़ी-बड़ी और सुन्दर हैं परन्तु बेजान है । अमृतलाल जी ने सूरदास की सुन्दर आँखें देखकर कहा है- ''लम्बा, दुर्बल, गोरा, नाक लम्बी और सुतवां, उभरी हुई हठीली ठोड़ी, उन्नत कपाल, लहराती हुई घुंघराली लटे, जटाओं-सी झूल रहीं हैं । हल्की-हल्की दाढ़ी-मूंछे भी है, कान बड़े हैं । कितना सुन्दर होता यदि आदमी देख भी पाता ।''[११४] इस प्रकार विकलांगता शारीरिक हो अथवा मानसिक हो, विकलांगों को अनेक समस्याओं में से गुजरना पड़ता है । शारीरिक पीड़ा और कमजोरी की वजह से कुछ विकलांग शरीर से तो पहले से ही टूटे हुए रहते हैं परन्तु इन अघातों को झेलते-झेलते मन से भी टूट जाते है । कुछ विकलांग चरित्र अपनी शारीरिक पीड़ा पर मात करते हुए, न डगमगाते हुए अपने कार्य में कामयाब होते है । कुछ विकलांग चरित्र अपने आपको हीन समझते हुए मानसिक रूप से टूट जाते है । कुछ विकलांग चरित्र स्वयं को हीन न समझते हुए आत्मनिर्भर और ज्ञानी बने हुए नजर आते हैं।

३.५ मानसिक समस्या :

मानसिक विकलांगता के कई कारण होते है । गुणसुत्र संबंधी विकारों के कारण मानसिक विकलांगता आती है तो कभी-कभी आनुवंशिक विकार के कारण माता में संक्रमण, बच्चों में प्रसव के बाद भी विकलांगता आती है । मानसिक विकलांगों में स्पष्ट रूप से असामान्यता दिखाई देती है । मानसिक विकलांगता की स्थिति अत्यंत भयावह और कष्टप्रद होती हैं । मस्तिष्क का महत्वपूर्ण कार्य वातावरणीय घटनाओं को सीखना-समझना एवं संकलित कर रखना है । ताकि विभिन्न परिस्थितियों में इनका बेहत्तर प्रयोग कर आवश्यकतानुसार प्रदर्शन कर सके । इस प्रक्रिया में मनुष्य के संवेदी अंगों की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि मस्तिष्क तक समस्त सूचनाओं को भेजने वाला मार्ग या उपकरण यह संवेदी अंग है । दिमागी रोग ऐसा रोग है जो आमतौर पर किशोरावस्था के बाद होता है । यह एक उपचार योग्य रोग है और अधिकांश मामलों में इसका इलाज किया जा सकता है । परन्तु अनेकबार मानसिक विकलांगता जीवनभर भी चलती हैं । उसका कुछ इलाज या उपचार नहीं हो सकता ।

अनेक विकलांगों को मानसिक समस्याओं से गुजरना पड़ता है । चिड़चिड़ापन, एक ही बात को बार-बार कहना, सहमा-सहमा सा रहना आदि विभिन्न समस्याओं से गुजरता हुआ मानसिक विक्षिप्त व्यक्ति अपना जीवन बिताता है । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में

अनेक उपन्यासकारों ने मानसिक रूप से विक्षिप्त चरित्रों को विभिन्न समस्याओं का सूक्ष्मता से चित्रण किया है ।

'अक्षत' का शंकर, 'रात का रिपोर्टर' की उमा, 'रतिविलाप' का विक्रम, 'किशनुली' की किशनुली, 'न आनेवाला कल' की शारदा, 'कोई बात नहीं' का शशांक, 'कैंजा' की कमली, 'रावण-रेखा' का बैजू, 'मैला आँचल' का मार्टिन आदि चरित्र मानसिक रूप से विक्षिप्त हैं । उनकी अनेक छोटी-मोटी समस्याओं को उपन्यासों में अंकित किया है ।

शिवसागर मिश्रजी द्वारा रचित उपन्यास 'अक्षत' में शंकर नामक पुरूष मानसिक रूप से विकलांग है । शंकर विक्षिप्तावस्था से गुजरता है । उसे एक माह में तीन-चार बार पागलपन का भयंकर दौरा पड़ता है । वह कभी जोर-जोर से रोता हैं तो कभी जोर-जोर से हंसता है । उसका यह सिलसिला घंटे-डेढ़-घंटे तक चलता रहता है । वह पागलपन के दौरे में कभी स्थिर नहीं बैठ पाता । वह चारों तरफ भागना शुरू करता है । इसलिए दौरा पड़ते ही उसे पकड़कर बांध दिया जाता है । लेखक के शब्दों में - ''एक दिन शंकर को दौरा पड़ा । घर पर कोई नहीं था । जो उसे बांध सके । शंकर रोता-हंसता हुआ अचानक ही सड़क पर जा पहुँचा । उसी समय वहाँ तेज गति से एक ट्रक आ पहुँचा, जो शंकर को रौंदता-कुचलता हुआ निकल भागा ।''[११५] शंकर उम्र से पच्चीस साल का था परन्तु बुद्धि से पांच साल के बच्चों जैसी हरकतें करता था । जानवर की तरह खेत में खटता था और घर आते ही खाकर सो जाता था । उसका दिमाग एकदम छोटे बच्चे के जैसा था ।

निर्मल वर्मा जी द्वारा रचित उपन्यास 'रात का रिपोर्टर' की उमा मानसिक दृष्टि से विक्षिप्त है । महिनों से अस्पताल में पड़ी रहती है । वह एक ही बात को अनेक बार बताती है। अत: बात को दोहराती रहती है । वह किसी पर विश्वास नहीं करती । लेखक ने एक स्थान पर कहा है- ''हम जिसे मानसिक बीमारी कहते है वह और कुछ नहीं सिर्फ अधैर्य है, बीच रास्ते में सत्य को पाने का प्रलोभन जबकि उसके लिए हमारी आत्मा तैयार नहीं है ।''[११६] पागलपन का दौरा पड़ते ही उमा विक्षिप्त हँसी-हँसती रहती है ।

'रतिविलाप' नामक उपन्यास का विक्रम मानसिक रूप से विकलांग चरित्र है । उसे मिरगी के दौरे बचपन से ही पड़ते है । उसे निचली मंजिल के एक कमरे में रात-दिन बाँधकर रखा जाता है । दिल दहलानेवाली उसकी चिख आस-पड़ोस के सभी लोगों को अस्वस्थ करती

है । उसके शब्दों में - ''खोल दो मुझे, जाने दो मुझे-कहाँ गई वह ? अरे कसाइयों कहाँ छुपा दिया मेरी सुन्दरी बहू को ? अरे मैंने तो उसका अंगूठा पकड़ा है पापा, मैं क्या उसे भगाकर लाया हूँ ।''[११७] वह कुछ समय के लिए चुप्पी साधकर मुर्दा बन जाता है । कभी-कभी आधी रात को उसके सुरीले कंठ की आवाज से आस-पड़ोसवाले भी बेचैन हो जाते है । उसकी पत्नी की विवशता को स्पष्ट करते हुए डॉ.कृष्णा श्रीवास्तव ने कहा है- ''उसके पति का मधुर कण्ठ स्वर उसे बार-बार चेतावनी देता 'जोबन्यू-चालू जशे'।''[११८] वह अपनी पत्नी को देखकर चित्कार मार उठता है । उसकी तरफ भागता जाता है । पिताजी के डर से वह एक दिन अपनी पत्नी को लेकर छत की ऊँची मुँडेर पर चढ़कर पिताजी को चिढ़ाता हैं । परन्तु पिताजी के अति क्रोध को देखकर मुँडेर से निचे कूदकर स्वयं को समाप्त करता है ।

शिवानी जी द्वारा रचित उपन्यास 'किशनुली' की अपरूप सुन्दरी किशनुली मानसिक रूप से विकलांग है । उस उन्मादिनी का उन्माद विचित्र ही नहीं तो पहाड़ीपन अरण्य को झुलसानेवाला अग्निज्वाला-सा उग्र हैं । वह दिन भर घूमती रहती है। सड़कों से फटे कागज, टूटे टीन के डिब्बे, चिथड़े सब कुछ बटोरती है । वह कभी-कभी टंकी के निचे नहाती है । नहाते समय अपने सुन्दर चेहरे को हास्यास्पद मुद्राओं में बिचकाती और स्वयं ही खिलखिलाने लगती । कभी अपनी लाल जीभ को सर्पिनी सी लपलपाकर पतली नाक को छू लेती । कभी-कभी वह भद्दी गालियाँ भी देती हैं । एखादबार खाना न खाते हुए पुरे चावल के छोटे-छोटे गोले बनाकर खिड़की से बाहर फेंक देती है। दाल का कटोरा अपने सिर पर उलट लेती है और ऐसे छपकाती जैसे तेल छपका रहीं है । लेखिका ने उसके सौन्दर्य की तुलना परियों से की है - ''सचमुच ही निंट में पगली किसना परियों सी ही सुन्दर लग रहीं थी ।''[११९] एक दिन वह क्रूध्द शेरनी सी पूरे कमरे में चक्कर लगाती कहती है क्यों बंद किया है मुझे ? खोलो-खोलो वह एक दिन घर से पलायन करती है, और पूरे सात माह बाद काकी के घर लौटती है, ''वही किशनुली अचानक भाग कर जब सात माह बाद वापस आई तो उसके मातृत्व भार वहन करते उतुंग उदर ने किसी की गाथा को उजागर कर दिया ।''[१२०] अत: मानसिक विकलांगता की वजह से विकलांग स्त्रियों को केवल मानसिक समस्या से ही नहीं बल्कि अनेक समस्यओं से गुजरना पड़ता हैं। उन्हें अपना सर्वस्व खोना पड़ता है । धर्मवीर भारती जी ने एक स्थान पर कहा है - ''छोटी-सी-छोटी और बड़ी से बड़ी, कोई घटना ऐसी नहीं जो आदमी के अन्तर्मन

पर गहरी छाप न छोड़ जाये ।''[१२१] अत: मानसिक रूप से विक्षिप्त होने के लिए मनुष्य के मन पर किसी घटना का गहरा असर होता है । तभी मनुष्य मानसिक दृष्टि से विकलांग होता है ।

हिंदी साहित्य जगत की लेखिका शिवानी का उपन्यास 'कैंजा' में मानसिक रूप से विकलांग स्त्री चरित्र को उजागर किया है । प्रस्तुत उपन्यास की कमली लगभग तेरह साल की है। उसे दिन भर एक पलंग को बाँधकर घर में ही रखा जाता है । बीच-बीच में एक भयानक अमानवीय चीत्कार से आस-पड़ोस के लोग सहम जाते है । थोड़ी देर बाद वह थककर स्वयं ही चुप हो जाती है । लेखिका के शब्दों में- ''कभी-कभी वह जोर से हंसती और उसकी वह बीभत्स हंसी उसकी दिल दहला देनेवाली चीख से भी भयानक लगती।''[१२२] तेरह साल की गोरी-चिटी लड़की न नहाने के कारण गंधी और मैली दिखती है । लेखिका ने कहा है - ''कभी जल का स्पर्श न करने से मुखमंडल की गोरी त्वचा म्लान आवश्य पड़ गई थी, किंतु एक दिन पगली ने अपनी मैली चीकट-सी बास्कट के बटन तड़ातड़ तोड़ उसे दूर फेंक दिया तो नंदी ने उसकी फिरंगी मेम की-सी सफेद चमड़ी के बीच यौवन के स्पष्ट हस्ताक्षर देख, लजाकर आँखें फेर ली थी ।''[१२३] मानसिक विकार के साथ-साथ उसका शारीरिक विकार भी अनुभवकुशल माँ की नजरों से छिपा नहीं रहा । वह एक पुत्र को जन्म देती है । जिसका नाम रोहित रखकर नंदी उसे अपने पुत्रवत प्रेम देकर संभालती है ।

'आँचलिक' उपन्यासकार के रूप में अपना नाम कमा चुके फणीश्वरनाथ रेणु जी का प्रसिध्द उपन्यास 'कितने चौराहे' में मानसिक दृष्टि से विकलांग चरित्रों का चित्रण है । जिनके सामने अनेक मानसिक समस्याएँ खड़ी है । डॉ.बनर्जी एक विक्षिप्त कम्पाउंडर है । जिसकी मानसिक हालत विक्षिप्त होने के कारण वह अपने जीवन का कोई सही रास्ता नहीं चुन पाता । उसी प्रकार इस उपन्यास का चरित्र हाफीज को भी मानसिक विकलांगता के कारण विभिन्न समस्याओं से गुजरना पड़ता है । हालांकि वह मास्टर है परन्तु अपना मानसिक स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण अपने छात्रों को ज्ञान देने का कार्य नहीं कर सकता । उसकी सच्ची बात पर भी लोग विश्वास नहीं करते । उसे अपने नंग-धडंग शरीर का भी ध्यान नहीं रहता । वह नाचता हुआ गीत गाता रहता है । वह दोनों हाथों से चरखा चलाने का भाव दिखलाकर चरखा का गीत गाता रहता है । लंबा-चौड़ा पूरा-का-पूरा गीत उसको ज्ञात है जो सामान्य बुद्धिवाले इन्सान को भी नहीं रह सकता है । वह स्टूडेंटस् होम में नौकरी करने की इच्छा प्रगट करता है । परन्तु वह

अपनी कमजोरी के कारण अपनी इच्छा पूरी नहीं कर पाता । अर्थात् उसकी मानसिक स्थिति के कारण उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं । वह कहता है - ''वह तो करता ही हूँ । यह 'प्राइवेट' काम करूँगा । सरोजनी नायडू ने महात्मा गांधीजी को लिखा है, गांधी महात्मा ने लार्ड इरविन को तार दिया है... तार-तार, तार-तार कि टूटे न चरखा के तार-चरखवा चालू रहे।''[१२४] इतने भले और ज्ञानी आदमी की मानसिक विकलांगता के कारण कितनी बुरी दुर्दशा हो जाती है । अत: मानसिक विकृती मनुष्य को कहीं का नहीं छोड़ती । वह हमेशा मानसिक विक्षिप्तता में कुछ-न-कुछ बड़बड़ाता रहता है । परन्तु उसकी जिजीविषा देखकर पाठक भी विभिन्न समस्याओं पर मात करने के लिए प्रेरित हो जाता है । अत: इन्सान नयी उम्मीद से अपना कार्य करता रहता है । अंत में उसका जनाजा फूल-मालाओं से ढ़की देह, तिरंगे झंडे के कफन के पास उनका प्यारा चरखा लगाकर निकाला जाता है ।

सन् १९८९ में प्रकाशित आबिद सुरती का उपन्यास 'रावण-रेखा' में बैजू नामक विकलांग चरित्र का चित्रण है । वह मानसिक और शारीरिक रूप से विकलांग है । उसे शारीरिक समस्या के साथ मानसिक समस्या का भी सामना करना पड़ता है । एक बार उसकी माँ उसे कहती है कि अब तू बच्चा नहीं है, जो खिलौने से खेले । अब तेरी शादी होनेवाली है । तब वह तुरन्त पार्वती के पास जाकर मेहंदी लगवाने का आग्रह करता है । अपना दायां हाथ पार्वती के आगे बढ़ाकर मेहंदी लगाने को कहता है । अर्थात् झुठी बातें भी उसे सच्ची लगती है । वह अपने दोस्तों के साथ मुनिया के घर तक चला जाता है । जाते समय वह अपना खिलौना (बंदर) भी साथ ले जाता है । जो चाबी भरते ही ढोल बजाने लगता है । वह कहता है मैं दुल्हन ले जाने आया हूँ । इस प्रकार विक्षिप्तता के कारण झुठी बातों में आकर खुश हो जाता है । वह हर एक बात पर भरोसा रखता है ।

फणीश्वरनाथ रेणु जी द्वारा लिखित उपन्यास 'मैला आँचल' में मानसिक दृष्टि से विकलांग मार्टिन का चरित्र प्रस्तुत हुआ है । वह पागल है । बगल में रद्दी कागजों का पुलिंदा दबाए हुए दिन-भर पूर्णिया के कचहरी में चक्कर काटता रहता है । हर मिलनेवाले से कहता है - ''गवर्नमेंट ने एक डिस्पेंसरी का हुक्म दे दिया है, अगले साल खुल जाएगा।''[१२५] वह मानसिक दृष्टि से इतना विक्षिप्त हो जाता है कि डॉक्टर उसे एक पागलखाने में भर्ती कराते है । परन्तु उसके जीवन का अंत उसी विक्षिप्तावस्था में पागलखाने में होता है । उपन्यासकार ने

प्रस्तुत उपन्यास में एक पगली कमला का भी चरित्र प्रस्तुत किया है । उसकी मानसिकता को लेखक ने अत्यंत सूक्ष्मता से उजागर किया है । वह जब प्रेमसागर पढ़ने बैठती है तब उसका मन नहीं लगता, वह कहती है - ''श्री सुकदेव जी बोले कि हे राजा, एक दिन कृष्ण कन्हैया बंशी बजैया कदम के बिरिछ पर बैठके बंशी बजाए रह थे ।''[१२६] चीरहरण लीला की तस्वीर को देखकर कमली का जी न जाने कैसा मचलता है । वह 'प्रेमसागर' बंद कर देती है । यहाँ उसकी मानसिकता की ओर लेखक ने संकेत किया है । उसकी चिकित्सा करनेवाले डॉक्टर के प्रति वह आसक्त हो जाती है । जब डॉक्टर जाँच कराने नहीं आता तब उसे पत्र लिखकर पांच-सात बार पढ़कर बाद में फाड़ देती है । अलमारी के एक कोने में फाड़ी हुई चिट्ठियों का ढ़ेर लगाती है । पत्र लिखकर फाड़ने से उसका मन हल्का होता है । कमला का मानसिक स्वास्थ्य ठीक न होते हुए भी वह कभी डाइन, भूत और डाकिन पर विश्वास नहीं करती । एक बार डॉक्टर जब पन्द्रह दिन नहीं आता तब वह मन-ही-मन बहुत सारी बातें गढ़ रखती है । उसी के शब्दों में ''पद्रंह दिनों में एक बार भी तो आते ! रहने दीजिए, यही होता न कि रोग का छूत मुझे लग जाता । मैं मर जाती । आपका क्या बिगड़ता ? चरखा सेंटर की मास्टरनी जी जो थी ।....रातभर खूब चाय बनाकर पिलाती थी न ?''[१२७] वह यह भी सोचती है कि डॉक्टर को लीपट जाएगी । अत: वह विकलांग है फिर भी एक सामान्य स्त्री के जैसी उसके मन में पुरूष के प्रति चाहत है ।

जिस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में विकलांगों की मानसिक पीड़ा और विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है । उसी प्रकार स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में भी विकलांगों की अनेक समस्याएँ उजागर करने में लेखक और लेखिकाएँ सफल हो चुके हैं । मानसिक विक्षिप्तावस्था में या पागलपन के दौरे में अधिकांश चरित्र स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख पाते और मौत को गले लगाते हैं । साथ ही हर एक विक्षिप्त चरित्र स्वयं से अथवा कोई आहट से सहमा-सहमा सा रहता हुआ दृष्टिगोचर होता है । परन्तु गौर करनेवाली बात यह है कि कोई भी विक्षिप्त चरित्र दूसरों को तकलीफ देता हुआ दिखाई नहीं देता । यह बात सच है कि अनेक बार पागलपन के दौरे की वजह से उसके परिवारजनों को परेशानी उठानी पड़ती है ।

३.६ शैक्षिक समस्या :

भारतीय समाज में जहां सामान्य लोगों के जीवन में शिक्षा को विशेष महत्व दिया जाता है उसी प्रकार विकलांगों की शिक्षा का महत्व रखा जाता है । विकलांगों के जीवन में शिक्षा महत्वपूर्ण ही नहीं बल्कि अनिवार्य बन जाती है । उसे आत्मनिर्भर होने की अत्यावश्यकता होती। क्योंकि विकलांग व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से कमजोर होता है । इसलिए कठोर मेहनत नहीं कर पाता । दूसरी बात यह है कि विकलांगों को अगर शिक्षा से वंचित रखा जाता है तो समाज के उपर ही नहीं बल्कि स्वयं को जिन्दगी का एक बड़ा भारी बोझ समझकर कुंठाग्रस्त रहता है । विकलांगों का एक वर्ग जिन्होंने वैज्ञानिक प्रणाली पर चलकर अपने जीवन का निर्माण किया है उसे शिक्षित बनाया है, उन्होंने अपनी ही नहीं तो सम्पूर्ण विश्व की सेवा की है। दूसरी ओर वे विकलांग है जिनको वैज्ञानिक तरीके से विकास करने का अवसर नहीं मिला है, उन्होंने इन्सान होकर भी पशुवत जिन्दगी बिताई है। इस सबके पीछे यदि कोई राज की बात है तो वह यही कि एक विकलांग स्वयं को किस प्रकार शिक्षित करता है । बचपन में ही आयी हुयी विकलांगता के कारण उससे यह आशा नहीं की जा सकती कि वह स्वयं अपने जीवन की योजना बना सके । विकलांगता के अनेक प्रकार है । इसलिए विकलांगता किस किस्म की है यह देखकर ही विकलांगों को शिक्षित किया जा सकता है ।

स्वतंत्रता के बाद लिखे गये उपन्यासों में उपन्यासकारों ने विकलांगों की शैक्षिक समस्या को उजागर किया है । शिक्षा लेते समय आयी हुयी विभिन्न समस्याओं को अत्यंत सूक्ष्मता से स्पष्ट किया है । विकलांगों को हर हाल में शिक्षित करना अर्थात एक विशिष्ट उजले जीवन का निर्माण करना है । 'कठगुलाब' की स्मिता जैसे विकलांगों को शिक्षा प्राप्त करते समय आनेवाली विभिन्न समस्याएँ एवं बाधाओं का सूक्ष्म अंकन उपन्यासकारों ने अपनी औपन्यासिक कृतियों में किया हैं । अधिकांश विकलांग आनेवाली कठिनाई और पीड़ा को सहते हुए अपने जीवन में सफल होते हैं ।

'कठगुलाब' की स्मिता की आँखें कमजोर है । वह अपनी बहन और जीजा के पास रहकर बी.एस.सी. तक की शिक्षा लेती है । शिक्षा लेते समय एडमिशन फी के लिए जब जीजा से पैसे माँगती है, तब उसे अनेक बार अपमानित होना पड़ता है । शारीरिक पीड़ा तक भुगतनी पड़ती है । एक बार तो उसका जीजा उसे कहता है पहले एक पप्पी दे, फिर पैसे देता हूँ ।

अत: पढ़ाई के लिए इस अनाथ स्मिता को बहन और जीजा का सहारा लेना पड़ता है परन्तु जीजा उसके साथ दुष्कर्म और दुर्व्यवहार करता है । एक बार उसकी शादी तय करने के लिए एक लड़के को दिखाने घर पर बुलाया जाता है । तब स्मिता कहती है- ''मैं शादी नहीं करना चाहती । न अधेड़ से, न जवान से । मैं पढ़ना चाहती हूँ ।''[१२८] वह एम.एस.सी. करना चाहती हैं । हॉस्टेल में रहकर पढ़ना चाहती है । परन्तु आर्थिक आय न होने के कारण खर्चे को लेकर चिंतित रहती है । आर्थिक रूप से किसी का सहारा न मिलने के कारण आगे की शिक्षा को लेकर परेशान हो जाती है । विकलांगता के कारण शैक्षिक समस्या से गुजरना पड़ता है ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में उपन्यासकारों ने विकलांगों की शैक्षिक समस्या को अत्यंत कुशलतापूर्वक व्यक्त किया है । विकलांगों को स्कूल में जाते समय रास्ते में आनेवाली समस्याएँ, स्कूल जाने के बाद वहाँ सहपाठियों द्वारा होनेवाली उपेक्षा और अपमान, यातायात के अभाव से होनेवाली परेशानी, यातायात में व्यवस्था न होने की वजह से उठानेवाली कठिनाइयाँ आदि सभी समस्याओं से गुजरते हुए पढ़ाई करनेवाले चरित्रों का यह कार्य अत्यंत सराहनीय है। ताकि आम इन्सान के जैसा ही वह विभिन्न समस्याओं का दृढ़ता से अगर सामना करता है तो वह सकलांग की तुलना में किसी भी बात में कम नहीं कहा जा सकता । वह एक अंग से भले ही कमजोर है परन्तु बाकी सभी बातों में सक्षम है ।

३.७ चिकित्सा की समस्याएँ :

विकलांगता शारीरिक हो अथवा मानसिक हो वह केवल एक समस्या नहीं बल्कि प्रत्येक चिकित्सक के लिए बहुत बड़ी चुनौती भी है । चिकित्सक विकलांगों की चिकित्सा करते समय अपने प्रयासों के द्वारा एक सीमा तक उसकी तीव्रता और वेदना कम करने का प्रयास करता है। चिकित्सक लोगों की भूमिका इसके लिए सीमित रहेगी तो भी चलता है परन्तु समाज में अधिक जागरूकता रहनी चाहिए । क्योंकि समुचित जानकारियों के अभाव में विकलांगता का जहर मानव-जाति को अपना ज्यादा से ज्यादा शिकार बनाता जाता है । इसके विपरीत जिस समाज में विषयगत व्यापक जानकारियाँ होती है तथा लोगों में इस विषय को समझने का चाव होता है वहाँ विकलांगता तो रहती है लेकिन उसकी पीड़ा नहीं । विकलांगों की पीड़ा कम करने के लिए चिकित्सकों को औषधों और शल्यक्रिया का भी सहारा लेना पड़ता है । चिकित्सकों को आवश्यकतानुसार कभी-कभी सर्जरी भी करनी पड़ती है । औषधों, सर्जरी, ऑपरेशन आदि के

द्वारा विकलांगता को दुरूस्त करने का प्रयास तो किया जाता है । परन्तु कभी-कभी सफलता नहीं मिल पाती । इसलिए चिकित्सक और विकलांग भी परेशान हो जाते हैं । ऐसी स्थिति में खुद के साथ समझौता करना पड़ता है । यह कहना पड़ता है कि, औषधियों आदि के द्वारा मरीज के जीवन में जो कुछ होना था वह अब हो चुका है तथा अब औषधियाँ कुछ नहीं कर सकती।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में विकलांगों की चिकित्सा की समस्या पर प्रकाश डाला है । विकलांगों को चिकित्सा लेते समय विभिन्न समस्याओं से गुजरना पड़ता है । उन समस्याओं को अनेक उपन्यासकारों ने व्यक्त किया हैं । 'मायापुरी' का सतीश, 'रात का रिपोर्टर' की उमा, 'टुण्डा लाट' का सुनील, 'कृष्णकली' की पार्वती, 'आवां' का देवीशंकर, 'जल टूटता हुआ' का सतीश, 'रावण-रेखा' का बैजू, 'मैला आँचल' की कमली आदि विकलांगों की चिकित्सा समस्या को अपने उपन्यासों में उजागर किया है ।

शिवानी जी द्वारा रचित उपन्यास 'मायापुरी' का सतीश वायुयान दुर्घटना में विकलांग हो जाता है । दुर्घटना के बाद आइडोफॉर्म की महक से भरे कमरे में सतीश नि:शब्द बिस्तर पर लेटा रहता है । उसकी प्रेमिका शोभा उसे वहीं मिलने को जाती है, तब मुग्ध दृष्टि से देखती रहती है । बाहर आते ही डॉक्टर से पूछती है कि चोट कहा है तब डॉक्टर कहते है- ''दोनों पैर एकदम हाथ से 'खतम' का संकेत कर वह बोला- 'भय है गैंग्रीन का दोनों पैर घुटनों से नीचे बुरी तरह कुचल गए है ।' जहाँ तक होगा उन्हें बचाने का प्रयत्न कर रहें है । पर देखिए ...''[१२९] सतीश की अवस्था अत्यंत दयनिय हो जाती है । वह एक बिस्तर पर निचेष्ट पड़ा रहता है । उसकी पलके तक नहीं हिल पाती । पैरों की भयंकर पीड़ा से वह कराहता रहता है । जैसे कोई आरी चला रहा है इतनी भयंकर वेदना उसे सहनी पड़ती है । शोभा सतीश को देखने दिल्ली अस्पताल जाते ही डॉक्टर से पूछती है । क्या मैं उन्हें देख सकती हूँ, तब डॉक्टर कहता है- ''उनसे मिलना सब निरर्थक है । यदि आप उनकी मित्र हैं तो राय दूँगा और भी न मिलिए । जिस व्यक्ति को आपने कल तक हृष्ट-पुष्ट देखा है, वह आज मांस का लोथड़ा मात्र हैं ।''[१३०] अंत तक डॉक्टर सतीश को बचाने का प्रयास करते है किन्तु असफल हो जाते है । मृत्यु पहले से ही भयानक होती है और अस्पताल में तो और भी भयावह ।

'रात का रिपोर्टर' की उमा मानसिक रूप से विकलांग है । वह कई महिनों से अस्पताल में पड़ी रहती है । डॉक्टर हर दिन उसकी चिकित्सा करते हैं । लेकिन कुछ विशेष परिवर्तन नहीं आ पाता । डॉक्टरों की अनुभूति के बगैर घरवाले उमा को देख भी नहीं सकते । इस केस का पहले तो डॉ. दत्त के पास इलाज करते थे किन्तु बाद में यह केस डॉ.सरन को दिया जाता है । डॉक्टर उमा के पति को उमा से मिलने से रोकते हैं फिर भी चुपके से वह उसे मिलता है। तब डॉक्टर गुस्सा करता है ।

'कृष्णकली' उपन्यास की पार्वती को डॉ.पैट्रिक कुष्ठाश्रम में लाती है । परन्तु अपनी विकलांग अंगुलियों को अच्छा करने के लिए पार्वती बैलोर से अपनी नकली अंगुलियाँ लाती है। रोजी भी कुष्ठाश्रम की डॉक्टरनी है । वह कुष्ठरोगियों की इतनी सेवा करती है कि स्वयं के हाथों से उनके कुष्ठ को धोकर साफ करती है । अत: पार्वती को उसके साथ रखा जाता है । लेखिका ने एक स्थान पर कहा है - ''क्या वह रोजी के साथ कुष्ठाश्रम में रह पाती, क्या वह उस रोजी की भाँति महान हो सकती थी, जिसे स्वयं अपने हाथों से बीभत्स कुष्ठ रोगियों के हाथ-पैरों के व्रण धोते वह कई बार देख चुकी थी ।''[१३१] इस प्रकार अल्मोड़ा के कुष्ठाश्रम के अनेक कुष्ठरोगियों की चिकित्सा की समस्या को लेखिकाने प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्त किया है ।

'आवां' उपन्यास के लकवाग्रस्त देवीशंकर पाण्डे की चिकित्सा समस्या को उपन्यासकार ने अत्यंत संवेदनापूर्वक व्यक्त किया हैं । उनकी तबीयत एकाएक बिगडने के कारण 'वंदना' सोसायटी के डॉक्टर श्रीवास्तव जी के द्वारा चिकित्सा की जाती है । तब डॉ.कहते है, ''समय से पहुँच गई तुम, नमिता । पांडे जी को फौरन अस्पताल ले जाना होगा ।''[१३२] वे किसी भी समय में कोमा मे जाने का डर था । इसलिए डॉ.पाण्डे को तुरन्त अस्पताल भिजवाने का प्रबन्ध करते हैं । ताकि देर करना घातक हो सकता है । डॉ.श्रीवास्तव जी कि सलाह से पांडे जी को नानावटी अस्पताल के इमरजैंसी वार्ड में दाखिल किया जाता है । नमिता भी ऐसी अवस्था में खंडाला से आकर अपने पिताजी का धीरज बँधाते हुए कहती है - ''बाबूजी ! देखो बाबूजी, मैं लौट आई हूँ....आप अब एकदम ठीक हो जाएंगे...इलाज के लिए अब ढेर सारे पैसे हैं पास...अब इलाज नहीं टलेगा ।''[१३३] नमिता हरदिन तड़के उठकर बाबूजी से मिलने अस्पताल जाती है । इंजेक्शन लगाया जाता है लेकिन उनकी देह दवा नहीं लेती । दवां आदि पहुँचाने के प्रयोजन में मुंह में डाली गई नली निष्क्रिय हो जाती है । जो भी पिलाया जाता है उलटकर

बाहर आता है । पेशाब की थैली में रक्त रिसता रहता है । इस अवस्था में आई.सी.यू. में पहुँचाया जाता है । परंतु अंत में उनकी मृत्यु हो जाती है । कितना भी ध्यानपूर्वक इलाज किया जाए तो भी कभी-कभी मनुष्य को सफलता नहीं मिलती । अच्छी चिकित्सा के बावजूद भी नेहा के हाथ असफलता आती है ।

'जल टूटता हुआ' का सतीश के बांह से गंड़ासा बाहर निकालते ही खून का फौआरा चलता है । राहगीर उसे पकड़कर घर तक पहुँचाते हैं । कुछ लोग अस्पताल जाने का सुझाव देते हैं लेकिन सतीश अस्पताल जाने को तैयार नहीं होता । वह स्वयं देहाती मरम-पट्टी करके खाट पर लेटा रहता है । रमधनिया बनिया अस्पताल से डॉक्टर को पकड़कर लाता है । डॉक्टर सतीश का घाव देखते ही चिंतित हो जाता है । तब सतीश कहता है- ''ऐसे-ऐसे घाव तो देहात में लगते रहते हैं डॉक्टर साहब, सबके लिए डॉक्टर कहां रखे हुए है, और मैंने तो अब भी डॉक्टर की आवश्यकता महसूस नहीं की थी ।''[१३४] सतीश अपनी बिकट आर्थिक स्थिति के कारण अस्पताल में जाकर इलाज नहीं कर पाता । किसी के कर्ज के पैसे खाकर मरना उसे पसंद नहीं है । तब रमधनिया कहता है कि ऐसी अशुभ बातें मत करो अभी तुम्हें इंसाफ के लिए, गरीब जनता के लिए तो जीना है । इस घाव में क्या लगा है । डॉक्टर तो ऐसे ही दुविधा की बोली बोलते हैं । पैसे न लेते हुए ही सतीश का इलाज करता रहता है ।

'रावण-रेखा' उपन्यास का बैजू सात साल तक ठीक रहता है लेकिन फिर अचानक विक्षिप्त-सी हरकते करता है । उसका पिता बैजू को डॉक्टर के पास ले जाता है । डॉ.दिलीप बैजू की जाँच कर कहता है- ''इसके जिस्म में जो खराबी है वह दूर हो सकती है, मगर जो कमी आप लोगों के स्नेह में हैं उसका क्या ?''[१३५] घर में बैजू के साथ नौकर से भी बदतर बर्ताव किया जाता है । इस बात को डॉक्टर ने खुद की आँखों से देखा था । इसलिए फिर से बैजू के पिताजी को टोकते हुए कहता है कि यह आपका बेटा है, अगर आपका सहयोग नहीं मिला तो मेरा इलाज भी कोई मायने नहीं रखेगा । अत: विकलांगों को डांट-डपट की नहीं प्यार की जरूरत होती है । डॉक्टर की मुलाकात से बैजू को सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि उसे अपनी अट्ठारह साल की जिन्दगी में पहली बार पता चलता है कि उसकी जबान काफी लम्बी है ।

'मैला आँचल' की विक्षिप्त कमली को किसी प्रकार की किताब पढ़ने को डॉक्टर मना करता है । कमली का ब्लडप्रेशर जाँच करते समय डॉक्टर गंभीरता से यंत्र की ओर देखता है । लेकिन कमली तिरछी निगाहों से चोरी-चोरी डॉक्टर को देखती है । कमली विकलांग अवस्था के बावजूद भी डॉक्टर को चाहती है । उसे प्यार करती है । डॉक्टर उसके साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करता है । कमली गर्भवती हो जाती है । अत: डॉक्टर होकर भी किसी विकलांग स्त्री की कमजोरी का फायदा उठाता है । प्रस्तुत उपन्यास में कहा गया है- ''कमली को डॉक्टर ने अपनी बाँहों में जकड़ लिया है ।... तीन बजे दिन में ही संथाली नाच देखने अस्पताल आई थी कमली नाच खत्म हो गया, शाम हो गई, उधर नौटंकी कब शुरू हुई कब खत्म हुई शायद दोनों में से कोई नहीं बता सकेगा ।''[१३६] अच्छी चिकित्सा करने के बजाय कोई डॉक्टर विकलांगों के साथ इस प्रकार दुर्व्यवहार करके अपनी कामेच्छा को संतुष्ठ करता है तो इस समस्या से बढ़कर दूसरी कोई समस्या नहीं होगी । अत: विकलांगों को और विकलांगों के परिवार को भी नुकसान पहुँचाया जाता है ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में अनेक उपन्यासकारों ने विकलांगों की चिकित्सा समस्या को बहुत ही सूक्ष्मता से व्यक्त किया है । विकलांगों की चिकित्सा की समस्या को देखकर दृष्टिगोचर होता है कि अनेक विकलांगों के साथ डॉक्टर दुर्व्यवहार करते हैं । कुछ विकलांगों के साथ अपनत्व और स्नेह भरा व्यवहार करते हुए भी कुछ चिकित्सक पाये जाते हैं । कभी-कभी डॉक्टर स्वयं द्विधा में पड़ते हैं और अनेक विकलांगों को भी द्विधा में डालते हैं । अनेक विकलांगों को इस समस्या का दृढ़ता से सामना करना पढ़ता है । कुछ विकलांग अपनी आर्थिक स्थिति की कमजोरी की वजह से अच्छे अस्पताल में इलाज नहीं कर पाते तो कुछ स्वाभिमानी विकलांग दूसरों से आर्थिक मदत या शारीरिक सहयोग लेना भी पसंद नहीं करते । उनके सामने विभिन्न समस्याएँ खड़ी होती हैं परन्तु उन समस्याओं का निड़रता से सामना करते हुए अधिकांश विकलांग दृष्टिगोचर होते हैं ।

३.८ राजनीतिक समस्याएँ :

विकलांगों की समस्याओं को हल करने के लिए विकसित राष्ट्रों में बहुत कुछ किया हैं । ऐसे देशों का कोई भी विकलांग स्वयं को किसी भी वेदना से घिरा हुआ महसूस नहीं करता । वहाँ की जमीन और आकाश में वे सारी सुविधाएँ मौजूद हैं जिनके द्वारा उनका जीवन हर

समस्या से पूरी तरह मुक्त है । ऐसे देशों की विशेष बात यह है कि वहाँ की सामाजिक जागरूकता इतनी ज्यादा है कि यदि कोई समस्या आती भी है तो उसके हल के लिए सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर सरकार तत्काल प्रयास शुरू करती है । परन्तु हमारे देश की हालत इस दिशा में पूरी तरह भिन्न है । राजनीतिक स्तर पर इस दिशा में कुछ किया है वह नाम मात्र के लिए ही है । इसलिए अपने देश में विकलांगों को राजनीतिक समस्या से भी गुजरना पड़ता है ।

विकलांगों को राजनीति से बाहर रखा जाता है । झूठ बोलकर उन्हें धोखा दिया जाता है। विकलांगता की वजह से विकलांगों को कार्यक्षमता होने के बावजूद भी दूर रहना पड़ता है । यह एक बहुत बड़ी समस्या आज विकलांगों के सामने खड़ी हैं । जिसे स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में उठाने का प्रयास किया है ।

'अग्निबीज' उपन्यास के साधो काका गूँगे है । प्रस्तुत उपन्यास का ज्वालासिंह अर्थात साधो काका का भाई उन्हें पागल करार देता है । उसके गूँगेपन का फायदा उठाकर कांग्रेसी टिकट प्राप्त करता है । ज्वालासिंह काँग्रेस से टिकट प्राप्त करने के लिए काका को पागल बताकर स्वयं टिकट हासिल करता है-...''ज्वालासिंह ने दस हजार लोगों से दस्तखत कराकर लखनऊवाले बड़के काँग्रेसी नेता को बता दिया था कि साधो काका पागल है ।''[१३७] परन्तु प्रस्तुत उपन्यास का बैजू बेंच पर चढ़कर कहता है कि हम किसी से दबकर नहीं रहेंगे । जो हमें मारेगा उसे हम भी मारेंगे । हम साधो काका को ही अपना नेता मानते हैं । इसलिए सिर्फ उन्हीं की बात मानेगे । दूसरे की नहीं । राजकीय नेता के रूप में सभी लोग साधो काका को ही चाहते हैं । क्योंकि साधो काका लोगों का कभी अहित नहीं चाहते थे । वे अपना जीवन देश सेवा के लिए ही समर्पित करना चाहते हैं । अत: विकलांगता के कारण घर के लोग विकलांगों को अपमानित और उपेक्षित रखते हैं । उन्हें अच्छे कार्यों से वंचित रखा जाता है । परिवारवाले ही विकलांगों को कुछ महत्वपूर्ण कार्यो से अलग रखते हैं । झूठ बोलकर अपने ही परिजन उन्हें धोका देकर अपने स्वार्थो की पूर्ति करते हैं । इसलिए विकलांगों को अपनी क्षमता और कार्य करने की इच्छा होते हुए भी वंचित रहना पड़ता है ।

३.९ निष्कर्ष :

इस प्रकार विकलांगों की अनेक समस्याओं को व्यक्त किया जाता हैं । विकलांगों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण उन्हें आम लोगों के जैसी निर्धनता और गरीबी की

समस्याओं से गुजरना पड़ता हैं । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्यकारों ने उपन्यासों में विकलांगों की सामाजिक समस्याओं को अत्यंत सूक्ष्मता से संवेदनापूर्वक व्यक्त किया हैं । विकलांगों के सामने प्रमुख रूप से विवाह, बलात्कार, व्यसनाधिनता आदि अनेक समस्याएँ हैं । अनमेल विवाह और सामाजिक उपेक्षा जैसी समस्याओं से अनेक विकलांग चरित्र गुजरते है । शारीरिक कमजोरी की वजह से विकलांग स्त्री चरित्रों को बलात्कार की समस्या का सामना करना पड़ता है। शारीरिक विकृति के कारण सकलांग व्यक्ति विकलांगों के साथ ब्याह करने को तैयार नहीं होता । अगर कोई तैयार हुआ भी तो दाम्पत्यगत समस्या निर्माण हो जाती है । पति-पत्नी में बेबनाव रहता है । सन्तानोत्पत्ती की समस्या भी अनेक विकलांगों के जीवन में पायी जाती हैं । शारीरिक कमजोरी तथा विकृति के कारण सन्तानोत्पत्ती की क्षमता विकलांगों में सकलांगों की तुलना में कम पायी जाती हैं । इसलिए विकलांगों को शारीरिक समस्या का भी सामना करना पड़ता है । अनेक साहित्यकारों ने विकलांगों की शारीरिक, मानसिक और चिकित्सा सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं को अपने उपन्यासों में उजागर किया है । शारीरिक विकृति के कारण शिक्षा लेते समय स्कूल-कॉलेजों में और समाज में आनेवाली विकलांगों की समस्याओं को अत्यंत सूक्ष्मता से व्यक्त किया हैं । साथ ही आरक्षण सम्बन्धी राजनीति का भी चित्रण उपन्यासों में देखने को मिलता है । विकलांगों को दी जाने वाली मदत में भी भ्रष्टाचार और घपला किया जाता है ।

संदर्भ :

१) भारतीय समाज मुद्दे और समस्याएँ - वीरेंद्र प्रकाश शर्मा, पृ. ०३

२) अक्षत - शिवसागर मिश्र, पृ. ३४

३) मॉरीशस के हिंदी उपन्यासों का मूल्यांकन - डॉ. हेमराज निर्मम, पृ. ६४

४) आवां - चित्रा मुद्गल, पृ. २४७

५) वही, प. २६५-२६६

६) वही, पृ. २०१

७) अधूरा मिलन - अंसुल, पृ. ०९

८) अपनी जमीन देखो - कैलाशनाथ पाण्डेय, पृ. ३३

९) वही, पृ. १०८

१०) जल टूटता हुआ - रामदरश मिश्र, पृ. २७७

११) अनदेखे अनजान पुल - राजेंद्र यादव, पृ. १५६

१२) अंधे की आँख - राजेंद्र कुमार रस्तोगी, पृ. १४

१३) वही, पृ. ४८

१४) सूनी घाटी का सूरज - श्रीलाल शुक्ल, पृ. ३३

१५) सामाजिक समस्याएँ - राम आहुजा, पृ. ४३३-४३४

१६) बसन्ती - भीष्म साहनी, पृ. ७०

१७) वही, पृ. १७

१८) अंधे की आँख - राजेंद्र कुमार रस्तोगी, पृ. २०

१९) वही, पृ. ११७

२०) वही, पृ. १२०

२१) जल टूटता हुआ - रामदरश मिश्र, पृ. २८०

२२) जल टूटता हुआ - एक अनुशीलन - डॉ. बी.एस. परदेशी, पृ. ३३

२३) एक बीघा प्यार - अभिमन्यू अनंत, पृ. २१

२४) भारतीय समाज : मुद्दे एवं समस्याएँ - वीरेंद्र प्रकाश शर्मा, पृ. ३३

२५) अपने-अपने कोणार्क - चंद्रकांता, पृ. १७८

२६) वही, पृ. १७८

२७) कितने चौराहे - फणीश्वरनाथ रेणु, पृ. १००

२८) बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की कहानियों में नारी - डॉ. बबनराव बोडके, पृ. २४५

२९) अगामी अतीत - कमलेश्वर, पृ. ४२

३०) बसन्ती - भीष्म साहनी, पृ. १६

३१) शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान - डॉ. कुमारी शशिबाला पंजाबी, पृ. २२

३२) रतिविलाप - किशनुली - शिवानी, पृ. ४१

३३) कैंजा - शिवानी, पृ. ३७-३८

३४) मैला आंचल - फणीश्वरनाथ रेणु, पृ. २४१

३५) सामाजिक समस्याएँ - राम आहुजा, पृ.२४०

३६) बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की कहानियों में नारी - डॉ. बबनराव बोडके, पृ. २६९

३७) कठगुलाब - मृदुला गर्ग, पृ. २१

३८) विकलांगता समस्या और समाधान - गीता अग्रवाल, पृ. २३

३९) मारिशस के हिंदी उपन्यासों का मूल्यांकन - डॉ. हेमराज निर्मम, पृ. ६५

४०) वही, पृ. ९९

४१) लाल पसीना - अभिमन्यू अनत, पृ. ३४३

४२) गांधीजी बोले थे - अभिमन्यू अनत, पृ. ६६

४३) वही, पृ. ७७

४४) मारिशस के हिंदी उपन्यासों का मूल्यांकन - डॉ. हेमराज निर्मम, पृ. १६१

४५) जल टूटता हुआ - रामदरश मिश्र, पृ. ११

४६) अंधे की आँख - राजेंद्र कुमार रस्तोगी, पृ. १५८

४७) अपनी जमीन देखो - कैलाशनाथ पाण्डेय, पृ. ५७

४८) वही, पृ. १०५

४९) अनुराधा - खुशाल सिंह, पृ. १७९

५०) सामाजिक समस्याएँ - राम आहुजा, पृ. २४०

५१) मैला आंचल - फणीश्वरनाथ रेणु, पृ. २६

५२) खंजन नयन - अमृतलाल नागर, पृ. ११४

५३) वही, पृ. ११९

५४) अनदेखे अनजान पुल - राजेंद्र यादव, पृ. २१४

५५) वही, पृ. २३२

५६) मृदुला गर्ग के कथासाहित्य में नारी - डॉ. रमा नवले, पृ. १६३

५७) वही, पृ. १६४

५८) रतिविलाप - कृष्णवेणी - शिवानी, पृ. ९५

५९) वही, पृ. १००

६०) रावण-रेखा - आबिद सूरती, पृ. ३४

६१) भारतीय समाज मुद्दे और समस्याएँ - वीरेंद्र प्रकाश शर्मा, पृ. २८३

६२) उसका घर - मेहरून्निसा परवेज, पृ. १०

६३) वही, पृ. ५१

६४) सूरज का सातवाँ घोडा - धर्मवीर भारती, पृ. ६८

६५) रात का रिपोर्टर - निर्मल वर्मा, पृ. ७४

६६) उसका घर - मेहरून्निसा परवेज, पृ. ८७

६७) विकलांगता : समस्या और समाधान - गीता अग्रवाल, पृ. २३

६८) अग्निबीज - मार्कण्डेय, पृ. २७

६९) वही, पृ. ६०

७०) रावण रेखा - आबिद सूरती, पृ. ०८

७१) वही, पृ. ५४

७२) सूनी घाटी का सूरज - श्रीलाल शुक्ल, पृ. ३२

७३) खंजन नयन - अमृताल नागर, पृ. १६

७४) अपने अपने कोणार्क - चंद्रकांता, पृ. १८०

७५) अक्षत- शिवसागर मिश्र, पृ. ११८

७६) वही, पृ. ९२

७७) विकलांग - वाल्मीकि त्रिपाठी, पृ. २१५

७८) वही, पृ. ११६

७९) वही, पृ. ३०१

८०) प्रतिध्वनियाँ - दीप्ति खंडेलवाल, पृ. १०२

८१) सूरज का सातवाँ घोड़ा - धर्मवीर भारती, पृ. ५८

८२) टुण्डा लाट - जगदीशचंद्र, पृ. १६९

८३) उपन्यासकार जगदीशचंद्र : संवेदना और शिल्प - डॉ. कैलाशनाथ पाण्डेय, पृ. ४५

८४) कथाकार शिवानी व्यक्तित्व और कृतित्त्व - डॉ. कृष्णा श्रीवास्तव, पृ. ३२

८५) कृष्णकली - शिवानी, पृ. ४१

८६) कृष्णकली - शिवानी, पृ. ६९

८७) कठगुलाब - मृदुला गर्ग, पृ. १८

८८) वही, पृ. ३८

८९) वही, पृ. १२७

९०) हिंदी उपन्यास और विमर्श : अद्यतन दृष्टी - डॉ. जयश्री शिंदे, पृ. ४९

९१) मृदुला गर्ग के कथासाहित्य में नारी - डॉ. रमा नवले, पृ. ९५

९२) एक बीघा प्यार - अभिमन्यू अनत, पृ. २१

९३) वही, पृ. २२

९४) वही, पृ. ३९

९५) मारिशस के हिंदी उपन्यासों का मूल्यांकन - डॉ. हेमराज निर्मम, पृ. १०४

९६) कमलेश्वर का कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ - डॉ. धीरजभाई वणकर, पृ. ११०

९७) अग्निबीज - मार्कण्डेय, पृ. १२

९८) आवां - चित्रा मुद्गल, पृ. २५

९९) दसवें दशक के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी चेतना - डॉ. वसानी कृष्णावंती, पृ. ६९

१००) आवां - चित्रा मुद्गल, पृ. ३२०

१०१) जल टूटता हुआ - रामदरश मिश्र, पृ. २७९

१०२) जल टूटता हुआ : एक अनुशीलन - डॉ. बी.एस. परदेशी, पृ. ३३

१०३) जल टूटता हुआ - रामदरश मिश्र, पृ. २४०

१०४) वही, पृ. २५४

१०५) अंधे की आँख - राजेंद्र कुमार रस्तोगी, पृ. १६

१०६) वही, पृ. ८१

१०७) मैला आँचल - फणीश्वरनाथ रेणु, पृ. ४४

१०८) अधूरा मिलन -अंसुल, पृ. ०७

१०९) सूनी घाटी का सूरज - श्रीलाल शुक्ल, पृ. १९

११०) वही, पृ. ५३

१११) अपनी जमीन देखो - कैलाशनाथ पाण्डेय, पृ. ३४

११२) खंजन नयन - अमृतलाल नागर, पृ. १५

११३) विकलांग विमर्श का वैश्विक परिदृश्य - संपा. डॉ. सुरेश माहेश्वरी, पृ. ५०१

११४) खंजन नयन - अमृतलाल नागर, पृ. ४८

११५) अक्षत - शिवसागर मिश्र, पृ. ३५

११६) रात का रिपोर्टर - निर्मल वर्मा, पृ. ६०

११७) रतिविलाप - शिवानी, पृ. १३

११८) कथाकार शिवानी व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व - डॉ. कृष्णा श्रीवास्तव, पृ. ५३

११९) रतिविलाप - शिवानी, पृ. ५०

१२०) कथाकार शिवानी व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व - डॉ. कृष्णा श्रीवास्तव, पृ. ७८

१२१) सूरज का सातवाँ घोड़ा - धर्मवीर भारती, पृ. ५९

१२२) कैंजा - शिवानी, पृ. ३४

१२३) कैंजा - शिवानी, पृ. ३५

१२४) कितने चौराहे - फणीश्वरनाथ रेणु, पृ. १००

१२५) मैला आंचल - फणीश्वरनाथ रेणु, पृ. १३

१२६) वही, पृ. ६९

१२७) वही, पृ. १४३

१२८) कठगुलाब - मृदुला गर्ग, पृ. १५

१२९) मायापुरी - शिवानी, पृ. १६३

१३०) वही, पृ. १६३

१३१) कृष्णकली - शिवानी, पृ. ४८

१३२) आवां - चित्रा मुद्गल, पृ. ३१२

१३३) वही, पृ. ३१६

१३४) जल टूटता हुआ - रामदरश मिश्र, पृ. २७६

१३५) रावण-रेखा - आबिद सूरती, पृ. ६०

१३६) मैला आँचल - फणीश्वरनाथ रेणु, पृ. २२९

१३७) अग्निबीज - मार्कण्डेय, पृ. २७